पुर्णीया सेंट्रल

हत्याएं लगातार,छात्रनेताओं पर वार

वॉल्यूम-1

समर प्रताप यादव सीरीज -1

देवेश मेहता

कॉपीराइट : देवेश मेहता, 2024

प्रकाशन के सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं।

यह उपन्यास लेखक द्वारा सामग्री को त्रुटि मुक्त बनाने के लिए किए गए सभी उचित प्रयासों के साथ स्व-प्रकाशित की गई है। आलोचनात्मक लेखों और समीक्षाओं में सन्निहित संक्षिप्त उद्धरणों के मामले को छोड़कर, लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस उपन्यास के किसी भी भाग का किसी भी तरीके से उपयोग या पुनरुत्पादन नहीं किया जाएगा।

संस्करण :- प्रथम, 2024

ISBN 978-93-341-3000-3

पेपरबैक मूल्य: ₹333

PURNEA CENTRAL VOLUME-1

novel by Devesh Mehta

अंतर्वस्तु

लेखक का परिचय

1. कारागृह.....6

2. हत्या या लापता.....37

3. हत्या हो गई है.....74

4. अवधेश सिंह का खात्मा.....83

5. एसटीएफ को शट किया जाय.....113

6. एसटीएफ वापिस गठित किया जाए.....123

7. सुराग तो नहीं मिला आज.....131

8. सुराग चलकर आएगा शंकर.....142

9. लेट द थ्रिल बिगिंस.....154

पुर्णीया सेंट्रल वॉल्यूम-2 170

"पुर्णीया सेंट्रल" एक रोमांचक अपराध थ्रिलर उपन्यास है जो पाठकों को एक जटिल हत्या रहस्य की दुनिया में ले जाता है। इस उपन्यास में लगातार हत्याएं हो रही हैं और छात्रनेताओं पर सिलसिलेवार वार किए जा रहे हैं। यह कहानी एक अत्यंत चतुर और चालाक हत्यारे की है, जो अपनी स्मार्ट और योजनाबद्ध हरकतों से पुलिस को गहराई से चुनौती देता है।

लेकिन कहानी में हमारे नायक, समर प्रताप यादव, उर्फ़ 'स्पाई', अपनी अद्वितीय पुलिसिंग क्षमताओं और कड़ी मेहनत से इस जटिल केस को सुलझाने के कगार पर होते हैं। समर की सूझबूझ और वीरता से वह इस बुद्धिमान हत्यारे को पकड़ने में सफल होते हैं, जो पूरी कहानी को एक रोमांचक मोड़ देता है।

"पुर्णीया सेंट्रल" में सभी पात्र, स्थान और घटनाएं पूरी तरह काल्पनिक हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, समुदाय, या स्थान से इनकी समानता संयोग मात्र होगी। उपन्यास में प्रस्तुत तथ्यों का उपयोग कहानी को और भी रोचक बनाने के लिए किया गया है, और इनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है।

लेखक का परिचय

लेखक देवेश मेहता का जन्म 19 मई 2000 को बिहार के अररिया जिले के जयनगर गांव में एक मध्यम वर्गीय व्यापारी परिवार में हुआ। देवेश की प्रारंभिक शिक्षा फोरबिसगंज के भद्रेश्वर स्थित "मिथिला पब्लिक स्कूल" में हुई, जहां उनकी पढ़ाई के साथ-साथ उनकी कहानियों और साहित्य के प्रति गहरी रुचि भी आकार लेने लगी।

बचपन से ही देवेश के मन में कहानियों और उपन्यासों को रचने का सपना था। स्कूल के दिनों में ही उन्होंने ठान लिया था कि एक दिन वह खुद की कहानियों को शब्दों में ढालेंगे। लेकिन स्कूल की पढ़ाई समाप्त होने के बाद, जीवन की जटिलताओं और व्यस्तताओं के कारण वह कई वर्षों तक अपने इस सपने को पूरा नहीं कर पाए।

अब, इन वर्षों की प्रतीक्षा के बाद, देवेश ने अपने लेखकीय सफर की शुरुआत "पुर्णीया सेंट्रल" के रूप में की है। यह उपन्यास एक दिलचस्प और रोमांचक अपराध थ्रिलर है जो मर्डर मिस्ट्री, सस्पेंस, और तगड़े ट्विस्ट से भरपूर है। "पुर्णीया सेंट्रल" में देवेश की कल्पनाशक्ति और लेखन की अद्भुत क्षमता का प्रमाण मिलता है।

इस उपन्यास को पढ़ने के बाद, आपको यकीनन "पुर्णीया सेंट्रल" के अगले भाग की उत्सुकता सताएगी। यह दवा है कि जब आप पहले वॉल्यूम को पढ़ेंगे, तो वॉल्यूम 2 को पढ़ने की बेचैनी से आपके मन में उबाल उठेगा।

उम्मीद है कि "पुर्णीया सेंट्रल" को पढ़कर आप न केवल एक बेहतरीन कहानी का आनंद लेंगे, बल्कि देवेश के लेखन की विशेषता को भी सराहेंगे। इस उपन्यास को आपके प्यार और समर्थन की बहुत उम्मीद है, और देवेश को विश्वास है कि यह रचना आपके दिल को छूने में सफल होगी।

1. कारागृह

1 नवंबर 2003, पुर्णीया सेंट्रल जेल

शाम के 7:00 बजे थे, और सभी कैदी अपने-अपने आवंटित किए गए वार्ड में बंद थे। जेल में कुल 16 वार्ड हैं, प्रत्येक वार्ड में लगभग 60 से 70 कैदी हैं, और एक खंड में 4 वार्ड हैं।

वार्ड नंबर पाँच में दो कैदी आपस में बहस कर रहे थे कि उनका नेता क्यों बेहतर है। तभी बगल वाले ने कहा,"देखो, वोट तो दे नहीं पाए हो, इसलिए बहस मत करो। न्यूज में देखो, इलेक्शन का कुछ दिखा रहा है।"

"पुर्णीया विधानसभा इलेक्शन में इस बार चंद्रकांत यादव एक निर्दलीय प्रत्याशी से मात खा गए। आपको बता दें कि चंद्रकांत यादव पिछले 15 साल से विधानसभा चुनाव जीतते आए हैं, पर इस बार अनिल कुशवाहा ने बाज़ी मार ली। बने रहिए बिहार समाचार के साथ, हम लौटेंगे एक छोटे से ब्रेक के बाद।" बिहार भारत चैनल पर एक महिला पत्रकार ये खबर सुना रही थी। ब्रेक आते ही सभी कैदी आपस में चर्चा करने लगे कि कौन बेहतर है और कौन नहीं। वो चर्चा करते-करते सो गए, वैसे भी कैदियों के पास कोई और काम नहीं था, गप्पे मार के समय बिताने के अलावा। बस वो एक दूसरे से वार्तालाप करते-करते सो जाया करते थे।

****

2 नवंबर 2003

सुबह के 6:00 बजने को होते हैं। जेल के मेन गेट पर कुछ सिपाही खड़े होते हैं, अपनी ड्यूटी जाने के लिए। जेल के अंदर उपस्थित सिपाही 6:00 बजने का इंतजार कर रहे होते हैं, 6:00 बजते ही वो अपने-अपने खंड में जाकर वार्ड को खोलकर कैदियों को बाहर निकालेंगे।

पुस्तकालय के पीछे वाले शौचालय में धर्मेंद्र नाम का सिपाही पेशाब करते हुए अपनी घड़ी में समय देखता है, 6:00 बजने में बस दो मिनट बाकी थे। वह तेजी से शौचालय से निकलता है और अपने खंड की ओर बढ़ता है। खंड पहुंचते ही वह सिपाही फिर से घड़ी देखता है तो 6:00 बज चुके थे। वह बरामदा पर पिलर से टिका हुआ डंडा उठाता है और खिड़की के लोहे से बने ग्रिल पर उस डंडे से घर्षण करता है। उससे उत्पन्न हुई आवाज से सभी कैदियों की नींद खुल जाती है। फिर वह अपनी जेब से वार्ड के ताले की चाबी निकालता है, ताला खोलता है और कैदियों को बाहर निकालते हुए गिनती मिलाता है। सभी खंड प्रभारी को गिनती मिलाकर जेल गेट पर कार्यालय में देना होता है जिससे जेलर सुनिश्चित कर सके कि सभी कैदी सही सलामत जेल में ही हैं।

कुछ देर बाद जेल अधीक्षक, जेलर, बड़ा जमादार, छोटा जमादार गुमटी पर पहुंचते हैं। जेल प्रांगण में एक गुमटी होती है जहाँ से जेल को और कैदियों को संभाला जाता है, जिसका कार्यभार जमादार पर होता है। जेल अधीक्षक, जेलर, बड़ा जमादार, छोटा जमादार के गुमटी पर पहुंचते ही सभी वार्ड प्रभारी भी गुमटी पर पहुंचते हैं, जोकि सजायाफ्ता कैदी हैं, उन्हें वार्ड की देखभाल के लिए नियुक्त किया जाता है। वहीं पर गुमटी के सामने पिछले दिन आए हुए नए कैदी भी कतार में खड़े होते हैं। उसके बाद राष्ट्रगान शुरु होता है।

चंकी और आशीष नामक दो कैदी गुमटी की ओर देखते हुए ब्रश कर रहे होते हैं। वे अपने वार्ड के बरामदे पर थे जोकि दूसरी मंजिल पर था। चंकी उन नए कैदियों में 16-17 वर्ष के उम्र वाले बच्चे को देखकर आशीष से कहता है:

"देखो, कितने छोटे-छोटे बच्चे आजकल अपराध करने लगे हैं।"

"आजकल के लड़के साले दूध पीना बाद में छोड़ते हैं, पहले नशा करने लग जाते हैं। फिर घर से जब जेबखर्ची मिलना बंद हो जाती है, तो नशे का पैसा जुटाने के लिए अपराध करना शुरू कर देते हैं।" आशीष चंकी से कहता है।

"हाँ, संगत का भी तो असर होता है।"चंकी एक विराम लेकर कहता है| चंकी के ये बोलते ही राष्ट्रगान समाप्त हो गया। जेल अधीक्षक और जेलर गेट की ओर बढ़ने लगे। बड़ा जमादार गुमटी पर अपना स्थान ग्रहण कर चुका था, जबकि छोटा जमादार जेल प्रांगण में चला गया। सभी वार्ड प्रभारी अपने-अपने वार्ड की ओर रवाना हो गए।

"जिसका काल उसका कपाड़," आशीष ने चंकी की ओर देखते हुए कहा। (बिहार के कुछ गाँवों में यह कहावत अक्सर सुनी जाती है, जिसका मतलब होता है, 'जो करे, वही भोगे।') "हमलोग खुद यहाँ चार साल से फंसे हैं। चलो, मुंह हाथ धोते हैं।"

"हाँ, चलो।"

दोनों वाशरूम की ओर बढ़ जाते हैं। वाशरूम का ज़िक्र सुनकर आपके मन में अपने घर के साफ-सुथरे बाथरूम की छवि उभर सकती है, लेकिन यहाँ का दृश्य बिल्कुल अलग था। दो-दो फुट की दूरी पर सात-आठ नल लगे हुए थे, और सुबह के समय यहाँ पर भीड़ लगी रहती थी। उसी दीवार के पीछे पाँच-छह शौचालय थे, जो साफ-सफाई के नाम पर कुछ भी नहीं थे।

दोनों वाशरूम में पहुँचकर, वहाँ खड़े लोगों को हटाते हुए कुल्ला करते हैं और मुंह पर पानी मारते हैं। जिन्हें उन्होंने हटाया था, वे मन ही मन गालियाँ दे रहे होंगे, लेकिन खुलकर कुछ कहने की हिम्मत उनमें नहीं थी। चार साल पहले जब ये दोनों आए थे, एक छात्र नेता की हत्या के आरोप में, तबसे उन्होंने कैदियों के बीच अपनी खौफनाक छवि बना रखी थी।

कुल्ला करने के बाद, चंकी आशीष को इशारा करता है, "पेशाब करके आते हैं।" आशीष भी इशारा करते हुए कहता है, "चलो, मैं भी चलता हूँ।" सभी शौचालय पहले से ही इस्तेमाल में थे। एक शौचालय के दरवाजे के पास जाकर, आशीष ज़ोर से दरवाजा पीटने लगता है।

"अरे, कौन है, जल्दी निकलो नहीं तो मुंह पे मूत देंगे (चेहरे पर पेशाब कर देंगे) ।" चंकी चिल्ला कर बोलता है।

"निकल रहे हैं भाई, धोने तो दीजिए।" अंदर से एक 50-55 वर्ष के आदमी की आवाज आती है।

"इ तो बेसरा जी लग रहे हैं।" चंकी आशीष की तरफ देखते हुए कहता है।

"हाँ, हो सकता है।" धीमी आवाज में आशीष ने जवाब दिया।

अगले ही सेकेंड एक आदमी खड़ा हुआ और अपना लंगोट बांधने लगा। शौचालय के ऊपर छत नहीं थी, और शौचालय की दीवार की ऊंचाई कंधे तक हीं थी। जब कोई अंदर खड़ा होता तो बाहर उसका चेहरा दिख जाता।

"बेसरा जी, जल्दी लंगोट बांधिए ना।" चंकी मजाकिया अंदाज में कहता है।

"लगता है लंगोट ढीला हो गया है।" आशीष हंसते हुए कहता है।

बेसरा जी मुस्कुराते हुए बाहर आते हैं। फिर दोनों बारी-बारी से पेशाब करते हैं, उसके बाद वार्ड की तरफ चल देते हैं।

"पचास रुपया है तुम्हारे पास बचा?" चलते-चलते चंकी आशीष से पूछता है।

"नहीं, सब तो खत्म हो गया है।"

"एक पचास वाला पुड़िया लेते ना।" चंकी चलते-चलते कहता है।

"हाँ, मन तो मेरा भी है। चलो वार्ड में देखते हैं, किसी के पास होगा तो मांग लेंगे। एक पुड़िया गांजा (Weed) ले लेंगे तो दोनों का हो जाएगा।"

"हाँ, हो जाएगा आराम से।"

दोनों वार्ड में पहुँचते हैं, लेकिन उन्हें वहाँ कोई व्यक्ति नज़र नहीं आता जिससे वे पचास रुपए उधार लेकर गाँजे जैसा कोई नशीला पदार्थ खरीद सकें। यह वही पदार्थ है, जिसका सेवन करने से उन्हें शायद आनंद मिलता हो। शायद! नहीं, यह तो निश्चित ही है कि उन्हें आनंद मिलता होगा, तभी तो वे इसका सेवन करते हैं।

ये दोनों वही लोग हैं जो कुछ देर पहले नशे पर टिप्पणी कर रहे थे कि कैसे बच्चे नशे के चक्कर में बर्बाद हो जाते हैं।

अक्सर लोग दूसरों की बुराइयों पर टिप्पणी करना आसान समझते हैं। उन्हें दूसरों की गलतियाँ और कमज़ोरियाँ साफ़ नज़र आती हैं, लेकिन जब बात अपनी आती है, तो वे अपनी बुराइयों और गलत आदतों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। यहाँ तक कि ऊपरवाले का भी डर नहीं होता इंसानों को।

****

जेल प्रांगण में शिव जी का एक भव्य मंदिर स्थित है। मंदिर के ठीक पीछे एक विशाल बरगद का पेड़ है, जिसके नीचे एक बड़ा सा चबूतरा बना हुआ है। यह चबूतरा नए कैदियों के लिए एक खास जगह है। अधिकतर नए कैदी यहीं आकर बैठते हैं, शायद पेड़ की छांव में बैठने पर उन्हें थोड़ी शांति का अनुभव होता है। बगल में मंदिर होने के कारण उनका अकेलापन भी कुछ कम हो जाता है। उन्हें लगता होगा कि भगवान उनके साथ हैं, उनकी हर पीड़ा को देख रहे हैं और उन्हें सहारा दे रहे हैं। आखिरकार, कहा भी तो जाता है कि जिनका कोई नहीं होता, उनका खुदा होता है।

जिन नए कैदियों का जेल में कोई जानने वाला नहीं होता, उनका मन बहलाना बेहद मुश्किल होता है। मन कैसे बहले, जब उन्हें इस छोटी सी जगह में कैद कर रखा गया है, बाहर की दुनिया से कोई नाता नहीं, घर से दूर, अपनों से दूर। ऐसी स्थिति में बेचैनी और उदासी का होना स्वाभाविक है।

दो बेचैन लड़के बरगद के चबूतरे पर बैठे हुए थे, दोनों के चेहरे पर चिंता और उदासी की गहरी लकीरें थीं, जैसे उनके साथ जो हुआ, वह समझ में ही नहीं आ रहा हो। एक की उम्र लगभग बीस-इक्कीस वर्ष रही होगी, जबकि दूसरे की सत्रह-अठारह वर्ष। कम उम्र वाले

लड़के के सिर पर चोट लगी थी, जिससे उसका सिर सूजा हुआ था। दर्द के बावजूद, उसकी आँखों में उलझन और डर स्पष्ट दिख रहा था।

उनके पास ही दो और लड़के बैठे थे, दोनों की उम्र लगभग बीस वर्ष के आसपास थी। उनमें से एक अपनी पीठ पेड़ से टिकाकर, आँखों पर गमछा डाले, चुपचाप बैठा हुआ था, मानो दुनिया से कटकर खुद में ही खो गया हो। वहीं दूसरा लड़का, अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से जेल प्रांगण के हर कोने, कैदियों, सिपाहियों, और पेड़-पौधों को ध्यान से देखे जा रहा था, जैसे वह इस नई दुनिया को समझने की कोशिश कर रहा हो। जब उसकी आँखें थक गईं और उसने पलकें झपकाईं, तो उसकी नजर बगल में बैठे दोनों लड़कों पर पड़ी। उनके चेहरे पर उदासी और बेबसी को देखकर वह भी कुछ क्षण के लिए रुक गया, शायद सोचने लगा कि उनके साथ भी कोई ऐसी ही तकलीफ जुड़ी होगी।

"किस केस में आए हो?" उसने पूछा।

"मारपीट के केस में फंसा दिया है," बड़े वाले ने जवाब दिया।

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"रिशव शुक्ला।"

"ये तुम्हारे साथ है क्या?" छोटे वाले के बारे में पूछा।

"मेरा छोटा भाई है धैर्य।"

"आपका नाम क्या है?" रिशव ने पूछा।

"मेरा नाम राजीव सिंह है। ये भी मेरे साथ है (आंख पर गमछा डाले जो बैठा था, उसकी तरफ दिखाकर), इसका नाम बिकेश यादव है। रोड क्राइम में हम लोगों को पुलिस ने पकड़ा है।" बड़े ही उत्तेजित होकर राजीव बोलता है, जैसे उसने दुनिया जीत ली हो।

इतने में बिकेश आंखों से गमछा हटाता है और बैठ जाता है। एक अंगड़ाई लेता है और राजीव से कहता है,

"चाय पीने का मन कर रहा है।"

"तो चलो पीते हैं।" राजीव ने कहा।

"कैसे रुपया लगेगा,ना?" बिकेश ने बोला।

"मेरे पास है।"

"तुम्हारे पास कैसे आया?" बिकेश ने अचंभित होकर पूछा, क्योंकि जेल गेट पर सिपाही बड़ी सख्ती से जांच करते थे। वे सुनिश्चित करते थे कि कैदी बाहर से अंदर एक तिनका तक न ले जा पाएं।

"चोरपाकिट (जींस की छोटी वाली जेब) में सौ रुपया रख लिए थे।" राजीव बहुत खुश होकर बोला, जैसे उसने कोई जंग जीती हो।

"चलो फिर चाय पीते हैं।" बिकेश ने खड़े होते हुए बोला।

"चलो।" दोनों चाय की दुकान की तरफ चल देते हैं।

"भैया, हमको बहुत अजीब लग रहा है।" धैर्य ने आस-पास किसी की मौजूदगी को न पाते देख बोला।

"परेशान मत हो, जमानत हो जाएगी जल्दी।" रिशव इतना बोलकर सिसकते हुए धैर्य को गले लगा लेता है।

"कब होगा भैया?" धैर्य मायूसी भरी धीमी स्वर में पूछता है।

"जल्द ही हो जाएगा। देखना, पापा आज हीं वकालतनामा भिजवा देंगे।"

"ये क्या होता है भैया?"

"वकालतनामा पे हम लोग हस्ताक्षर करेंगे, तो वकील हमारा केस लड़ेगा।"ये बोलते हुए रिशव धैर्य को अपने गोद में सुला लेता है, उसकी गोदी में सिर रखते ही धैर्य के आंखों में आंसू छलक पड़ते हैं। रिशव की भी आंखें नम हो जाती हैं, आखिर उसका छोटा भाई रो रहा होता है। पर रिशव हिम्मत दिखाता है, अपने आंसुओं को जबरन रोक लेता है और धीरे से धैर्य के आंसू अपने हाथों से पोछता है। वह अपने छोटे भाई को सांत्वना देने की कोशिश करता है, उसके बालों को सहलाते हुए उसे महसूस कराता है कि वह अकेला नहीं है। रिशव की आंखों में छिपी पीड़ा को धैर्य नहीं देख पाता, लेकिन रिशव अपने आंसुओं को पीछे धकेलकर धैर्य के लिए मजबूत बना रहता है।

"देखो, रोने से हम लोग यहाँ से निकल तो नहीं जाएंगे ना। वकील कोर्ट में साबित कर देगा कि हम निर्दोष हैं, हमें फंसाया गया है।"

"हूं।"

तभी राजीव और बिकेश वहाँ आ जाते हैं और आकर बैठ जाते हैं। अभी चायवाला नहीं आया था। आखिर चायवाला भी एक कैदी ही है। वह भी आराम से आएगा अपनी नितप्रतिक्रिया को निपटा कर। वैसे भी चाय बेचकर पैसा कौन सा वह अपने घर ले जाने वाला था। पैसा तो जेल प्रशासन के पास ही जाना था। यह भी जेल प्रशासन की कमाई का एक जरिया था।

****

चंकी और आशीष अपने खंड के बाहर आकर खड़े थे, उनकी निगाहें उस व्यक्ति को ढूंढ रही थीं, जिनसे वे पचास रुपए कर्ज ले सकें ताकि वे गांजा का सेवन कर सकें। बड़े ही बेसब्री से उनकी आंखें उस व्यक्ति को ढूंढ रही थी, तभी आशीष की नजर बेसरा जी पर पड़ी। आशीष

ने चंकी को आंखों से इशारा करके बेसरा जी की तरफ दिखाया, फिर दोनों ने एक-दूसरे की आंखों में देखा जैसे उन्होंने आंखों से हीं एक-दूसरे से कहा हो कि चलो आज बेसरा जी को हलाल करते हैं। दोनों लंबे कदमों से बेसरा जी की तरफ बढ़ते हैं। बेसरा जी अपने कमानी (काम जो जेल में कैदी को करना होता है) पर जा रहे होते हैं। बेसरा जी काफी आगे चल रहे थे, इसलिए आशीष ने आवाज लगाई, "बेसरा जी सुनिए।" बेसरा जी पीछे मुड़कर देखते हैं तो दिखता है कि आशीष उनकी ओर आ रहा है, इसलिए वे वहीं ठहर जाते हैं। दोनों बेसरा जी के पास जाकर पूछते हैं -

"चिलम चलेगा क्या बेसरा जी?"

बेसरा सोच में पड़ गए कि ये लोग आज पहली बार यह बात क्यों पूछ रहे हैं।

"कमानी जा रहे हैं अभी," बेसरा जी ने कहा।

"अरे हम हाजरी लगवा देंगे," चंकी झट से बोला।

"ठीक है फिर एक-दो कस मार लेंगे," बेसरा जी मुस्कुराते हुए बोले।

"निकालिए पचास रुपया फिर," आशीष बेसरा जी से कहता है।

बेसरा जी बारी-बारी से दोनों का चेहरा देखते हैं। बेसरा जी की आंखों में क्रोध और चेहरे पर निराशा थी, जो चंकी और आशीष साफ-साफ देख पा रहे थे।

"अरे टुक-टुक क्या देख रहे हैं। मेरा मुलाकाती आने वाला है आज, शाम को लौटा देंगे," चंकी झट से बोलता है।

"पैसा कहाँ है मेरे पास! कमानी का भी पैसा नहीं आया है," बेसरा जी ने कहा।

आशीष की नजर बेसरा जी कमर में बंधे हुए बटुए पर नजर पड़ती है। आशीष बटुए की तरफ हाथ बढ़ाता है जोकि उजले रंग के खादी कपड़े से बना हुआ था। अक्सर हर जेल में कैदी को उजले रंग का ही कपड़ा दिया जाता है, जिससे कैदी कमीज, पजामा, तकिया का खोल, बटुआ आदि दर्जी की मदद से बनवाता है। जैसे ही आशीष बेसरा जी के बटुए की तरफ हाथ बढ़ाता है, बेसरा जी पीछे हट जाते हैं।

"अरे मालिक, बस सौ रुपए हैं," बेसरा जी कहते हैं।

"पचास दे दीजिए ना, पुरिया लेते हैं, शाम को तो लौटा ही देंगे," चंकी बेसरा जी से कहता है।

बेसरा जी सोच में पड़ जाते हैं, अगर नहीं दें तो ये किसी तरह ले ही लेंगे, इन्हें पता चल गया है कि मेरे पास सौ रुपए हैं। अगर दे दें तो क्या ये लौटाएंगे या नहीं? बेसरा जी सिर नीचे करके ये सब सोच रहे होते हैं, और वे दोनों इन्हें घूर रहे होते हैं। आशीष से सब्र नहीं हो रहा था।

"अरे दे दीजिए ना, शाम को मिल जाएगा। क्या सोच रहे हैं, चंकी के घर से मुलाकाती आ हीं रहा है।"

"चलिए, ले लीजिए लेकिन शाम को लौटा दीजिएगा।"

"हाँ-हाँ, लौटा देंगे।"

बेसरा जी बटुआ से सौ रुपए का नोट निकालते हैं और चंकी के हाथ में दे देते हैं।

"पचास रुपए अभी हमको दे दीजिएगा और शाम में।"

"ठीक है! चलिए।"

फिर तीनों वेंडर को ढूंढने निकलते हैं। वे लोग उस जगह पर पहुंचते हैं जहाँ वेंडर हमेशा उपस्थित रहता है, अपने ग्राहक के इंतजार में, पर उस वक्त वह वहाँ उपस्थित नहीं था। तीनों जेल प्रांगण में चारों ओर नजरें दौड़ाते हैं, पर वेंडर कहीं नहीं दिखता है। तभी पीछे से वेंडर आता है और तीनों को देखता है कि वे किसी को ढूंढ रहे हैं।

"अरे भैया, किसी को ढूंढ रहे हैं क्या?" वेंडर पीछे से आवाज लगाता है।

"आपको हीं!" चंकी पीछे मुड़कर कहता है।

"दो-तीन दिन से आप दोनों दिखाई नहीं दे रहे थे?" वेंडर दोनों से पूछता है।

"जेब खाली हो गई थी, अभी बेसरा जी से लिए हैं," आशीष ने जवाब दिया।

"अरे भैया, पैसवा का क्या बात है, ले जाते ना बाद में दे देते।"

"अरे नहीं.....।"

"भैया, चार साल से आप दोनों यहीं हैं, हमारा पैसा कहाँ जाएगा।" वेंडर ने आशीष की बात को काटते हुए कहा।

"क्या महाराज, चार साल बोलके क्यों दुखी कर रहे हैं।"

"अरे भैया जी, हमारा वो मतलब नहीं था।" वेंडर ने अपने बटुए में कुछ खोजते हुए बोला और बटुए से एक छोटी सी पुरिया निकालकर चंकी के हाथ में दिया। चंकी ने सौ रुपए का नोट वेंडर को दिया। वेंडर ने अपनी पैंट की जेब से पचास रुपए निकालकर लौटा दिए। बेसरा जी ने चंकी के हाथ से वह पचास रुपए का नोट लेकर अपने बटुए में रख लिया।

"वकील क्या बोला है?" वेंडर ने पूछा।

"हो जाएगा इसी साल," चंकी ने जवाब दिया।

"भगवान करे हो जाए, बढ़िया रहेगा। रुपया पैसा न भी रहे तो आया कीजिए आप लोग।"

"जरूर, अब से ले लिया करेंगे। चलते हैं अब।"

"ठीक है भैया जी।"

तीनों वहाँ से चल देते हैं। चंकी और आशीष खुश दिखाई दे रहे थे क्योंकि कई दिनों बाद आज वे गांजा का सेवन करने जा रहे थे। बेसरा जी भी चिंतामुक्त दिखाई दे रहे थे, उन्हें आज आराम मिलेगा, काम नहीं करना पड़ेगा, फ्री में गांजा भी मिल जाएगा।

"कहाँ पीजिएगा?" चलते-चलते बेसरा जी पूछते हैं।

"चायवाले के पीछे पेड़ है न, वहीं," आशीष जवाब देता है।

"ओ।"

"चिलम कहाँ है?" चंकी आशीष से पूछता है।

"वार्ड में।"

"जाओ लेकर आओ ना।"

"हो जाएंगे फिरआएंगे, तुम ही जाओ ना।" आशीष आलस दिखाते हुए कहता है।

"कामचोर कहीं का।" चंकी ताना मारता है।

"अरे छोड़ो ना! बेसरा जी ले आएंगे।" आशीष ने कहा

"देखिए ना, हमारे पास है, ना हमें पता है, आप कहाँ रखे हैं।"

"तो फिर बिना चिलम के पीजिएगा।"

"पेपर नहीं है, उसी में भर लीजिए ना।"

"ठीक है! लेकिन पेपर कहाँ है?" आशीष ने पूछा।

"हमारे पास है," बेसरा जी ने कहा।

"लाइए!"

"बुढ़ऊ (बुजुर्ग)पूरा जुगाड़ लेके चलता है," चंकी ने मजाकिया अंदाज में कहा। आशीष बेसरा जी से पेपर लेकर अपनी जीभ की लार की सहायता से चिपकाता है। वहीं चंकी गांजा काटकर आशीष के हाथ में देता है। आशीष उसे पेपर के अंदर भरता है और भरकर तैयार करता है। फिर आशीष अपने जेब में हाथ डालकर माचिस खोजता है, जो कि उसके जेब में नहीं होती है।

"माचिस है दोनों में से किसी के पास?"

"नहीं," चंकी जवाब देता है।

"बेसरा जी, आपके पास?"

"नहीं," सिर हिलाकर बेसरा जी जवाब देते हैं।

"चायवाले के पास से ले आइए बेसरा जी," चंकी कहता है।

"वो हमें नहीं देगा।"

"जाइए ना! बोलिएगा चंकी मांग रहा है।"

"ठीक है! जाते हैं।"

बेसरा जी चायवाला के पास जाते हैं। वहीं राजीव चाय लेने आया हुआ होता है। राजीव चायवाला से दो चाय देने को कहता है। बेसरा जी आकर बोलते हैं कि "चंकी माचिस मांग रहा है; चायवाला माचिस देता है और कहता है लौटा कर ले आने को। बेसरा जी माचिस लेकर चले जाते हैं।

"गांजा पीने के चक्कर में मेरा माचिस बर्बाद करते हैं ये गँजेरी लोग," चायवाला फुसफुसा कर बोलता है और दो चाय राजीव की ओर बढ़ाता है। राजीव को चायवाले की बात सुनाई पड़ती है।

"कहाँ मिलता है गांजा यहाँ ?" चाय लेते हुए राजीव ने पूछा।

चायवाले ने सिर उठाकर राजीव को देखा फिर चाय उबालने लगा।

"बताइए ना कहाँ मिलता है?"

"दस रुपए हुए, लाओ।" राजीव की बातों को चायवाला नजरंदाज करते हुए है।

"दे रहे हैं! बोलकर राजीव जेब से पैसा निकालते हुए बोलत है "अच्छा बताइए ना चाचा?"

"नहीं पता हमको, चाय का पैसा लाओ।"

राजीव सौ रुपए का नोट निकालकर चायवाले को देता है।

"ग्लास पांच मिनट में लेकर आते हैं।"

"ठीक है! आकर बकाया ले लेना।"

"ठीक है!" बोलकर राजीव चाय लेकर बिकेश के पास चला जाता है।

उधर आशीष गांजे से भरी पेपर को अपने दोनों होठों के बीच दाएं हाथ की दो उंगलियों के सहारे जकड़ता है। बेसरा जी माचिस की तीली निकालकर आग जलाते हैं जिसके सहारे आशीष पेपर को सुलगाता है और एक लंबा कस लेता है। इस एक कस के बाद आशीष का चेहरा देखने लायक था, वह आनंद शायद उसे अरसों से नहीं मिला था। फिर बारी-बारी से तीनों कस लगाते हैं और लगभग दस मिनट के अंदर कार्यक्रम खत्म हो जाता है।

"बेसरा जी, चाय पीना है?" आशीष पूछता है।

"पी लेंगे, पर पैसा हम नहीं देंगे।"

"अरे चलिए ना, हम लोगों के तरफ से है," चंकी बोलता है।

"चलिए फिर।"

तीनों चायवाला के पास जाते हैं और तीन चाय देने को कहते हैं। चायवाला चंकी और आशीष को देखता है, फिर बोलता है-

"पिछला हिसाब निपटा देते ना भैया।"

"आज हो जाएगा! मेरा मुलाकाती आ रहा है," चंकी कहता है।

"बेसरा माचिस...," चायवाला बेसरा जी से कहता है।

"ये लीजिए," बेसरा जी माचिस चायवाले को बढ़ा देते हैं।

चायवाला तीनों को कांच के ग्लास में भरकर चाय देता है। तीनों चाय लेकर वहीं खड़े होकर पीने लगते हैं, तभी वहाँ राजीव और बिकेश आ रहे होते हैं, ग्लास लौटाने और बकाया लेने। वे आ ही रहे होते हैं कि राजीव की नजर बेसरा जी पर पड़ती है। वह वही ठहर जाता है, साथ ही बिकेश भी ठहर जाता है।

"क्या हुआ?" बिकेश राजीव से पूछता है।

"शायद यही लोग गांजा पी रहे थे।"

"पूछेगा कहाँ मिलता है?"

"कैसे पूछें?" राजीव धीमे स्वर में बोलता है।

"सीधे पूछ लो ना," बिकेश कहता है।

"अरे नहीं! एक विराम लेकर, "ऐसा करते हैं उनके बगल से गुजरते हैं, अगर गांजा की बदबू आएगी तो पूछ लेंगे।"

"हाँ, ये सही रहेगा," बिकेश उत्सुक होकर कहता है।

"ठीक है! चलो।"

"चलो," फिर दोनों चल देते हैं और वे तीनों के बगल से गुजरते हुए चायवाले को ग्लास लौटाते हैं।

"आया ना बदबू?" राजीव बिकेश से पूछता है।

"हाँ! आया तो है।"

"चलो, पूछ लेंगे।"

चायवाला राजीव को उसका बकाया लौटाता है। वह लेकर राजीव अपने जेब में रखता है और उन तीनों के पास जाता है। चला तो जाता है, लेकिन राजीव चंकी को देखकर पूछ नहीं पाता है। चंकी का चेहरा थोड़ा डरावना था, फिर भी राजीव हिम्मत करता है और पूछता है-

"भैया, यहाँ गांजा कहाँ मिलता है?"

"तुम पीते हो?" चंकी ने गुर्राते हुए पूछा।

"बताइए ना भैया।"

"दूध पिया करो, समझे! भाग यहाँ से," चंकी ने जोर से डांटा।

"भैया.... ।"

"अरे भागो यहाँ से, बात समझ नहीं आ रहा, ये बहुत मारेगा," आशीष ने डांटते हुए कहा।

राजीव वहाँ से तेजी से निकल गया बिकेश के साथ। उसे लगा कि कहीं चंकी उसे सच में ना मार दे।

"देखिए, आजकल इतना छोटा बच्चा लोग नशा करने लगा है," बेसरा जी कहते हैं।

"सवेरे मर जाएगा साला सब," चंकी बोलता है और चाय का ग्लास रखकर चल देता है, साथ हीं दोनों भी ग्लास रखकर चल देते हैं।

ताज्जुब की बात यह है कि एक अपराधी जो एक कत्ल के इल्जाम में, जेल में बंद है, जो रोज नशा करता है, वह एक बीस वर्ष के लड़के को नशा करने से मना करता है। हालांकि यहाँ कैदियों को जब पता चलता है कि कोई नया कैदी नशे की लत में है तो वे उस कैदी को नशे की सामग्री उपलब्ध करवाते हैं और उसी कैदी के पैसे से खुद भी नशा करते हैं। लेकिन ऐसे जगह पर चंकी जैसे लोग भी हैं, जो खुद तो बुरे हैं लेकिन समाज को अच्छा बनाना चाहते हैं। चंकी और आशीष किसी छात्र नेता के हत्या के इल्जाम में हैं, शायद उसे भी इन्होंने उसके कोई बुरे कर्म की सजा दी होगी।

****

रिशव और धैर्य वहीं चबूतरे पर मायूस होकर लेटे हुए थे। चंकी और आशीष वहीं चबूतरे पर आते हैं। रोज की तरह वे वहाँ जाकर पत्ते ही खेलते। चबूतरे पर उन्हें दो लड़के लेटे दिखाई देते हैं। वे उनका स्थान को घेर कर लेटे हुए थे, जिस कोने में वे रोज बैठा करते थे।

"अरे उठ के बगल में बैठो, क्यों पड़े हुए हो?" चंकी उन दोनों से कहा।

"डांटो मत, बच्चे हैं। तुम्हें नशा लग गया है।" आशीष चंकी से कहता है।

"अच्छा, तुम होश में हो।" चंकी हंसकर बोलता है।

"वो छोड़ो, दो आदमी में पत्ता कैसे खेलेगा। बेसरा जी भी वार्ड चले गए।"

"वही तो, मास्टर दोनों भाई भी घर चले गया आज ही। एक मास्टर साहब और उनके छोटे भाई हीं पिछले दो महीनों से हमारे पत्ते खेलने वाले पार्टनर थे, आज वे भी जमानत पर बाहर चले गए हैं।"

"कैसे खेलेगा?" आशीष चंकी से पूछता है।

"देखो, जेल प्रांगण में किसी को बुलाओ।"

"बाबू, पत्ता खेलने आता है तुमलोगों को?" आशीष उन दोनों भाइयों से पूछता है।

रिशव सिर हिलाकर “ना” में जवाब देता है।

"क्या नाम है तुम्हारा?" आशीष ने उनकी मासूमियत देखकर, प्यार से पूछा।

"रिशव शुक्ला।"

"ये तुम्हारे साथ है?"

"मेरा छोटा भाई है, धैर्य।"

"किस केस में आए हो?"

"मारपीट में फंसा दिया है।"

"ऐसे कैसे फंसा दिया?" चंकी ने पत्ते फेंटते हुए पूछा।

"कौन फंसा दिया?" आशीष रिशव से पूछता है।

"सुरेश यादव करके एक नेता है।"

आशीष और चंकी के कान खड़े हो गए सुरेश यादव का नाम सुनते ही।

"क्या किया था तुमलोगों ने?" आशीष ने पूछा।

"कुछ नहीं भैया।"

"फिर ऐसे कैसे तुमलोग यहाँ आ गया, जब कुछ नहीं किया?" चंकी ने पूछा।

"फंसा दिया.... ।"

"वही सुरेश यादव ना जो पिछले साल पुर्णीया कॉलेज में मार खाया था?" आशीष ने पूछा।

"हाँ।"

"घर कहाँ है तुमलोगों का?"

"चंपानगर।"

"चंपानगर में कहाँ?"

"मिडिल स्कूल के पीछे।"

"शुक्ला जी करके एक मास्टर साहब हैं, पहचानते हो?"

"रमन शुक्ला ना "

"हाँ, वही।"

"पापा हैं..वो।"

"अरे, शुक्ला सर के लड़के हो तुमलोग!" आशीष और चंकी ने एक साथ बोला।

रिशव और धैर्य भी थोड़ा खुश हुए कि कोई उन्हें यहाँ जानता है।

"पहचानते हो हमलोगों को?" चंकी पूछता है।

"अरे, कहाँ से पहचानेंगे, तभी तो बहुत छोटे थे ये लोग।" आशीष ने कहा।

"घर से बात नहीं हुई होगी?"

"नहीं कल शाम में ही आए हैं।"

"नंबर याद है?"

"हाँ, भैया।"

"चलो, मेरे साथ बात करवाते हैं।"

रिशव और धैर्य के चेहरे पर खुशी की चमक थी। उन्हें इस बात का यकीन नहीं हो रहा था कि वे इस जगह से अपने घरवालों से बात कर पाएंगे। यह खुशी चंकी और आशीष की वजह से मुमकिन हो पाई थी, जो जेल में रहते हुए भी जुगाड़ से सेलफोन मंगवाकर अंदर छुपा लेते थे।

वार्ड में पहुंचते ही आशीष एक थैले के अंदर से एक नोकिया 3310 हैंडसेट निकालता है। यह वही मॉडल था जो 2000 से 2010 के बीच लोगों में बेहद लोकप्रिय था। उस फोन की मजबूती और लंबी बैटरी लाइफ के कारण वह आज भी कई जगहों पर इस्तेमाल किया जा रहा था। आशीष ने फोन स्विच ऑन किया और रिशव को इशारा करते हुए उसे फोन दिया।

"इधर कोने में बैठ के बात कर लो," आशीष ने कहा।

रिशव ने धड़कते दिल से नंबर डायल किया और फोन को अपने कान से लगाया। रिंग जा रही थी। धैर्य बगल में खड़ा था, उसकी भी उत्सुकता चरम पर थी। दोनों भाई इस पल का इंतजार कर रहे थे—अपनों की आवाज सुनने का।

"हेलो, कौन?" शुक्ला जी दूसरी ओर से बोलते हैं।

"पापा, हम रिशव।"

"हेलो बेटा, कैसे हो? फोन कैसे मिला?"

"ठीक हैं पापा। दो भैया हैं, वे आपको जानते हैं।"

"क्या नाम है उनका?"

"नहीं पता।"

"धैर्य कहाँ है?"

"रुकिए बात करवाते हैं।" रिशव धैर्य को सेलफोन देता है।

"हेलो पापा, प्रणाम।"

"खुश रहो बेटा। कैसे हो?"

"कब निकालेंगे पापा?" बोलकर धैर्य रोने लगता है।

"बेटा, रो मत। वकील से बात हो गई है। आज वकालतनामा भेजेंगे, वकील साहब। परेशान मत हो।"

"माँ कहाँ है?" धैर्य रोते हुए पूछता है।

"पहले रोना बंद करो। करवाते हैं माँ से बात, तुम रोओगे तो वो भी रोएगी।"

"नहीं रोएंगे।"

"रुको, बात करवाते हैं।"

शुक्ला जी अपनी पत्नी को आवाज लगाते हैं। वो आती हैं, उनको शुक्ला जी सेलफोन देते हैं।

"लो, बात कर लो, धैर्य है लाइन पे।"

"हेलो बेटा, कैसे हो।"

"ठीक है मां।"

"तुम कैसी हो?"

"हाय, मेरा बच्चा के साथ क्या हो गया।" बोलकर फूट-फूट कर रोने लगती हैं। धैर्य भी माँ को रोता सुन रोने लगता है।

"मां, हमलोग ठीक हैं। तुम अपना ध्यान रखो।" धैर्य रोते हुए बोलता है।

माँ और जोर से रोने लगती हैं। उनको रोता देख शुक्ला जी उनसे सेलफोन ले लेते हैं। धैर्य को रोता देख रिशव, धैर्य से सेलफोन ले लेता है।

"हेलो, पापा।"

"हाँ, बेटा।"

"हम धैर्य का ध्यान रख लेंगे। आप माँ का ध्यान रखिए।"

"ठीक है, बेटा।"

"वो भैया से बात करवाओ तो बेटा।"

"एक मिनट पापा।"

रिशव आशीष को इशारा करके बुलाता है और आशीष को सेलफोन देता है-

"पापा बात करेंगे।"

"हेलो सर।"

"धन्यवाद बेटा, बात करवाने के लिए।"

"ये लोग भी मेरे भाई जैसा हैं। हम आपके विद्यार्थी रह चुके हैं 1995-1997 वाले बैच में।"

"आपका नाम क्या हुआ?"

"आशीष यादव।"

"अरे बेटा, इसी जेल में हो?"

"हाँ, सर।"

"वही शंकुर यादव वाला मामले में हो ना।"

"हाँ, सर।"

"चंकी भी तुम्हारे साथ ही है?"

"हाँ, रुकिए बात करवाते हैं।"

आशीष चंकी को आवाज लगाता है। वो वार्ड के गेट के बाहर पहरा दे रहा था कि कोई सिपाही आए तो सेलफोन छुपा सके। आशीष की आवाज सुनकर वो वार्ड में आशीष के पास आता है। आशीष चंकी को सेलफोन देता है-

"लो, सर बात करेंगे।" आशीष, चंकी को देकर गेट पर पहरा देने चल जाता है।

"प्रणाम सर।"

"खुश रहिए।"

"घर पर सब ठीक है ना?"

"अभी तो इन दोनों के वजह से बहुत परेशान हो गए हैं। क्या बताएं, बेटा...."

"हम यहाँ इन लोगों का ध्यान रख लेंगे, आप अपना ध्यान रखें।"

आशीष ने देखा एक सिपाही सीढ़ी की ओर बढ़ रहा था। तुरंत वह वार्ड में लौट आया और चंकी को फोन छुपाने के लिए कहा। चंकी ने तुरंत फोन स्विच ऑफ किया और थैले में डालकर बाहर बरामदे पर आ गया। रिशव और धैर्य भी वहीं दीवार के पास बैठ गए।

राजेश नाम का सिपाही बरामदे में प्रवेश करता है। इसकी एक खासियत थी, हिंदी समझता था, लेकिन बोलता भोजपुरी में था।

"का हो, का हाल बा?" (क्या हाल है?) चंकी और आशीष से पूछता है।

"ठीक है! राजेश भैया। आप बताइए?" आशीष पूछता है।

"ठीक बानी! कहा रहल बड़ाअ हो आशीष, दु दिन से तोहरा के देखले नईखे?" (कहाँ थे आशीष, दो दिन से देखे नहीं?)"

"बुखार लग गया था। जेल अस्पताल में थे।"

"अब ठीक ना?"

"हाँ, ठीक है।"

"आइए, बैठिए ना।"

"रुका तनी जमादार साहब के मुंहवा देखा दे तानी (रुकिए, थोड़ा जमादार साहब को शक्ल दिखा देते हैं) ।"

ऊपर वाले वार्ड से गुमटी और गुमटी से पांच नंबर वार्ड का बरामदा साफ नजर आता था। जब राजेश सिपाही की ड्यूटी दो नंबर खंड में होती थी, तो वह पांच नंबर वार्ड के बरामदे

पर आकर जमादार को दिखा देता था, ताकि जमादार को यकीन हो जाए कि वह ड्यूटी पर है। जमादार से नजर मिलते ही, राजेश कुछ देर चबूतरे पर बैठता और फिर चला जाता। गुमटी से चंकी का नाम पुकारा जाता है, जो शायद उसके मुलाकाती के आने की सूचना थी। चंकी अपना नाम सुनते ही तुरंत गुमटी जाकर पर्ची लेता है और मुलाकाती से मिलने जेल गेट पर चला जाता है। राजेश सिपाही आकर चबूतरे पर बैठता है।"

"चंकी मुलाकाती गयिल बा का? अभी गुमटी से नाम पुकारल गइल रहे।" (चंकी मुलाकाती गया है क्या? अभी गुमटी से नाम पुकारा गया था।)

"हाँ।" आशीष जवाब देता है।

तभी सिपाही का ध्यान रिशव और धैर्य पर जाता है।

"नया कैदी हवे का?" (नया कैदी है क्या?)

"हाँ।" आशीष जवाब देता है।

"कवन केस में आइल बाड़े?" उन दोनों से पूछता है।

वे दोनों समझ नहीं पाते हैं क्योंकि सिपाही भोजपुरी बोल रहा होता है। वैसे भी बिहार में विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हैं, जैसे कि मैथिली, मगही, और भोजपुरी।

"भैय्या पूछ रहे हैं, कौन केस में आए हो?" आशीष उन दोनों से कहता है।

"मारपीट।" रिशव जवाब देता है।

इतने में गुमटी से रिशव और धैर्य का नाम पुकारा जाता है।

“तुम्हारे ही नाम पुकारे जा रहे हैं?” आशीष पूछता है।

“हाँ,” दोनों जवाब देते हैं।

“जाओ, देखो क्या है।”

रिशव और धैर्य गुमटी की ओर जाते हैं। वहाँ एनाउंसर से रिशव पूछता है:

“मेरा क्या आया है?”

“नाम क्या है?”

“रिशव शुक्ला, धैर्य शुक्ला के नाम से होगा।”

“वकालतनामा है।” एनाउंसर फाइल में ढूंढकर बताता है।

“लाइए।”

“पचास-पचास रुपये लाओ दोनों।”

“पैसा नहीं है।”

“फिर हस्ताक्षर नहीं कर पाओगे।”

“हम लोग कल ही आए हैं, हमारे पास पैसा नहीं है।”

“किसी से ले लो।”

“कल दे देंगे।”

“कल ही कर लेना, वरना वापस भेज देंगे।”

रिशव बहुत देर तक अनुरोध करता है, लेकिन कर्मचारी उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था। अंततः रिशव धैर्य को लेकर वार्ड की ओर लौट जाता है। जैसे ही वह खंड में प्रवेश करता है, आशीष चबूतरे पर बैठा उसे देखता है।

"क्या था?" आशीष ऊपर से ही आवाज लगाता है।

"वकालतनामा हस्ताक्षर करने नहीं दिया।"

"क्यों?"

"रुपया मांग रहा है।"

"बोला नहीं नए हैं।"

"बोले, नहीं मान रहा।"

"रुको, नीचे आ रहे हैं।"

"दलाल भरल बा।" सिपाही आशीष से कहता है।

"मत पूछिए यहाँ का हाल।" चबूतरे पर से उठते हुआ बोला, "आते हैं भैय्या।"

आशीष नीचे जाकर, दोनों को साथ करके गुमटी पर जाता है।

"क्या हो, पैसा चाहिए?" आशीष एनाउंसर से कहता है।

"अरे भैया, आपसे कौन लेगा पैसा।"

"ये बच्चे सबको कहे घुमा दिए। मेरा भाई है, हस्ताक्षर करवाईए।"

"ये लो बाबू, करो।" पेपर ढूंढ कर देते हुए बोलता है।

फिर दोनों बारी-बारी से हस्ताक्षर करते हैं।

"इन दोनों का आगे भी कुछ आएगा तो पैसा नहीं मांगना है।"

"अब नहीं मांगेंगे भैय्या, हमको पता नहीं था, गलती हो गई।"

"ठीक है, कोई बात नहीं।"

आशीष दोनों को वार्ड की ओर ले जाते हुए गेट से चंकी को आता हुआ देखता है। चंकी के पीछे एक कैदी उसका सामान ले आ रहा होता है। आशीष ठहर जाता है और उन दोनों को भी रुकने का इशारा करता है। वे भी रुक जाते हैं।

"हो गया मुलाकाती?" चंकी के पास आते ही आशीष पूछता है।

"हाँ !"

"इन लोगों का भी वकालतनामा आया था।"

"हस्ताक्षर किया?"

"तुरंत! पैसा मांग रहा था, इसलिए हमको आना पड़ा।"

"साला हरामखोर सब हैं। चलो वार्ड, खाना वगेरा खाते हैं।"

"चलो।"

वे सब वार्ड चले जाते हैं। थैला उठाकर लाए कैदी को आशीष एक कोने की ओर इशारा करता है, जहाँ उसे थैला रखना था। वह बताए गए स्थान पर थैला रखता है और चंकी के पास आकर खड़ा हो जाता है। चंकी अपनी जेब से दस रुपए का एक नोट निकालकर उसे देता है। निश्चय ही, दिए गए दस रुपए से वह कैदी तंबाकू खरीदता, क्योंकि पूरे जेल में यही एक नशीला पदार्थ था जो दस रुपए में मिलता था; बाकी सब महंगे थे।

यहाँ खाना मिले या न मिले, नशा करने वाले कैदी के लिए बस नशा करने की सामग्री मिल जाए, वही काफी है। इसके लिए भले ही उन्हें किसी का कोई काम करना पड़े, या जेल प्रशासन से डंडे क्यों न खाने पड़ें, पर नशे की सामग्री तो चाहिए ही होती है।

"चलो फिर खाना खाते हैं।" चंकी आशीष से कहता है।

"हाँ चलो। कुछ कम तो नहीं पड़ेगा रोटी चावल, भांसाघार से मंगवा लेते हैं।"

"नहीं। माँ रात के लिए भी दी है हम दोनों के लिए। अभी चार आदमी खाएंगे तो हो जाएगा आराम से।"

"ठीक है फिर।"

"तुम दोनों क्या मुंह लटका के खड़े हो, जाओ नीचे बढ़िया से मुंह हाथ धो के आओ, खाना खाते हैं फिर।" चंकी दोनों बच्चों से कहता है।

"जा रहे हैं भैय्या।" बोलकर दोनों नीचे जाने लगते हैं|

दोनों नीचे सीढ़ी से उतरकर दाहिने मुड़ते हैं, जहाँ नल और चपाकल लगे हुए थे। जैसे ही वे पहुँचते हैं, दाहिनी तरफ से एक आवाज आती है, "ओ चंगू मंगू, इधर आओ।" वे मुड़कर देखते हैं। सामने एक साढ़े पांच फुट का काला आदमी बड़ी-बड़ी आंखों से उन्हें घूर रहा होता है।

रिशव इशारे में पूछता है, "हमलोग?"

"हाँ! तुमलोग।"

दोनों भयभीत होकर उसके पास जाते हैं।

"नाम क्या है?"

"रिशव शुक्ला।"

"और तुम्हारा?"

"धैर्य शुक्ला।"

"दोनों भाई हो?"

"हाँ ।"

"रमन शुक्ला तुम्हारा बाप है?"

"हाँ ।" आश्चर्यचकित होकर रिशव जवाब देता है। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे उनके बारे में पता कैसे है।

"हमको पहचानते हो?"

"नहीं।"

"श्याम यादव नाम है हमारा। तुम्हारे जीजा सुरेश यादव हमारे खास हैं। फोन करके तुम्हारा ध्यान रखने को बोले हैं तुम्हारे जीजा।"

अब रिशव को सब समझ आ रहा था। उसके दिमाग में चलने लगा कि यहाँ से भागना चाहिए। जब तक वह भागने की कोशिश करता, तब तक श्याम धैर्य को थप्पड़ जड़ चुका था।

"भाईया, इसको मार क्यों रहे हैं?"

"लो, और मारेंगे।" फिर से थप्पड़ जड़ दिया।

"भाईया, मत मारिए ना, हमको।" धैर्य रोते-रोते कहता है।

"बेटा, मरना तो पड़ेगा। सुबह से मिल नहीं रहे थे तुम लोग और जीजा बोलने के वजह से भाईया बोल रहा है, ये लो!" दो थप्पड़ और मार दिया।

"हमको मार लीजिए, इसको छोड़ दीजिए।" रिशव कहता है।

"ठीक है! पहले बोलो जीजा जी।" इस वक्त उसका चेहरा सैतान के जैसा लग रहा था।

"जीजा जी!" रिशव डरकर सिसकते हुए कहता है।

"अब जीजा बोल ही दिए हो, तो दीदी कैसी दिखती है, बता ही दो।" और धैर्य को खींचकर गोद में बिठा लिया और एक हाथ से कसकर पकड़ लिया।

"उसे छोड़ दीजिए ना...!" रिशव श्याम पर झपट्टा मारते हुए कहता है।
श्याम रिशव को पैर से धक्का मारता है और कहता है, "रुको, तुमको अभी दिखाते हैं क्या होता है।" इतना बोलकर वह धैर्य को उठाकर शौचालय की ओर ले जाता है। रिशव रोकने की कोशिश करता है, लेकिन श्याम उसे लात मारकर गिरा देता है। रिशव मुश्किल से उठता है और भागकर वार्ड की ओर चला जाता है।

"भाईया... भाईया... भाईया...!" चिल्लाते हुए रिशव वार्ड पहुंचा।

"क्या हुआ?" आशीष हरबराकर पूछता है।

"वो धैर्य को... शौचालय... एक आदमी..." उसने हाँपते हुए बोला।

इतना सुनते ही आशीष और चंकी दौड़ते हुए नीचे शौचालय की ओर भागते हैं और अपने लड़कों को भी इशारा करते हैं जो वहाँ वार्ड में मौजूद थे। रिशव भी उनके पीछे-पीछे जाता है। शौचालय के पास जाकर सभी धैर्य को ढूंढने लगते हैं। तभी रिशव देखता है कि शौचालय की पिछली दीवार और जेल की बड़ी दीवार के बीच एक छोटी सी जगह में धैर्य को श्याम दीवार से एक हाथ के सहारे टिकाए हुए है और दूसरी हाथ से उसकी पैंट उतार रहा है। यह देख रिशव चिल्लाते हुए झपट्टा मारता है। आवाज सुनते ही चंकी, आशीष और बाकी सभी पहुंच जाते हैं। श्याम यह दृश्य देख घबरा जाता है और डर के मारे सीधे खड़ा हो जाता है। रिशव धैर्य को बगल में लाकर उसके कपड़े ठीक करता है, और उसके नाक से बह रहे खून को अपनी कमीज से पोंछता है। आशीष उसे जेल अस्पताल ले जाने को कहता है, और रिशव धैर्य के साथ दो और कैदियों को भेजता है।

श्याम की जमकर पिटाई होती है। श्याम बार-बार गलती मानता है, लेकिन किसी ने उसकी नहीं सुनी। दस लोग मिलकर उसकी पिटाई करते रहे।

तभी रोशन नामक एक कैदी ने देखा कि सिपाही खंड में प्रवेश कर रहा है और इशारा किया कि सिपाही आ रहा है। श्याम को अधमरे हालात में छोड़कर सभी वहाँ से गायब हो गए। जेल प्रशासन को भी नहीं पता चला कि क्या हुआ, क्योंकि यह सब एक कोने में हो रहा था जहाँ किसी सिपाही की नजर नहीं पहुंच सकती थी। और कोई कैदी सिपाही को बताने वाला भी नहीं था, क्योंकि अगर कोई बताता तो चंकी और आशीष उसकी पिटाई कर देते।

सिपाही टहलते-टहलते खंड के अंतिम छोर तक जाता और निरीक्षण कर वापस लौट आता। जैसे ही सिपाही खंड के अंतिम छोर पर पहुँचता है, उसे रेंगता हुआ श्याम दिखाई देता है। सिपाही झट से उसके पास जाता है और उसकी हालत देखकर घबरा जाता है। श्याम की नाक से खून की धार बह रही थी, कपड़े फटे थे, सिर पर चोट थी, और शायद पैर की हड्डियां भी टूट गई थीं। सिपाही तुरंत कुछ कैदियों को आवाज लगाकर बुलाता है और उन्हें श्याम को जेल अस्पताल ले जाने को कहता है। वे उसे उठाते हैं और अस्पताल ले जाते हैं।

सिपाही काफी चिंतित हो गया था, क्योंकि अब यह उसकी जिम्मेदारी थी। उस वक्त उसकी ड्यूटी उस खंड में थी और उसकी जिम्मेदारी थी कि खंड में कोई घटना न घटे। तभी उसकी नजर रोशन पर पड़ती है, जो चंकी और आशीष के साथ अक्सर घूमता था।

"अरे, तनी हेने आव (इधर आओ)!" सिपाही जोर से रोशन को आवाज देता है।

"हाँ सर!" रोशन सिपाही के पास आकर कहता है।

"का भइल रहे ऐजा (क्या हुआ था यहाँ)? "

"पूरा तो पता नहीं है साहब, शायद श्याम एक नए कैदी को शौचालय के पीछे जबरदस्ती लेकर गया था।"

"ऊ कहवा बारे (वह कहाँ है)?"

"अस्पताल ले गया उसको ।"

"श्याम के कवन मर्लस (श्याम को किसने मारा)?"

"नहीं पता साहब ।"

"ठीक बा जा (ठीक है, जाओ) ।" बोलकर सिपाही इधर-उधर देखता है और अस्पताल की ओर चल देता है।

सिपाही अस्पताल पहुँचता है तो देखता है धैर्य को डॉक्टर द्वारा प्राथमिक उपचार दिया जा रहा होता है। वहीं एक कंपाउंडर इंजेक्शन लेकर खड़ा होता है। सिपाही उससे श्याम के बारे में पूछता है तो वह बताता है कि श्याम को बाहर सदर अस्पताल भेजा गया है पैर का एक्स-रे के लिए। तभी सिपाही की नजर चंकी आशीष पर पड़ती है, वे दोनों भी अस्पताल पहुंच चुके थे, चंकी आशीष धैर्य के पास आकर बैठते हैं। सिपाही उन लोगों को देख रहा होता है।

"ज्यादा नईखे लगाल ना (ज्यादा नहीं लगा ना)?"

"क्या भैया, आप लोगों की निगरानी में यह सब हो जाता है।" आशीष सिपाही से कहता है।

"हम थोड़ा नाश्ता करे गइल रहनी ई सब हो गइल (हम थोड़ा नाश्ता करने गए थे, यह सब हो गया)।" सिपाही जवाब देता है।

"आप नाश्ता करने गए और इधर घिनौना हरकत हो गया।" चंकी सिपाही से कहता है।

"कैदी सब के खाना बटे लगल रहे 11:00 बज गइल रहे हमरो बुख लाग गइल रहे ऐही से खाए चल गइल रहनी सुबह से कुछो नइखे खयनी ह (कैदी सब को खाना बंटने लगा था, 11:00 बज गया था, हमें भी भूख लग गई थी, इसलिए चले गए, सुबह से कुछ खाया नहीं था)।" सिपाही जवाब देता है।

"अच्छा श्याम के तू लोग मरले बड़ाअ (अच्छा, श्याम को आप लोगों ने मारा)?"

"कोई शक।" आशीष गुस्से में बोला।

"जमादार साहब तक रपट चल गइल बा दिहा जवाब (जमादार साहब तक रिपोर्ट चली गई है, इसका जवाब दीजिएगा)।" जमादार ने सिपाही को आदेश दिया।

"आपको भी बुलाया जाएगा, आप अपना जवाब तैयार रखिए।" चंकी गुस्से में बोला।

"देखल जाई से (देखा जाएगा)।" सिपाही ने कहा।

"हो गया, पट्टी कर दी है हाथ पर, इंजेक्शन भी लगा दिया है, पूरा खून साफ कर दिया है। बस हाथ बचा के रखना, दो दिन में ठीक हो जाएगा। आओ, दवाई ले लो।" डॉक्टर धैर्य से कहता है।

"ठीक है।" धैर्य सिर हिलाकर कहता है।

धैर्य रिशव जाकर कंपाउंडर से दवाई ले लेते हैं। इसके बाद चंकी आशीष के साथ वे दोनों भाई वार्ड चले जाते हैं।

"चलो, खाना खा लेते हैं।" चंकी कहता है।

"हाँ , चलो, ये दवाई भी खा लेगा, खाना खा के।" आशीष कहता है।

चारों खाना निकालते हैं और खाने बैठ जाते हैं। चंकी आशीष बड़े चाव से घर का खाना खा रहे होते हैं, वहीं रिशव धैर्य जरा भी खाना का आनंद नहीं ले रहे थे, आनंद ले भी कैसे उनकी हालत ऐसी थी कि उन्हें खुद नहीं पता था कि उनके साथ क्या हो रहा है।

खाना खाकर धैर्य दवाई खाता है। आशीष उसे एक चटाई देता है और अपने बिस्तर के बगल में चटाई बिछाने को कहता है। रिशव उस चटाई को उनके बिस्तर के बगल में बिछाता है और दोनों भाई विश्राम करने लगते हैं। चंकी आशीष वही अपने बिस्तर पर विश्राम कर रहे होते हैं।

नंबरबंदी का समय हो जाता है, सभी खंड प्रभारी अपने-अपने खंड में आकर गिनती करके वार्ड बंद कर देते हैं। फिर गुमटी पर रिपोर्ट करते हैं, जहाँ से जेल गेट पर वाकी-टोकी के माध्यम से रिपोर्ट की जाती है। गिनती मिलाने में लगभग एक घंटा लग जाता है, क्योंकि कुछ कैदी कोर्ट में पेशी के लिए और कुछ कमानी में होते हैं। काट-छांट के बाद गिनती मिल जाती है और फिर वार्ड खोल दिया जाता है।

कुछ देर बाद गुमटी से अनाउंस होता है: "दो नंबर खंड के प्रभारी गुमटी पर हाजिर हो।" यह सुनकर राजेश सिपाही की हालत खराब हो जाती है। उसे डर है कि जमादार उसके साथ क्या करेगा। जमादार, जो 60 वर्ष का बूढ़ा व्यक्ति है और ब्लड प्रेशर की समस्या से पीड़ित है, अगर उसका ब्लड प्रेशर हाई होता है तो वह किसी को नहीं बक्शता। सिपाही डरते-डरते गुमटी की ओर जाता है।

"क्या हुआ था, आपके खण्ड में आज?" जमादार पूछता है।

"ऊ थोड़ा लड़ाई हो गइल रहे (वह थोड़ा लड़ाई हो गई थी)।" सिपाही जवाब देता है।

"आप कहाँ थे?"

"ऊ थोड़ा नाश्ता.....!" सिपाही जमादार की आंखों में देख डर जाता है और बोल नहीं पाता।

"आपकी ड्यूटी थी खण्ड में रहने की ना?" जमादार गुस्से में कहता है।

"माफी हुजूर! गलती हो गईल ।" सिपाही कहता है।

"समझ नहीं आता बात। निष्कासित कर दिए जाएंगे आप।" जमादार कहता है।

"माफी हुजूर! अब से ध्यान रखब (अबसे ध्यान रखेंगे)।" सिपाही विनती करता है।

"क्या ध्यान रखेंगे! एक तो इस जिले में इतना समय हो गया है, इधर का भाषा समझते हैं तो बोलने की कोशिश करिए।"

"जी हुजूर।"

"बुलवाईए उन दोनों लड़कों को, साथ में चंकी आशीष को भी बुलवाईए।"

"जी हुजूर!" कहकर सिपाही जाने लगता है।

"अच्छा सुनिए! श्याम को जेल अस्पताल भेज कर किसी को बुलवाईए।"

"उ तो सदर अस्पताल..."

"आ गया है, पैर सही सलामत है, उसका नाटक कर रहा था हरामखोर।" जमादार सिपाही की बात खत्म होने से पहले बोल पड़ता है।

"जी हुजूर..." बस इतना ही बोलकर सिपाही काम चलाता है। उसे डर था कहीं जमादार उसकी भोजपुरी सुनकर गुस्सा न हो जाए।

गुमटी से बाहर आकर सिपाही एक कैदी को जेल अस्पताल भेजता है, श्याम को बुलाने और खुद वार्ड नंबर पांच चले जाता है। वार्ड जाकर उन चारों से कहता है, "जमादार साहब बुला रहे हैं।" यह सुनकर चंकी आशीष खड़े होते हैं और रिशव धैर्य को लेकर गुमटी पहुँच जाते हैं।

"क्या हो गया चंकी?" जमादार चंकी को सामने देख पूछता है।

"अब आप बुला लिए हैं तो आपको भी बता ही देंगे।"

"आइए, बैठिए।" जमादार चंकी आशीष से कहता है।

चंकी आशीष वहीं कुर्सी पर अपना स्थान ग्रहण करते हैं। उनके बगल में रिशव धैर्य खड़े रहते हैं। जमादार धैर्य को देखता है, उसके सिर पर चोट थी, हाथ में पट्टी लगी थी, नाक भी सूजी हुई थी।

"कैसे हुआ यह सब?" जमादार धैर्य से पूछता है।

फिर रिशव धैर्य मिलकर विस्तार से पूरे घटना का वर्णन करते हैं।

"अभी ठीक हो ना?"

"हाँ ।" धैर्य सिर हिलाकर जवाब देता है।

तभी श्याम वहाँ लंगराते हुए पहुँचता है। श्याम को देखते ही सभी लोग अक्रोशित हो जाते हैं। जमादार ने उठकर एक तमाचा श्याम को जड़ दिया।

"सुधरेगा नहीं तुम हरामखोर।" जमादार गुस्से में श्याम की ओर देखते हुए कहता है।

"सर, बहुत मारा।" श्याम जमादार से कहता है।

"तुम घिनौना हरकत क्यों करते हो, जी चुटिया कहीं का? कितना लाठी तुम पर बरसा है फिर भी आदत नहीं जाती है।" जमादार गुस्से में कहता है।

"गलती हो गई सर।" श्याम सिर झुकाकर बोलता है।

"चुप साला चुटिया! अभी टूटे-फूटे हो नहीं तो तुम्हारा पिछवाड़ा लाल करवा देते हरामखोर।" जमादार गुस्से में कहता है।

"सौ लाठी अभी भी सह लेगा, यह कुत्ते का बच्चा।" चंकी गुस्से में कहता है।

"सुनिए राजेश, वार्ड बंद होते समय इसे सेल में बंद कीजिए और इसका सामान बिस्तर की सख्ती से जांच कीजिए, सेलफोन बरामद कीजिए। इसके खिलाफ एक और केस लगवाते हैं, फोन आता है तो इसे बाहर से हरामखोर कहीं का।" जमादार काफी गुस्से में सिपाही को आदेश देता है।

"जी हुजूर।"

"श्याम, तुम सुधर जाओ नहीं तो इस जेल में हम तुम्हारा पिछवाड़ा नीलाम करेंगे।" जमादार श्याम को धमकी देता है।

"चल भाग यहाँ से हरामखोर।"

यह सब श्याम निर्लज्ज की तरह सुनता है और गुमटी से बाहर आ जाता है। चंद मिनट बाद रिशव धैर्य को भी जमादार गुमटी के बाहर बिठा देता है, यह बोलकर कि उन्हें चंकी आशीष से कुछ जरूरी बात करनी है।

"आप लोगों से विनती है, तीन महीने जेल शांति से चलने दीजिए, हम सेवानिवृत्त होने वाले हैं। हम कोई परेशानी नहीं चाहते हैं। अधीक्षक साहब, जेलर साहब भी यही चाहते हैं कि पुर्णीया सेंट्रल शांति से चले।" जमादार आशीष चंकी से कहता है।

"ठीक है सर, कोशिश करेंगे।" आशीष कहता है।

"कोशिश नहीं! पुर्णीया सेंट्रल शांति से ही चलना चाहिए, जेलर साहब का आदेश है, वरना आप लोगों का जेल ट्रांसफर हो जाएगा।"

"सर, अगर श्याम जैसे कमीनों पर जेल प्रशासन कमान नहीं कसेगी तो किसी को कुछ करना ही होगा।" चंकी कहता है।

"उसका फिक्र छोड़िए। पहली बात तो यह कि हम श्याम को सेल से बाहर निकलने नहीं देंगे।"

"सिर्फ श्याम की बात नहीं है, और भी हरामखोर सब हैं।" चंकी गुस्से में जमादार की बात काटते हुए कहता है।

"वो जेल प्रशासन संभाल लेगी, उसका फिक्र मत कीजिए।"

"ठीक है सर।"

"ठीक है, जाइए। फिर हमें उम्मीद है कि यह बात आप लोगों के ध्यान में रहेगी।"

"प्रणाम सर।" बोलकर दोनों बिना जमादार के बातों का जवाब दिए गुमटी से बाहर आ जाते हैं।

बाहर रिशव और धैर्य बैठे होते हैं। उन्हें साथ लेकर आशीष और चंकी वार्ड की ओर चलते हैं। वार्ड पहुँचकर रिशव और धैर्य चटाई पर लेट जाते हैं, जबकि आशीष और चंकी अपने-अपने बिस्तर पर जा पड़ते हैं। कुछ देर में नींद आ जाती है और वे सो जाते हैं।

कुछ घंटे बाद आशीष जब जागता है, तो देखता है कि रिशव और धैर्य मुंह लटका कर बैठे हुए हैं।

"ऐसे मुंह लटका कर बैठने से कोई हल नहीं मिलने वाला है। जाओ, बाहर जेल प्रांगण में घूमो। कुछ देर में वार्ड बंद ही हो जाएगा,अब शाम होने ही वाली है।" आशीष उन दोनों से कहता है।

"ठीक है, जाते हैं भैया।" कहकर रिशव धैर्य को लेकर बाहर चला जाता है।

जेल प्रांगण में जाकर वे दोनों वहीं मंदिर के बगल वाले चबूतरे पर जाकर बैठ जाते हैं। उसी वक्त वहाँ से राजीव गुजर रहा होता है। राजीव का ध्यान धैर्य पर पड़ता है, राजीव देखता है कि उसे चोट लगी है। राजीव उनके पास आता है और पूछता है—

"कोई मारा है या गिर गया था?"

"गिर गया था।" रिशव उसे नजरअंदाज करते हुए जवाब देता है। वह नहीं चाहता था कि उसका भाई किसी चर्चा का मुद्दा बने।

"कैसे?"

"बस ऐसे ही! तुम कहीं जा रहे थे?"

"एक आदमी को ढूंढ रहे थे।"

"जाओ, ढूंढो फिर।"

"हाँ , जा रहे हैं।" राजीव समझ गया कि रिशव उससे बात नहीं करना चाह रहा था, इसलिए वह वहाँ से चल देता है।

तभी धैर्य की नजर श्याम पर पड़ती है। धैर्य देखता है कि श्याम लंगराते हुए उनकी ओर आ रहा है।

"भैया, वह इधर ही आ रहा है।" धैर्य रिशव को श्याम की ओर इशारा करते हुए कहता है।

"अब कुछ नहीं करेगा, वह परेशान मत हो।" रिशव जवाब देता है।

देखते ही देखते श्याम उनके सामने आ खड़ा होता है। अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से दोनों को बारी-बारी से घूरता है।

"तुम्हारे वजह से यह हाल हुआ है हमारा।" गुस्से में श्याम रिशव से कहता है।

"आप ही गलत हरकत किए न।" रिशव जवाब देता है।

"अच्छा सेल तो हम जाएंगे ही, लेकिन तुम्हें सबक सिखा कर जाएंगे," श्याम कहते हुए ब्लेड निकालता है। जैसे ही ब्लेड रिशव की ओर बढ़ता है, दोनों भागकर गुमटी की ओर जाते हैं। गुमटी पर जाकर वे जमादार को बताते हैं। जमादार तुरंत वॉकी-टॉकी पर छोटा जमादार को श्याम की ओर इशारा करते हुए उसे पकड़ने का आदेश देता है। श्याम लंगराते हुए भाग रहा था।

छोटा जमादार वॉकी-टॉकी पर कुछ सिपाहियों को बुलाता है और श्याम को पकड़ने भेजता है। सिपाहियों की टोली दौड़कर लंगड़ा श्याम को पकड़ती है और गुमटी पर लाकर जमादार के सामने पेश कर देती है।

"इस पर लाठी बरसाइए। यह कुत्ता का बच्चा हरामखोर सुधरेगा नहीं।" जमादार सिपाहियों को आदेश देता है।

"सर, हम कुछ नहीं किए हैं।" श्याम बोलता है, लेकिन कोई सुनता नहीं है।

बस आदेश की देरी थी, सभी सिपाही श्याम का पिछवाड़ा लाल करने के लिए पहले से तैयार थे। जैसे ही आदेश मिलता है, लाठी बरसनी शुरू हो जाती है।

यह दृश्य देखकर चंकी और आशीष भी नीचे आ जाते हैं। गुमटी के चारों ओर भीड़ लग जाती है, जो श्याम की पिटाई देखने के लिए एकत्रित हो जाती है।

"क्या हुआ?" आशीष रिशव से पूछता है।

"यह ब्लेड मारने आया था हमें।"

"मरने दो साले को।" चंकी को आशीष को जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि यह श्याम का पुराना काम था।

"चलो, आओ, तुम्हें अपने वार्ड में शिफ्ट करवा देते हैं।" आशीष उन दोनों से कहता है।

आशीष उन्हें लेकर जमादार के पास जाता है। चंकी वहीं खड़े होकर श्याम की पिटाई देखता है।

"सर, इन्हें मेरे वार्ड में कर दीजिए।" आशीष जमादार से अनुरोध करता है।

"अच्छा, कर देते हैं।" जमादार एक पर्ची निकालता है, उस पर रिशव और धैर्य का नाम लिखकर दे देता है। उसे लेकर वे तीनों बाहर आते हैं। चंकी को साथ लेकर वे लोग वार्ड की ओर चल देते हैं। श्याम अधमरा हो चुका था, उसे सिपाही उठाकर सेल में ले जाकर बंद कर देते हैं।

****

शाम होने वाली थी और खाना बांटने का काम शुरू हो चुका था। सभी कैदियों की थालियों में जली-पकी रोटियाँ और पानी में तैरते आलू-सोयाबीन की सब्जी थी। अधिकतर कैदी खाना खाकर अपने वार्ड की ओर चले गए थे, जबकि कुछ नए कैदी खाना लेकर अपने वार्ड में जाते थे। पुराने कैदी शाम का खाना जल्दी खा लेते थे। कुछ प्रमुख कैदी जैसे चंकी और आशीष जेल प्रशासन को पैसे देकर अलग से खाना मंगवाते थे।

जैसे ही घड़ी में 6:00 बजे, सभी सिपाही कैदियों को उनके वार्ड में बंद कर देते हैं। गिनती करके गुमटी पर रिपोर्ट की जाती है, जहाँ से जमादार वाकी-टोकी से जेल गेट से कैदियों की संख्या की पुष्टि करता है। पुष्टि होते ही, पुराने सिपाही शिफ्ट खत्म कर बाहर चले जाते हैं और नए सिपाही रात्रि ड्यूटी पर आ जाते हैं।

आशीष ने जमादार द्वारा दिया गया पर्चा वार्ड के राइटर को सौंपा और रजिस्टर में रिशव और धैर्य का नाम दर्ज कराने को कहा।

रिशव और धैर्य हाथ-पैर धोकर चंकी और आशीष के बिस्तर पर आकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद आशीष सेलफोन लेकर बिस्तर पर आया। चंकी ने बेसरा जी और चायवाले को रुपए देते हुए बिस्तर पर आकर बैठा। आशीष ने एक नंबर डायल किया, लेकिन या तो फोन स्विच ऑफ था या रिसीवर ने नहीं उठाया। आशीष हर रोज वार्ड बंद होने के बाद अपनी प्रेमिका से बात करता था।

आशीष फोन नहीं लगने पर अपने सेलफोन को तकिया के अंदर छुपाकर रख रहा होता है, तभी वह देखता है कि रिशव सेलफोन की तरफ देख रहा होता है।

"बात करेगा?" आशीष ने पूछा।

"हाँ! पापा को कल आने बोलते।"

"ठीक है, जाओ शौचालय में जाकर एक मिनट के अंदर बात करके आओ।" बोलकर आशीष छुपाकर सेलफोन रिशव के पैंट के जेब में डाल देता है। रिशव वार्ड के अंदर बनी एक छोटे से शौचालय में जाकर तुरंत बात करके आता है और हाथों के बीच छुपाते हुए आशीष को सेलफोन दे देता है।

"हुई बात?"

"हाँ, पापा कल आएंगे।"

वार्ड बंद होने के बाद दूसरे वार्डों में कैदी सेलफोन खुलकर उपयोग करते थे, लेकिन इस वार्ड में छिपाकर किया जाता था क्योंकि आशीष के सामने वाले बिस्तर पर पूर्णिया के एसटीएफ(Special Task Force) का हेड सोता था, जो किसी फ्रॉड के केस में वहाँ था।
टीवी पर जी सिनेमा चैनल पर अजय देवगन की "गंगाजल" फिल्म चल रही थी, और सभी कैदी फिल्म देखने में व्यस्त थे।

"शट अप। सवाल हम करेंगे, तुम जवाब दोगे। दरोगा मांगी राम नाम है मेरा। अरे दो मिनट में कायदा कानून घुसेड़ देंगे, समझा की नहीं। दरोगा का पावर मालूम है ना, एक मिनट में अंदर कर देंगे।" इस सीन पर एक कैदी ने सीटी मारी।

दूसरे सीन में दरोगा को तेजपुर के नए एसपी के रूप में देखकर सभी ने ठहाके मारे। दयाशंकर पांडे का अभिनय मांगी राम के रोल में काफी पसंद आया। "भारी मिस्टेक हो गया सर, एकदम ब्लंडर हो गया।" यह डायलॉग कैदियों को बहुत अच्छा लगा।
चंकी ने टीवी से नजर हटाई और आशीष से पूछा, "भूख लगी है?"
"हाँ , चलो खा लेते हैं।" आशीष ने जवाब दिया। आशीष दोनों भाइयों को साथ लेकर खाने के लिए चला गया। वही कैदी जो थैला उठाकर लाया था, वही चंकी और आशीष के चूल्हा पर से खाना लाता था, आज भी वही खाना लाकर दे गया। वह दोनों के छोटे-मोटे काम करता था, और बदले में वे उसकी छोटी-मोटी जरूरतें पूरी कर दिया करते थे।

वे सब खाना खाकर बिस्तर पर लौट गए। चंकी फिल्म देखने में व्यस्त हो गया, जबकि आशीष ने रिशव से सवाल किया।

"रिशव, एक बात बताओ, हुआ क्या था?"

"क्या भैया?"

"बाहर ऐसा क्या हुआ कि तुम यहाँ आ गए?" आशीष ने पूछा और चंकी को पैर से ठोकर मारी ताकि वह ध्यान दे सके।

"भैया, मेरी बहन जो पुर्णीया कॉलेज से एम.ए. कर रही है, उसे परेशान किया था। एक बार उसने आत्महत्या का प्रयास भी किया था। घर में बहुत कुछ चल रहा था, हमें पूरा पता नहीं है।"

"कौन परेशान किया था?" चंकी ने पूछा।

"सुरेश यादव," रिशव ने जवाब दिया।

"फिर तुम लोग कैसे फंसे?" चंकी ने पूछा।

"हम धैर्य का दाखिला कराने गए थे। वहीं हमें पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया।"

"जब तुम लोगों को ले जा रहा था, कुछ कहा?"

"बोल रहा था, तुम्हारे बाप ने केस किया था, अब तुम लोग भी जेल में हो।"

"केस कब हुआ था?"

"हमें नहीं पता भैया।"

"ठीक है, तुम लोग सो जाओ।" आशीष ने कहा और चारों ओर देखने लगा। चंकी फिर से फिल्म देखने लगा। आशीष ने देखा कि सामने एसटीएफ का हेड सो रहा था और उसके बिस्तर पर जगह खाली थी।

"सर, इन दोनों को बगल में सुला लीजिएगा।" आशीष उस एसटीएफ ऑफिसर के पास जाकर कहता है।

"ठीक है, भेजिए ना।" मैंने (एसटीएफ ऑफिसर) कहा ।

आशीष उन दोनों को मेरे बगल में सोने के लिए बोलता है। वे दोनों मेरे बगल मे खाली जगह पर सोने तो आ जाते हैं, लेकिन मेरी बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूंछ देखकर वे दोनों डर रहे थे।

"क्या नाम है तुम्हारा?" मैं मुस्कुराया और पूछा

"रिशव शुक्ला।"

"और तुम्हारा?"

"धैर्य शुक्ला।"

"मेरा नाम समर प्रताप यादव है, मैं पुलिस में हूं।" मैंने अपना परिचय दिया।

"सर, आपके बारे में पेपर में पढ़ा था एक बार। आपको SPY बुलाते हैं ना सब?" रिशव ने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा।

"हाँ , मुझे SPY बुलाते हैं डिपार्टमेंट वाले भी और जनता भी।"

कुछ देर बातें करने के बाद मुझे याद आया कि मेरी जमानत हो चुकी है और सुबह मुझे बाहर जाना है। बाहर बहुत सारे काम निपटाने हैं। कमीने विधायक की वजह से मैं जेल में

हूँ, नहीं तो यहाँ मैं अपराधियों को भेजता हूँ। मैंने सोचा कि अब सो जाना चाहिए। मैंने रिशव और धैर्य से भी कहा, "सो जाओ," और खुद भी सो गया।

****

अगले सुबह 6:00 बजे सिपाही आकार वार्ड खोलता है, गिनती करता है और सभी कैदी रोज की तरह अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो जाते हैं।

चंकी और आशीष भी ब्रश करते हुए, रोज की तरह उस सुबह भी गुमटी पर कैदियों को देख आपस में चर्चा कर रहे थे। मैं भी जाकर स्नान करता हूं, स्नान करके अच्छे साफ कपड़े पहनता हूँऔर अपने जूते लेकर बरामदे पर बने चबूतरे पर बैठकर जूते पहनता हूँऔर अपने बुलावे का इंतजार करता हूं, कि कब अनाउंस हो "समर प्रताप यादव" घर जाने के लिए जेल गेट पर पहुँचे।

मैं इंतजार कर रहा था अपने बुलावे का, पर यह इंतजार मुझे खल रहा था। तो मैंने अपने बगल में रखे "दैनिक जागरण" अखबार को उठाकर पढ़ने की कोशिश की ताकि मेरा समय बीत जाए। जैसे ही मैंने अखबार खोला, हेडलाइन छपी थी: छात्र अध्यक्ष "सुरेश यादव" लापता। उसी वक्त मेरा बुलावा आया: "समर प्रताप यादव" घर जाने के लिए जेल गेट पर पहुँचे।

मैंने अखबार बंद करके वहीं सलीके से रखा और वार्ड से अपना एक छोटा सा थैला उठाया, जिसमें दो-चार कपड़े थे, और घर जाने के लिए वार्ड से रवाना हुआ। बहुत सारे कैदियों ने मुझे बाय बोला, कुछ गेट तक छोड़ने आए। क्या नसीब है! कोई बाहर लापता हो गया, कोई यहाँ जेल में बंद है, और मैं घर जा रहा हूं।

2. हत्या या लापता

3 नवंबर 2003

"देखिए, पूरे शहर में खबर आग की तरह फैल चुकी है कि 'सुरेश यादव' पिछले शाम से लापता है। सारे शहर को पता चलने का कारण ये है कि 'सुरेश यादव' भूतपूर्व विधायक 'चंद्रकांत यादव' का बड़ा भांजा है। पुलिस की कठिनाई बढ़ने वाली है। एक तो यह इस शहर का हाईलाइटेड क्राइम है, मीडिया मिर्च मसाला लगाकर खबर परोसने को तैयार है, अगर पुलिस नाकाम हुई तो जनता में अलग छीछालेदर होगी और 'चंद्रकांत यादव' अलग ही लेवल पे सबको परेशान करेगा। इसलिए समझदारी से काम लीजिए और जल्द से जल्द 'सुरेश यादव' का पता लगाइए।" पुर्णीया के आईजी 'बृजकिशोर दुबे' कॉल पर एसआई (सीनियर इंस्पेक्टर) 'अमित कुमार' से कहते हैं।

"सर, हम पूरा जोड़ लगा दिए हैं। अपना खबरी सब भी काम पे लगा दिए हैं।"

"जैसे भी हो अमित जी, जल्द से जल्द इस अपराध से पर्दा हटाइए।" आईजी बेचैन होकर बोलते हैं।

"हम आपको अपडेट देते रहेंगे सर।"

"ठीक है!"

"जय हिंद सर।"

"जय हिंद।" बोलकर एसआई अमित कुमार टेलीफोन का रीसीवर वापस रख देता है।

थाने में आज काफी हलचल थी। एसआई अमित कुमार तनाव में थे, क्योंकि सुरेश यादव का घर उनके थानाक्षेत्र में था और एफआईआर भी उनके थाने में दर्ज हुई थी।

सहायक थाना के अधिकांश पुलिसकर्मी सुरेश यादव की खोजबीन में लगे हुए थे। थाने में केवल तीन कांस्टेबल और एसआई अमित कुमार ही मौजूद थे।

एसआई अमित कुमार तनाव के कारण सिर पर हाथ रखकर अपने हाथ को टेबल पर टिकाए बैठे था। तभी उसे चाय पीने की इच्छा हुई, तो उसने कांस्टेबल दयाराम पांडे को आवाज लगाई। दयाराम पांडे लगभग 40 वर्ष का एक तोंद वाला गोरा-चिट्टा व्यक्ति है, जो राइफल संभालते हैं तो पैंट गिर जाती है और पैंट संभालते हैं तो राइफल गिर जाती है। कांस्टेबल पांडे ने आवाज सुनते ही एक हाथ से पैंट पकड़कर और दूसरे हाथ से राइफल पकड़कर भागकर एसआई के केबिन में जाते हैं।

"हाँ जनाब! कुछ कह रहे थे?"

"पांडे जी, चाय मंगवाइए, सर फटा जा रहा है।"

"जी जनाब," बोलते हैं।

पांडे जी केबिन से बाहर आकर चौकी के बगल वाले दुकान में आवाज देकर कहते हैं, "चाय लेते आओ बड़े साहब के लिए।"

थोड़ी देर बाद एक 10 वर्ष का बच्चा चौकी में आता है चाय का ग्लास लेकर और एसआई के केबिन में जाकर उसके सामने टेबल पर रखता है।

"और कुछ लाऊं साहब?"

"बाहर माचिस पड़ा होगा कहीं भी, लेके आ।"

"लाता हूँसाहब।"

एसआई अपने जेब से एक सिगरेट की डब्बी निकालता है, उसमें से एक सिगरेट निकालकर अपने होठों के बीच जकड़ता है। वह बच्चा माचिस लेकर आता है।

"जला इसको, छोटू।"

छोटू माचिस जलाता है और एसआई की ओर बढ़ाता है। एसआई सिगरेट सुलगता है और एक लंबा कस लेता है।

"जाओ, 10 मिनट में ग्लास ले जाना।"

"ठीक है साहब।"

एसआई चाय की एक चुस्की लेता है और सिगरेट का एक कस खींचता है। यह सिलसिला तीन से पाँच मिनट तक चलता रहा। फिर चाय खत्म हो गई, सिगरेट भी खत्म हो गई। इसके बाद एसआई अपनी कुर्सी खिसकाते हुए टेबल के कोने पर रखे टेलीफोन के पास जाता है और जैसे ही नंबर डायल करने वाला होता है, सामने जेआई (जूनियर इंस्पेक्टर) आकर खड़ा हो जाता है

"आप ही को लगा रहे थे।"

"जनाब, हमको जल्दी आना पड़ा। एसपी (सुप्रिटेंडेंट ऑफ पुलिस) साहब आपसे बात करना चाह रहे हैं, बता रहे थे, आप उनके कॉल का उत्तर नहीं दे रहे हैं।"

"हड़बड़ी में सेलफोन घर पे भूल गए, टेलीफोन पे करना चाहिए उनको। आप बैठिए, लगाते हैं उनको।" अमित कुमार जेआइ से कहता है।

जेआई वहीं कुर्सी पर बैठ जाता है और एसआई एसपी को कॉल मिलाता है।

"जय हिंद, जनाब।"

"अमित जी, आप कॉल का जवाब नहीं दे रहे हैं। शहर में इतना गंभीर मामला चल रहा है, और आपको इसकी परवाह ही नहीं है?" एसपी गुस्से में कहते हैं।

"जनाब, उसी में लगे हुए हैं। आप टेलीफोन पे कर लेते, हरबड़ी में सेलफोन घर पे भूल गए।"

"लगाए थे टेलीफोन पे, व्यस्त बता रहा था।"

"जनाब, आईजी साहब से बात हो रही थी।"

"कहाँ तक पहुंची है खोजबीन?"

"जनाब, अभी सुरेश यादव के घर ही जा रहे थे, उनके घरवालों से पूछताछ करने। तब तक जेआई साहब बताए आप बात करना चाहते हैं।"

"कर क्या रहे हैं आप?" एसपी सहाब ने गुस्से में चिल्लाकर बोला।

"जी जनाब....।" एसआई ने भयभीत होकर बोला।

"आप अभी तक उनके घरवालों से पूछताछ नहीं किए हैं, किस चीज का इंतजार कर रहे थे?"

"जनाब, सभी को हर जगह तैनात कर दिए हैं। जेआई साहब भी उनके दोस्तों से पूछताछ करके आए हैं।"

"सबको काम पे लगा दिए लेकिन आप कुर्सी तोड़िए चौकी में बैठकर।"

"माफी जनाब।"

"जाइए काम पे लगिए, थोड़ा बाहर निकलिए और जल्दी से सुरेश यादव का पता लगाईए।"

"जी जनाब, जय हिंद।"

"जय हिंद।" बोलकर कॉल कट जाने पर टेलीफोन रीसीवर रख देता है और एक लंबी सांस लेता है।

"सब कॉल करके हम्हीं को सुनाएगा।" सिर पर हाथ फेरते हुए एसआई कहता है।

"जनाब, 12 घंटे से ऊपर हो गया है, चंद्रकांत यादव प्रेशर बना रहा होगा।"

"इन नेता लोगों का भी अलग ही चोचला है। अच्छा, बताइए आप क्या खबर लाए हैं?"

"जनाब, कुछ खास नहीं पता चल पाया। सुरेश के जितने भी दोस्त यार थे, सबसे पूछताछ करने पर भी कोई ठोस सुराग नहीं मिला।"

"कोई तो ठोस सुराग होगा न उसके अपहरण होने का, किसी से दुश्मनी, आपसी मतभेद?"

"जनाब, जितना की पता चल पाया है, उससे कोई दुश्मनी मोल नहीं लेता था, चंद्रकांत यादव के कारण। सब सुरेश से डरते थे।"

"समझ नहीं रहे हैं आप, जेआई साहब। कोई तो साजिश रचा होगा।"

"साजिश तो बड़ी है जनाब, यही तो पता लगाना है।"

"अच्छा, एक काम करिए, आप चौकी में ही रहिए। हम पांडे जी को लेकर सुरेश के घर पर जाते हैं।"

"ठीक है जनाब।"

एसआई कुर्सी से खड़े होकर टेबल पर रखे अपने कैप को उठाकर अपने सर पर लगाता है और केबिन से बाहर आ जाता है, साथ ही जेआई भी आकार अपने डेस्क पर स्थान ग्रहण कर लेता है।

"पांडे जी चलिए, आते हैं।"

"जी जनाब।" पांडे जी पैंट संभालते हुए आते हैं।

"राइफल काहे लटक रहा है?"

"जनाब, ऊ पैंट सरक रहा था, उसको ही संभाल रहे थे।"

"नाप का काहे ना सिलाते हैं?" एसआई अपनी मोटरसाइकिल पर बैठते हुए बोलता है।

"दर्जी का क्या बताए जनाब... इस बार सिला लेंगे जनाब।"

एसआई अपनी बुलेट को किक मारते ही चालू कर लेते हैं। पांडे जी, जो राइफल और पैंट संभाले हुए हैं, पीछे बैठ जाते हैं। दोनों सुरेश यादव के घर के लिए रवाना हो जाते हैं। थाना से करीब दो किलोमीटर दूर सुरेश यादव का घर था। रास्ते में पांडे जी को चुप्पी खल रही थी। पांडे जी गप्पी आदमी थे, जबकि एसआई थोड़े कम बोलने वाले और तनाव में थे, इसलिए एसआई चुप थे। लेकिन पांडे जी चुप नहीं रहने वाले थे, तो उन्होंने एसआई से बात करने की कोशिश की-

"जनाब, आपको क्या लगता है, सुरेश यादव का अपहरण क्यों हुआ होगा?"

"पांडे जी, अगर पता होता तो अभी सुरेश यादव को ढूंढ लिए होते ना।"

"फिर भी जनाब, कुछ तो लग रहा होगा ना।"

"पांडे जी, एक बात बताएंगे आप?"

"हाँ जनाब, पूछिए ना।"

"चुप रहने का क्या लीजिएगा?"

"माफ कीजिए, जनाब! वो तो हम..."

"आपका बकबक बंद नहीं होता है।" पांडे जी की बात को काटते हुए एसआई बोलता है।

पांडे जी अच्छी तरह से समझ जाते हैं कि एसआई अभी बात करने को इच्छुक नहीं हैं। थोड़ी ही देर बाद वो दोनों सुरेश यादव के घर पहुंच जाते हैं। पांडे जी मोटरसाइकिल से उतरते हैं, अपने पैंट और राइफल को संभालते हुए। फिर एसआई मोटरसाइकिल को स्टैंड पर लगाते हुए उतरता हैं, फिर इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए घर के अंदर प्रवेश करता है। वहीं सामने घर का एक नौकर पानी का जग लेकर जा रहा होता है। एसआई उस नौकर को आवाज लगाता है-

"आपके मालिक कहाँ हैं?"

"बैठिए, बुलाते हैं।" वहीं चार कदम दूर कुर्सी और टेबल लगा हुआ था, वहीं दोनों जाकर बैठ जाते हैं। कुछ ही देर में सुरेश यादव के पिता उनके निकट आकर बैठते हैं।

"मेरा नाम अमित कुमार है, हम सहायक थाना के एसआई हैं।"

"जी, हम दयाल यादव, सुरेश के पिता। कहिए, क्यों आना हुआ?" बहुत निराश होकर बोले।

"दयाल जी, आपके परेशानी को हम समझ सकते हैं। कुछ सवाल करना है आपसे सुरेश जी के केस के सिलसिले में।"

"हाँ , पूछिए।"

"सर, आपको किस पर शक है, कौन ऐसा कर सकता है?"

"क्या ही बताए आपको अमित जी, सुरेश कभी घर में अपने काम के बारे में चर्चा ही नहीं करता, जो हमें कुछ पता चले। वो तो घर में भी ज्यादा नहीं रहता था, सुरेश अधिकतर अपने मामा चंद्रकांत जी के यहाँ रहा करता था, कभी-कभी घर आ जाता था, अपने माँ के बुलाने पर।"

"आपसे सुरेश जी के रिश्ते कैसे थे?"

"हमसे ज्यादा बातचीत नहीं करता था, हम नहीं चाहते थे कि वो राजनीति में जाए। इस वजह से वो हमसे खफा था।"

"अच्छा, कभी आपने कोई खबर सुनी है कि सुरेश से किसी की दुश्मनी है?"

"नहीं, कभी नहीं।"

"अच्छा, सुरेश जी की माँ से बात हो सकती है?"

"रुकिए, बुलाते हैं।" बगल में खड़े नौकर से दयाल जी अपनी पत्नी को बुलाने को कहते हैं।

दयाल जी की पत्नी घर के अंदर से चाय लेकर आती है और वही टेबल पर चाय रखकर, कुर्सी पर बैठ जाती है।

"नमस्ते मैडम, हम एसआई अमित कुमार।"

"नमस्ते।"

"हम आपसे सुरेश जी के बारे में कुछ सवाल पूछना चाहते हैं।"चाय की चुस्की लेते हुए अमित कुमार कहता है।

"पूछिए।"

"आपको कभी कोई दुश्मनी के बारे में बताया है सुरेश जी ने?"

"घर तो आता नहीं था, बताएगा क्या, जब दो-तीन बार फोन करके बुलाते थे, तब आता था और खाना खाकर चले जाता था।" उन्होंने सिसकते हुए बोला।

"घबराइए नहीं, मैडम! हम उनको ढूंढ़ लेंगे।"

"कब ढूंढिएगा, कल शाम से लापता है। कोई खोज खबर नहीं है उसका, कल शाम से।"

"अच्छा, आप लोगों को कैसे खबर लगी कि वो लापता हैं?"

"उसको हम फोन किए थे, आज घर आकर खाना खा लो। 5:00 बजे हम उसको फोन किए थे, वो बोला 7:00 बजे तक खाना तैयार रखना, हम 7:00 बजे आ जाएंगे, हमको मामा के पास जाना जरूरी है आज कुछ काम के सिलसिले में। 6:40 बजे हमको फोन भी किया, पूछा माँ खाना बना ली, हम आ रहे हैं। इंतजार करते-करते 7:30 बज गया और वो आया नहीं, हम फोन करने लगे फोन नहीं लग रहा था। 8:00 बजे उसका मामा का फोन आया। उन्होंने पूछा, 'सुरेश घर आया है?' हमने कहा, 'नहीं,' और उन्हें सारी बात बताई। उन्होंने कहा, 'रुको, हम देखते हैं।' कुछ देर बाद उनके मामा का फिर फोन आया और उन्होंने कहा, 'थाने में जाकर रिपोर्ट लिखाओ, सुरेश लापता है।' हमें समझ नहीं आ रहा कि हमारे बच्चे के साथ क्या हो गया।" इतना कहकर सुरेश की माँ

फूट-फूट कर रोने लगती है। दयाल जी उन्हें सांत्वना देते हैं, उनके आँसू पोंछते हैं, और उन्हें चुप कराते हैं।

तभी नौकर घर के अंदर से सेलफोन लेकर आता है और दयाल जी के हाथ में पकड़ा देता है।

"हेलो, हम चंद्रकांत।"

"हाँ भाई साहब, बोलिए।"

"आप लोग ठीक हैं ना, सरिता (सुरेश की मां) कैसी है?"

"ठीक ही है....।"

"चिंता करने का जरूरत नहीं है, हम पुलिस से बात कर लिए हैं। आज शाम तक सुरेश घर में होगा।"

"थानेदार साहब भी आए हुए हैं, पूछताछ करने।"

"क्या.... बात करवाईए।" दयाल जी एसआई अमित कुमार को सेलफोन देते हैं।

"हेलो।"

"हेलो, हम चंद्रकांत यादव बोल रहे हैं।"

"जय हिंद, सर।"

"आप लोग क्या नौटंकी लगा रखे हैं जी, काहे परेशान करने आ गए इन लोगों को।"

"हम तो बस पूछताछ....।"

"सब समझ रहे हैं, जाइए पता लगाइए हमारा भांजा लापता हुआ है या उसका हत्या हुआ है।"

"सर, हम पूरा जोड़ लगा दिए हैं, अपना सारा खबरी लगा दिए हैं।"

"सुनिए, बत्ती बनाईए इन सब का और अपना पिछवाड़े में डाल लीजिए। हमको शाम तक हमारा भांजा घर में चाहिए।"

"जी सर।"

चंद्रकांत एसआई पर गुस्सा झाड़कर कॉल डिस्कनेक्ट कर देता है।

"सरिता जी, मेरा एक और सवाल है।"

"जी, पूछिए।"

"विधायक जी और सुरेश का रिश्ता कैसा है, कभी कोई अनबन के बारे में सुना है आपने?"

"कैसी बात कर रहे हैं आप, वो सुरेश को अपने बेटे की तरह मानते हैं।"

"क्षमा चाहेंगे, मैडम! अब हम लोग निकलते हैं। प्रणाम!"

सरिता जी और दयाल जी हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। एसआई और पांडे जी बाहर आकर मोटरसाइकिल के पास पहुँचते हैं। एसआई मोटरसाइकिल के पास टिककर खड़ा होता है, सिगरेट की डिब्बी से एक सिगरेट निकालता है, और माचिस से उसे सुलगाता है। पांडे जी देखते हैं कि एसआई गहरी सोच में हैं और सिगरेट का कस ले रहे हैं।

"जनाब, क्या सोच रहे हैं?"

"यही, पांडे जी, कि इस दलदल से कैसे निकला जाए। इस अपहरण के कारण पुलिस डिपार्टमेंट की थू-थू न हो जाए।"

"बात तो सही कह रहे हैं, जनाब।"

"कुछ सुराग क्यों नहीं मिल रहा है?" एसआई मन ही मन फुसफुसाता है।

तभी पांडे जी का सेलफोन बजता है। पांडे जी जेब से अपना सेलफोन निकालते हैं और कॉल उठाते हैं -

"हेलो, कांस्टेबल पांडे स्पीकिंग।" पैंट संभालते हुए पांडे जी कहते हैं।

"पांडे जी, अंग्रेजी बाद में झाड़िएगा, पहले एसआई साहब से बात करवाईए।"

"लीजिए सर, आपके लिए फोन है।" एसआई को फोन देते हुए पांडे जी कहते हैं।

"हेलो।"

"जनाब, हम जेआई मुकेश।"

"हाँ, मुकेश बोलिए।"

"जनाब, एक खबर है। आपके किसी खबरी का फोन आया था आपके केबिन में। वह एक आदमी को जानता है, जिसने सुरेश को पिछली शाम को एक चार चक्का में जाते देखा है।"

"कहाँ मिलेगा, अभी हम निकलते हैं?"

"जगह नहीं बताया जनाब, कह रहा था आपसे ही बात करेगा।"

"आ रहे हैं हम चौकी 10 मिनट में।"

एसआई अमित कुमार बुलेट में किक मारकर उसे चालू करता है और पांडे जी के साथ चौकी पहुँचता है। बुलेट से उतरते ही, एसआई झट से अपने केबिन में जाकर खबरी को कॉल करता है।

"हेलो, हम अमित।"

"सर, एक आदमी है, जो सुरेश यादव को शाम 6:00 बजे रामनगर पुल पर देखा है।"

"कहाँ मिलेगा वह आदमी?"

"यहीं रामनगर पुल के बगल में मछली बेचता है। हम भी मछली लेने आए थे, तब उसने यह बताया।"

"ऐसा करो, तुम वहीं रुको। हम तुरंत पहुँच रहे हैं।"

"ठीक है सर।" एसआई हड़बड़ी में टेलीफोन का रीसीवर टेबल पर रखता है और केबिन से बाहर आकर जेआई मुकेश को साथ चलने को कहता है।

"कहाँ जाना है जनाब?"

"चलिए, कुछ पता चला है सुरेश यादव के बारे में।"

"पर यहाँ चौकी में कोई नहीं है।"

"अरे चलिए ना, कांस्टेबल सब सँभाल लेगा आज चौकी। लीजिए, चाबी गाड़ी चालू कीजिए।" एसआई ने चाबी जेआई की तरफ फेंकते हुए कहा।

जेआई चाबी लेकर बुलेट को किक मारकर चालू करता है। पीछे एसआई बैठता है और रामनगर पुल की तरफ रवाना हो जाता है।

"क्या पता चला है, जनाब?" वहाँ से निकलते ही जेआई पूछता है।

"शाम को सुरेश यादव को किसी ने देखा है।" यह सुनते ही जेआई बुलेट और तेज भगाता है। रामनगर पुल पुलिस चौकी से 10 मिनट की दूरी पर था। पुल के पास पहुँचते ही एसआई खबरी से मिलता है।

"वही है सर, यही देखा है सुरेश यादव को।" खबरी उस व्यक्ति को दिखाते हुए एसआई से कहता है।

"क्या नाम है तुम्हारा?" एसआई उस मछली वाले के पास जाकर पूछता है।

"फूलचन सरजी।"

"अच्छा फूलचन, सुरेश यादव को कब देखे थे तुम?"

"सरजी, 6:00 बजे के आसपास जब हम मछली बेच कर जाने लगे थे, तब यहाँ जाम लगा था। तब हम देखे थे सुरेश भैया को एक काली गाड़ी में जाते हुए।"

"गाड़ी कौन सी थी?"

"यह तो हम नहीं जानते, सरजी।"

"गाड़ी बड़ी थी या छोटी?"

"गाड़ी तो बड़ी थी, सरजी।"

"गाड़ी सुरेश चला रहा था क्या?"

"नहीं, सरजी। एक दूसरा आदमी था, उसको हम कभी देखे नहीं हैं।"

"कैसा दिखता था वह आदमी?"

"सरजी ,उसका न चेहरा नहीं देख पाए, चेहरा ढाका हुआ था, वो टोपी और उजला रंग का शर्ट पहना हुआ था।"

"और कुछ जो तुम उसके बारे में बता सकते?"

"नहीं सरजी, हम तो उसको बगल से देखे थे।"

"वह लोग किधर जा रहे थे? पुर्णीया की तरफ या पुर्णीया से बाहर?"

"वह पुर्णीया से बाहर ही जा रहे थे क्योंकि इधर टोल प्लाजा की तरफ जा रहे थे।"

"तुम दावे के साथ कह सकते हो वह सुरेश यादव ही था?" जेआई मुकेश पूछता है।

"हाँ, सरजी, 100 प्रतिशत दावे के साथ।"

"सर, यह सुरेश के मोहल्ले में ही रहता है।" खबरी कहता है।

"हाँ सरजी, हम सुरेश भैया को बचपन से देखते आ रहे हैं।" फूलचन ने बोला।

"मुकेश जी, इसको अपना नंबर लिखकर दीजिए।" एसआई जेआई से कहता है।

"जी, जनाब।" जेआई मुकेश अपनी जेब से कलम और कागज निकाल कर उस पर अपना नंबर लिखकर फूलचन को दे देता है।

"अगर तुम्हें कुछ और याद आए तो इस नंबर पर कॉल करना। ठीक है, फूलचन।" एसआई फूलचन से कहता है।

"ठीक है, सरजी।"

फूलचन से बात करने के बाद, एसआई अमित कुमार और जेआई मुकेश बुलेट पर सवार होकर टोल प्लाजा की ओर रवाना हो गए। टोल प्लाजा पहुंचकर एसआई इधर-उधर नजर दौड़ाता है और देखता है कि कैमरे कहाँ-कहाँ लगे हैं, ताकि गाड़ी में बैठे शख्स का चेहरा साफ-साफ दिख सके।

"शाम 5:00 से 7:00 बजे के बीच जो भी काली गाड़ी यहाँ से गुजरी है, उसमें देखो ये आदमी है क्या?" एसआई एक टोल स्टाफ को सुरेश की फोटो दिखाते हुए बोलते हैं।

"रुकिए सर, देखते हैं।"

वह टोल स्टाफ काफी देर तक उस बीच में गुजरी हुई गाड़ियों पर ध्यान देता है, बारी-बारी से फुटेज देखता है। उसे सुरेश किसी भी गाड़ी में नहीं दिखाई देता।

"सर, ये आदमी तो नहीं दिख रहा है किसी भी गाड़ी में।"

"फिर से सब गाड़ियों को देखो।"

"सर, देख तो लिए हैं।"

"अरे, तुमको क्या बोले नहीं सुना तुमने? पता है ये आदमी कौन है? चंद्रकांत यादव का नाम सुना है?" एसआई गुस्से में सुरेश की तस्वीर दिखाते हुए चिल्लाकर बोलते हैं।

"हाँ सर," स्टाफ धीमी आवाज में बोलता है, सहम कर।

"उसका भांजा है ये, अपहरण हो चुका है इसका, देख अब फिर से।"

"देखते हैं सर।"

"देखो, लेकिन अब बड़ी गाड़ियों में देखो जैसे कि स्कॉर्पियो जैसी कोई गाड़ी, और हमलोगों को भी दिखाओ।"

"ठीक है सर।"

एसआई, जेआई टोल स्टाफ के केबिन में जाते हैं। तीनों काफी देर तक फुटेज को बहुत ही ध्यान से देखते हैं, लेकिन किसी भी गाड़ी में सुरेश यादव नहीं दिखता।

"जब इधर निकला तो गया कहाँ ?" एसआई तनाव में बोलते हैं।

"जनाब, सब गाड़ियों में देखा जाए क्या? हो सकता है गाड़ी बदल लिया हो," जेआई मुकेश ने एसआई से बोला।

"फूलचन जहाँ पर गाड़ी को देखा वहाँ से यहाँ की दूरी बस 800 मीटर है, क्या हीं गाड़ी बदलेगा। फिर भी सब गाड़ियों में देखो, क्या पता कुछ भी हो सकता है।"

"जी सर, देखते हैं।"

तीनों काफी देर तक फुटेज देखते हैं, लेकिन कुछ नहीं मिलता। निराश होकर एसआई अमित कुमार टोल स्टाफ के केबिन से बाहर आ जाता है, और जेआई मुकेश उसके पीछे आता है। एसआई अपनी बुलेट के पास जाकर उसे सहारा देता है, फिर अपनी जेब से सिगरेट की डिब्बी निकालता है। एक सिगरेट निकालकर होठों के बीच जकड़ता है, माचिस से सिगरेट को सुलगाता है और एक सुकून भरा कस लेता है।

"ये मामला सिर दर्द बन चुका है," एसआई फुसफुसाकर बोलता है।

"जनाब, अब क्या करना चाहिए?" जेआई पूछता है।

"पहले तो सिगरेट खत्म करनी चाहिए।"

"हाँ जनाब," जेआई मुस्कुराते हुए कहता है।

"हंसी आ रही आपको महाराज?"

"अरे नहीं जनाब," फिर एसआई भी हंसने लगा। दोनों एक मिनट तक खुलकर हंसे।

"हंस लीजिए क्योंकि अगर ये केस सॉल्व नहीं हुआ तो लोग भी हम पर ऐसे ही हसेंगे फिर हमें रोना पड़ेगा," एसआई कहता है।

जेआई मुकेश चुप हो जाता है, उसके चेहरे पर सन्नाटा छा जाता है। एसआई सिगरेट नीचे फेंकता है और अपने जूते से रोंध कर सिगरेट को बुझाता है, फिर बुलेट पर

सवार होकर दोनों पुलिस चौकी चले जाते हैं। चौकी पहुंचकर एसआई अपने केबिन में जाकर बैठ जाता है और पांडे जी को आवाज लगाता है।

"कुछ कह रहे थे जनाब?"

"स्कूटर लाए हैं अपना?"

"हाँ जनाब।"

"स्कूटर उठाइए, मेरे घर जाइए और मेरा सेलफोन लेकर आइए, रास्ते में आते वक्त पान ले लीजिएगा मेरा नाम बोलकर।"

"ठीक है जनाब।"

"दुकान पता है ना?"

"जी जनाब।"

"और हाँ, मुकेश जी को मेरे केबिन में भेजिए।"

"जी जनाब," बोलकर पांडे जी पैंट संभालते हुए केबिन से बाहर आते हैं और जेआई मुकेश को बताते हैं कि बड़े साहब बुला रहे हैं। जेआई एसआई केबिन में जाता है, एसआई को सलाम करके कुर्सी पर बैठ जाता है। पांडे जी अपना स्कूटर उठाकर एसआई के घर की ओर रवाना हो जाते हैं। एसआई का निजी आवास पुलिस चौकी से 10 मिनट की दूरी पर था।

"सुबह से और कोई खबर तो नहीं मिली है सुरेश के बारे में?" एसआई जेआई मुकेश से पूछता है।

"नहीं जनाब।"

"साला ठोस सुराग छोड़िए, कोई छोटा सा भी सुराग नहीं मिला है, अब क्या करें समझ नहीं आ रहा।" एसआई ने हताश होकर कहा।

कुछ देर बैठे-बैठे एसआई अपने सर पर हाथ फेरता है, जेआई सामने बैठकर एसआई को घूरता रहता है। फिर एसआई के ध्यान में आता है कि क्यों न आईजी साहब को फोन किया जाए। एसआई अपने कुर्सी को खिसकाते हुए टेबल के कोने पर जाता है जहाँ टेलीफोन रखा होता है। एसआई ने टेलीफोन का रीसीवर उठाया और आईजी को कॉल मिलाया।

"हेलो।"

"जय हिंद जनाब, हम एसआई अमित कुमार।"

"हाँ अमित जी, बोलिए, कुछ पता चला?"

"सर, कोई सुराग नहीं मिल रहा, जिस वजह से इस अपहरण को अंजाम दिया गया हो।"

"हाँ तो ढूंढिए।"

"जनाब, अभी एक मछुआरे से मिलकर आ रहे हैं, वो शाम को 6:00 बजे के आसपास सुरेश यादव को रामनगर पुलवा के पास एक काली गाड़ी में देखा था, वो गाड़ी रामनगर टोल प्लाजा की तरफ जा रही थी। टोल प्लाजा पर जाकर जाँच पड़ताल करने के बाद पता चला कि वो गाड़ी टोल प्लाजा क्रॉस ही नहीं की।"

"उससे पहले कोई और रास्ता है, जहाँ से वो गाड़ी निकल सके?"

"नहीं जनाब, कोई रास्ता नहीं है जिसमे गाड़ी पार कर सके|"

"कोई और तरीका होगा न, किसी तरह तो पता लगाना पड़ेगा।"

"जनाब, एक दरख्वास्त है आपसे।"

"हाँ, कहिए।"

"कम से कम और दो-तीन अफसर को और काम पर लगाइए जो सीधे हमको रिपोर्ट करें।"

"ठीक है, हम लगाते हैं लेकिन अमित जी, रिजल्ट चाहिए।"

"जी जनाब, मिलेगा।"

"ठीक है।"

"जय हिंद जनाब।"

अमित कुमार आईजी "बृजकिशोर दुबे" के खास लोगों में से एक था, इसलिए आईजी से जो भी एसआई अमित कुमार बोलता वो मान लेते थे।

थोड़ी देर बाद पांडे जी एसआई का सेलफोन और पान लेकर चौकी पहुँचते हैं। एसआई के केबिन में जाकर पांडे जी एसआई को सेलफोन और पान दे देते हैं। एसआई पांडे जी से चाय मंगवाने को कहता है। पांडे जी केबिन से बाहर आकर छोटू को आवाज लगाकर दो चाय लाने को कहते हैं। थोड़ी देर में छोटू दो चाय लेकर आता है और एसआई के केबिन में जाकर टेबल पर रख देता है।

एसआई फिर से अपनी जेब से सिगरेट की डिब्बी निकालकर सिगरेट सुलगाता है।

"आप भी लेंगे?" जेआई मुकेश की ओर सिगरेट बढ़ाते हुए एसआई पूछता है।

"नहीं जनाब, चाय ही ठीक है मेरे लिए।" जेआई मुकेश चाय खत्म करता है। एसआई चाय और सिगरेट दोनों खत्म करता है फिर पान चबाने लगता है, तभी टेलीफोन की

घंटी बजती है। एसआई कुर्सी खिसकाकर टेलीफोन के पास जाकर कॉल रीसीव करता है।

"हेलो, एसआई अमित कुमार, सहायक थाना से बोल रहे हैं।"

"अमित जी, हम रामगोपाल शर्मा, शनेली थाना से।"

"अरे गोपाल जी, कैसे हैं?"

"ठीक हैं, अमित जी। आईजी साहब का फोन आया था।"

"हाँ, हम ही बोले थे।"

"बताएँ क्या आदेश है।"

"गोपाल जी, आप अपने थाना के अफसर को थोड़ा हमारे थाना मे आने का आदेश दीजीए ना|"

"ठीक है, अमित जी।"

"जितना बन सकेगा हम आपका सहयोग करेंगे, अमित जी।"

"धन्यवाद, गोपाल जी।"

"जय हिंद।"

"जय हिंद।"

एसआई बैठकर सोच में डूब जाता है कि क्या किया जाए, कैसे सुरेश यादव को ढूंढा जाए। तभी जेआई मुकेश के मन में एक विचार आया।

"जनाब, क्यों न हम कॉलेज में जाकर पूछताछ करें।" जेआई एसआई से कहता है।

"उससे क्या होगा?"

"जनाब, सुरेश यादव वहाँ विद्यार्थी रह चुका है, छह साल वहाँ पढ़ाई की है और इतने समय से छात्राध्यक्ष है। अपना सारा दिन कॉलेज में ही बिताता है, उसका दिन वहीं से शुरू होता है और वहीं कॉलेज में ही खत्म होता है। सोचिए वहाँ के लोगों को क्या-क्या पता होगा सुरेश यादव के बारे में।"

"बात तो पते की कर रहे हैं आप, मुकेश जी।"

"तो फिर चलिए जनाब, कॉलेज चलते हैं।"

"हाँ, बिल्कुल। कॉलेज खुल गया होगा कि नहीं?"

"हाँ, जनाब 10:30 बज रहा है।" जेआई अपने घड़ी की तरफ देखकर कहता है।

"चलिए फिर।"

"जी जनाब।" जेआई कुर्सी से उठते हुए बोला।

"एक मिनट रुकिए, गोपाल जी को एक बार फोन कर लेते हैं। आईजी साहब से भी बात कर लेते हैं।"

"ठीक है जनाब, हम बाहर आपका इंतजार करते हैं।"

"ठीक है।"

तभी शनेली थाना से भेजा हुआ जूनियर इंस्पेक्टर और कांस्टेबल एसआई के सामने आकर सलाम करते हैं।

"जेआई रूपेश कुमार रिपोर्टिंग जनाब। ये कांस्टेबल अमरजीत और ये अभिजीत।" जेआई रूपेश ने कहा।

"ये दोनों कांस्टेबल हैं।" एसआई ने अमरजीत और अभिजीत को देखकर कहा।

"हाँ जनाब, इनके पापा की जगह पर इन्हें नौकरी मिली है।" जेआई ने कहा।

"दोनों भाई हैं क्या?"

"नहीं जनाब, बस हमारा नाम एक जैसा है।" अमरजीत ने कहा।

"ओह, चलिए फिर काम पर लगते हैं।"

"जी जनाब, आदेश करें।" जेआई रूपेश कहता है।

"आप तीनों रामनगर टोल प्लाजा वाला मैन रोड चौराहे पे जाइए, जहाँ- जहाँ सीसीटीवी लगा है सबका फुटेज निकलवाएँ और देखिए सुरेश यादव कहाँ से निकला।"

"जी जनाब।" जेआई रूपेश कहता है।

"और हाँ, चौराहे से लेकर टोल प्लाजा तक जितना भी सीसीटीवी है, सबका फुटेज चाहिए हमको। एक-एक गतिविधि की जानकारी चाहिए ।"

"जी जनाब।" जेआई रूपेश कहता है और सलाम करके दोनों कांस्टेबल को लेकर निकल जाता है एसआई के आदेश का पालन करने के लिए।

एसआई अमित कुमार टेबल से अपना कैप उठाकर पहनता है और अपने केबिन से बाहर आता है। वह जेआई मुकेश के डेस्क के पास जाता है, मुकेश कुछ सीसीटीवी फुटेज देख रहा होता है जोकि कॉलेज के पास का था, एक कांस्टेबल ने उसे लाकर दिया था। सुबह से बस इतना ही काम हुआ था। बस कहने के लिए एसआई ने बोल दिया था पूरा जोर लगा दिया है।

"क्या है ये मुकेश जी?"

"जनाब, कॉलेज के पास का सीसीटीवी फुटेज।"

"कुछ मिला इसमें?"

"नहीं जनाब, बस इतना पता चला है कि कल 3:00 बजे कॉलेज कैंपस से सुरेश यादव निकला है, वो भी अपनी बुलेट मोटरसाइकिल से।"

"चलिए अब कॉलेज हीं।" एसआई जेआई मुकेश से कहता है।

"ठीक है जनाब।" जेआई अपना कंप्यूटर बंद करता है, खड़े होते हुए टेबल पर रखे अपने कैप को उठाकर पहनता है। एसआई अपने बुलेट की चाबी जेआई को थमाता है। जेआई किक मारकर बुलेट चालू करता है। एसआई पीछे बैठता है फिर दोनों कॉलेज के लिए रवाना हो जाते हैं। लगभग 5 मिनट की दूरी पर कॉलेज था।

थोड़ी देर बाद दोनों कॉलेज के मेन गेट के सामने पहुँचते हैं, वहाँ का दृश्य देखकर एसआई चौंक गया। कॉलेज स्टूडेंट्स धरना देने वाले थे। इतनी बड़ी भीड़ को देखकर एसआई और जेआई वहीं ठहरे रहे। जब विद्यार्थियों की पूरी पलटन वहाँ से गुजर गई, तब दोनों ने कॉलेज कैंपस में प्रवेश किया।

अमित कुमार को लगा कि सुरेश यादव कॉलेज के डीन का बहुत खास हो सकता है , इसलिए अमित कुमार ने पहले कॉलेज के डीन से ही बात करना उचित समझा। अमित कुमार को जानकारी नहीं थी कि डीन का ऑफिस किधर है, तो उसने अगल-बगल देखा तो उसे एक सफाई कर्मचारी दिखा।

"डीन का ऑफिस कहाँ है?" एसआई ने सफाई कर्मचारी से पूछा।

"दूसरी मंजिल पर।" सफाई कर्मचारी ने जवाब दिया।

फिर दोनों दूसरी मंजिल पर चले जाते हैं। जैसे ही सीढ़ियाँ खत्म होती हैं, सामने डीन का ऑफिस एसआई को दिखता है। दोनों जाकर डीन के ऑफिस में बैठ जाते हैं। ऑफिस में डीन फिलहाल उपस्थित नहीं थे। थोड़ी देर इंतजार करने के बाद डीन ऑफिस में प्रस्थान करते हैं।

"नमस्ते एसआई साहब।" डीन एसआई से कहता है।

"नमस्ते सर, कैसे हैं?"

"ठीक हैं। आप बताइए?"

"हम भी ठीक हैं। कॉलेज देर से आते हैं आप क्या?"

"नहीं एसआई साहब, हम तो समय से ही आते हैं, दिक्कत ये हो गया है कि हमें बवासीर हो गया है, दवाई चल रही है। हमारी धर्मपत्नी कहती है, खाना भी यहाँ से खाकर जाओ, बाहर का मत खाना और दवाई भी मेरे सामने खाओ। इसी चक्कर में देर हो जाती है।"

"अब आराम है ना।"

"हाँ, थोड़ा तो है।" डीन ने बैठते हुए कहा।

"फिर तो बढ़िया है सर।"

"और बताइए, कैसे आना हुआ?"

"जैसे कि आपको पता होगा सुरेश यादव...।"

"हाँ, उसका अपहरण हो गया है, सुबह से यही खबर चल रही है टीवी पर।" डीन ने एसआई की बात को काटते हुए कहा।

"उसी के बारे में थोड़ी जानकारी चाहिए थी।"

"क्या बात कर रहे हैं एसआई साहब, उसके अपहरण के बारे में हम क्या जानकारी देंगे आपको। मेरा इससे थोड़े कोई लेना देना है।"

"नहीं सर, आप गलत समझ रहे हैं। उसकी निजी जिंदगी के बारे में जानना था कि वह कैसे व्यक्ति हैं, उनकी दुश्मनी किन लोगों से है। आपसे खास हैं ना सुरेश जी, इसलिए सोचा आपसे एक बार बात कर लें।"

"मेरा कौन सा खास है सुरेश, वह तो विधायक जी के कारण उसका थोड़ा महत्व देते थे।"

"ओह, इंसान कैसा है सुरेश?"

"एक नंबर का लौंडियाबाज है। अपने मामा के दम पर बहुत पाप किया है।"

"क्या? नहीं समझे सर?"

"लड़कियों के साथ बहुत गलत व्यवहार था उसका।"

"आप नजरअंदाज कर देते थे, इन चीजों को?"

"मजबूरी, हमारे भी बच्चे हैं, परिवार है। सबकी सलामती तो जरूरी है ना एसआई साहब।"

"हाँ, वो तो है।" एक विराम लेकर, "सुरेश की किसी से दुश्मनी, जिसके बारे में आपको पता हो?"

"एक था शंकुर यादव करके छात्र नेता, दोनों में काफी तकरार चलता था।"

"वो कहाँ मिलेगा, कोई जानकारी है आपको सर?"

"वो अब कहाँ मिलेगा आपको।"

"क्या... सर, समझे नहीं।"

"उसका तो हत्या हो गया ना चार वर्ष पहले। हत्या के इल्जाम में दो लड़का सजा भी काट रहे हैं।"

"ओह," एक विराम लेकर, "अच्छा, कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे सुरेश यादव के बारे में ज्यादा जानकारी हो?"

"हाँ, एक है, हमारे कॉलेज का ही कर्मचारी है अमरेश, कॉलेज का कर्मचारी कम सुरेश यादव का पिछलग्गू ज्यादा है, सारा दिन सुरेश के ही आगे-पीछे लगा रहता है।"

"उससे अगर बात हो सकती है तो बुलवाएँ ना ज़रा।"

"जी बुलवाते हैं।" डीन अपना टेलीफोन उठाते हैं और कोई एक नंबर दबाते हैं। नीचे स्टाफ रूम में कोई फोन उठाता है, उससे डीन अमरेश को अपने ऑफिस में भेजने को कहते हैं और फिर टेलीफोन रख देते हैं। थोड़ी ही देर में अमरेश डीन के केबिन में आता है।

"आओ अमरेश, एसआई साहब कुछ पूछताछ करने आए हुए हैं।"

"नमस्ते साहब।" अमरेश वहीं बगल में खड़े होकर बोलता है।

"नमस्ते। अमरेश जी, हम सहायक थाना के सीनियर इंस्पेक्टर अमित कुमार हैं और ये जूनियर इंस्पेक्टर मुकेश हैं।

"जी साहब।"

"सुना है आप सुरेश जी के साथ हमेशा रहते थे?"

"जी साहब, सुरेश भैया जब तक कॉलेज कैंपस में रहते हैं, हम उन्हीं के आस-पास रहते हैं।"

"कल कब तक थे, आप उनके साथ?"

"साहब, लगभग 3:00 बजे तक। उसके बाद सुरेश भैया को कहीं जाना था, तो वह निकल गए।"

"कहाँ के लिए निकले थे, आपको पता है?"

"नहीं साहब, उतना तो नहीं पता है।"

"अच्छा अमरेश जी, एक बात बताइए, सुरेश जी रोज कहाँ-कहाँ जाया करते थे?" जेआई मुकेश ने पूछा।

"कॉलेज में शाम तक रहते थे, उसके बाद बगल वाली टपरी पे आधा घंटा रोज बैठा करते थे, फिर अपने मामा के यहाँ चले जाया करते थे।"

"और कोई जगह हो जहाँ जाते हों?"

"सर, कभी-कभाल वह अपने पानी प्लांट पे जाया करते थे।"

"किधर है पानी प्लांट?"

"यहाँ से 6 से 7 किलोमीटर दूर है, उधर ही उनका गाँव भी है, जमीन सब भी है उधर उनका।"

"किधर पड़ता है ये, गाँव का नाम क्या है?" एसआई पूछता है।

"सर, गाँव का नाम तो नहीं पता लेकिन हाँ, वह बस्ती ऋषिदेव लोगों की है।"
तभी एसआई अमित कुमार का सेलफोन बजता है। एसआई अपने जेब से सेलफोन निकाल कर देखता है तो पुर्णीया एसपी "इरशाद शेख" का कॉल आ रहा होता है।

"जय हिंद जनाब।" एसआई कॉल रीसीव करके बोलता है।

"अमित जी, आपके चौकी के बाहर क्या हो रहा है?"

"काम में ही लगे हुए हैं जनाब।"

"अरे आप तो सत्यानाश कीजिएगा सब कुछ का, टीवी ऑन करके देखिए।" एसपी सहाब गुस्से में कहते हैं।

"जी जनाब।"
एसपी सहाब कॉल डिस्कनेक्ट कर देते हैं। एसआई वहीं टेबल पर रखे रिमोट को उठाकर टीवी ऑन करता है। टीवी ऑन करते ही, एसआई समेत जो भी उस वक्त उस कमरे में उपस्थित थे, चौंक जाते हैं। न्यूज चैनल पर दिखाया जा रहा था कि लगभग 300 कॉलेज स्टूडेंट्स सहायक थाना के सामने धरना पर बैठे हुए हैं। जब तक एसआई इस बात को मान पाते कि उनके पुलिस चौकी के बाहर ये सब हो रहा है, तब तक एसपी इरशाद शेख न्यूज चैनल पर लाइव थे।

"मैं पुर्णीया के एसपी इरशाद शेख, आपसे वादा करता हूँ कि सुरेश यादव शाम तक आपके बीच सुरक्षित होगा। हमारे अधिकारी जांच में जुटे हुए हैं। इस समय से, मैं वह जिम्मेदारी लेता हूँ जो सहायक थाना प्रभारी को सौंपा गया था। सुरेश यादव को सुरक्षित घर लाने की जिम्मेदारी मेरी है। पुर्णीया पुलिस आपको निराश नहीं करेगी। मुझ पर विश्वास रखें; एसपी इरशाद शेख ने कभी इस शहर के लोगों की उम्मीदें नहीं तोड़ी हैं, और आज भी नहीं तोड़ेंगे। बस, शांति बनाए रखें और पुलिस फोर्स को अपना काम करने दें। धन्यवाद!"

टीवी पर यह देखते ही अमित कुमार चिंता में डूब गया कि उसके हाथ से यह केस चला गया। एसआई अमित कुमार सदमे में ही था कि तभी टीवी पर उसे आईजी "बृजकिशोर दुबे" की आवाज सुनाई दी।
"एक-एक करके सवाल कीजिए ना।" आईजी न्यूज रिपोर्टर से कह रहे थे।

अमित कुमार की नजर टीवी पर गड़ी की गड़ी रह गई। वह देख पा रहा था कि 5-6 रिपोर्टर आईजी से सवाल पूछने के लिए खड़े हैं। अमित कुमार बस इस बात का इंतजार कर रहा था कि आईजी कह दें कि अमित कुमार इस केस को सॉल्व कर देंगे।

"सर, क्या पुलिस कोई सुराग का पता लगा पाई है, सुरेश यादव के अपहरण के मामले में?" एक रिपोर्टर ने आईजी से पूछा।

"देखिए, पुलिस अपने काम में लगी हुई है, बहुत चीजों का पता लगा लिया गया है, पुलिस काम बखूबी कर रही है।"

"क्या पता लगा पाई पुलिस, सर, जनता को भी बताएं?" दूसरे रिपोर्टर ने पूछा।

"सर, जैसा कि एसआई अमित कुमार को इस केस से हटा दिया गया है, क्या उनसे यह मामला संभल नहीं रहा था?" पहले रिपोर्टर ने पूछा।

"देखिए, किसी को भी हटाया नहीं गया है, बस एसपी अपना काम कर रहे हैं, एसआई अपना काम कर रहे हैं।"

"सर, क्या इसको एसआई अमित कुमार की नाकामी समझा जाए?" आईजी इस प्रश्न को नजरअंदाज करते हुए वहाँ से निकल जाते हैं।

अमित कुमार चिंता में डूबा हुआ था, जैसे उसे घुटन हो रही हो। वह नजर झुकाते हुए डीन के ऑफिस से बाहर निकलते हैं और बुलेट के पास आ जाते हैं, पीछे-पीछे जेआई मुकेश भी आते हैं। एसआई बुलेट से टिककर खड़े होते हैं, अपनी जेब से सिगरेट की डिब्बी निकालते हैं, एक सिगरेट निकालकर होठों के बीच लगाते हैं और पिछली जेब से माचिस निकालकर सिगरेट सुलगाते हैं। एक लंबा कश लेते हैं। इसी तरह एसआई लगातार दो सिगरेट पीते हैं। जेआई मुकेश कई बार धीमे स्वर में उन्हें पुकारते हैं, लेकिन एसआई ने कोई जवाब नहीं दिया।

एसआई ने जेआई को इशारा किया, 'चलिये, चलते हैं।' जेआई अपनी जेब से बुलेट की चाबी निकालते हैं, चाबी लगाकर किक मारते हैं और बुलेट चालू कर देते हैं। जैसे ही एसआई बुलेट पर बैठने वाले थे, उनका सेलफोन बजता है। एसआई अपनी जेब से फोन निकालते हैं और देखते हैं कि कॉल एसपी इरशाद शेख का आ रहा है

"जय हिंद जनाब।" एसआई कॉल रीसीव करके कहता है।

"कहाँ पर हैं आप?" एसपी सहाब पूछते हैं।

"जनाब, कॉलेज आए थे पूछताछ करने।"

"आप पूछताछ करते रहिएगा बस, अपने जूनियर इंस्पेक्टर और शनेली थाना से आए अफसर को मेरे ऑफिस भेजिए फौरन।"

"जी जनाब, भेजते हैं।"

"और हाँ , जितनी भी जानकारी इकट्ठा की है, वो भी भिजवाइए।"

"जी जनाब।"

कॉल डिस्कनेक्ट होने के बाद एसआई अपने जेब में सेलफोन को रखते हुए बुलेट पर जेआई के पीछे बैठते हैं, फिर दोनों पुलिस चौकी के लिए रवाना हो जाते हैं। पुलिस चौकी पहुँचकर रामगोपाल जी को फोन करके एसआई अमित कुमार जेआई रूपेश का नंबर लेता है। उसके बाद जेआई रूपेश को एसआई अमित कुमार फोन करता है और उन्हें इकट्ठा की गई जानकारी सहित एसपी ऑफिस जाने को कहता है। उसके बाद सिर पर हाथ रखकर हाथ को टेबल पर टिकाकर सिर नीचे करके अमित कुमार बैठ जाते हैं। वह काफी तनाव में था, उसे सब अजीब सा लग रहा था। तभी उसे अचानक ध्यान आया कि एसपी इरशाद शेख ने जेआई मुकेश को भी एसपी ऑफिस भेजने को कहा था। ध्यान में आते ही फौरन जेआई को अपने केबिन में बुलवाता है।

"जी जनाब।" जेआई मुकेश सलाम करते हुए कहते हैं।

"वो आपको भी एसपी साहब ने अपने ऑफिस बुलाया है। आप जो भी जानकारी इकट्ठा हुई है, वह लेकर उनके ऑफिस जाएं।"

"जी जनाब।"

"वो कॉलेज वाला सीसीटीवी फुटेज और सुरेश के माता-पिता से जो बात हुई, उसकी रिकॉर्डिंग, और वो डीन से बातचीत वाली भी लेते ही जाएं।"

"जी जनाब।"

"ठीक है, जाइए, ढूंढिए अब आप लोग सुरेश को।" एसआई काफी निराश होकर बोला।

"एक बात बोलें जनाब?"

"हाँ, बोलिए।"

"आप ना, निराश मत होइए। अगर आपको मौका मिलता तो आप सफलता पूर्वक इस मामले को निपटा देते।"

"हाँ, पर मिला नहीं ना।"

"जनाब, वो तो है, लेकिन हो सकता है, आपके ऊपर से कोई बला टल गई हो।"

"मुकेश जी, आप बड़े भोले आदमी हैं, लेकिन हर चीज को सकारात्मक तरीके से लेते हैं।"

"जनाब, मेरी माँ कहा करती थी, जब कोई चीज़ तुम्हारे हाथ से निकल जाए तो समझना वह चीज़ तुम्हारे लिए थी ही नहीं। क्या पता वह तुम्हारे ऊपर मुसीबत बन सकती हो, इसलिए उसे भूल जाओ, किसी और के लिए उसे मुसीबत बनने दो।"

"आपकी माँ बहुत अच्छी बातें बताती हैं मुकेश जी।"

"हाँ, वो तो है जनाब।"

"घर जाकर माँ को मेरा प्रणाम कहिएगा। अभी आप जाइए एसपी साहब के ऑफिस नहीं तो वो डांट लगा देंगे।"

"जी जनाब, निकल रहे हैं।" जेआई मुकेश सलाम ठोकते हुए एसआई के केबिन से बाहर आते हैं और अपने डेस्क पर लौटते हैं। वह सीसीटीवी फुटेज को एक पेनड्राइव में कॉपी करते हैं और अपने बगल में रखे यंत्र को उठाते हैं, जिसमें सुरेश के माता-पिता, डीन, और उसके कर्मचारियों की बातचीत रिकॉर्ड है।यंत्र को अपनी जेब में रखते हुए, वह मोटरसाइकिल पर बैठकर एसपी ऑफिस के लिए रवाना हो जाते हैं।

****

एसपी ऑफिस के बाहर मीडिया की भीड़ थी। कई चैनल लाइव कवरेज कर रहे थे, जोकि कुछ मिर्च-मसाला डालकर प्रसारण कर रहे थे। चैनल वाले अपडेट का इंतजार कर रहे थे ताकि ब्रेकिंग न्यूज चला सकें। जैसे ही कोई अधिकारी या कांस्टेबल बाहर आता, मीडिया वाले दौड़कर उनसे खबरें या गुप्त सूचनाएँ प्राप्त करने की कोशिश करते।

एसपी इरशाद शेख ऑफिस में बैठे चाय पी रहे थे और टीवी पर न्यूज देख रहे थे, जिसमें वही पुरानी बातें चल रही थीं: 'क्या पुर्णीया पुलिस सुरेश यादव को ढूंढ पाएगी या नाकाम हो जाएगी' आदि। एसपी बिना रुचि दिखाए चाय की चुस्की ले रहे थे। खिड़की के पास एसपी सहाब का बॉडीगार्ड शंकर फोन पर बात कर रहा था, जो एक छह फीट का मजबूत आदमी था, जैसा कि बॉडीगार्ड होना चाहिए।

"अरे, अभी तक तुमसे एक काम नहीं हो पाया है, वक्त बीतता जा रहा है। जल्दी से पता करो और कोई खबर दो।" शंकर फोन पर किसी से बोल रहा था। कॉल डिस्कनेक्ट होने पर, सेलफोन को अपने जेब में रखते हुए शंकर एसपी के निकट आता है।

"जनाब, ये खबरी कोई काम का नहीं है, अभी तक कुछ भी पता नहीं लगा पाया है।" शंकर एसपी सहाब से कहता है।

"इंतजार करो शंकर, सब्र रखो।" एक विराम लेकर, "अच्छा वो लोहिया नगर वाला खबरी कोई खबर दिया है क्या?"

"उसका नंबर ही बंद आ रहा है जनाब।"

"दूसरा नंबर भी था ना उसका।"

"दोनों बंद हैं जनाब।"

"हर बार का इसका यही है, जब जरूरत रहती है, ये गायब हो जाता है।"

तभी एसपी के ऑफिस में जेआई रूपेश कांस्टेबल अमरजीत और अभिजीत के साथ मीडिया वालों के बीच से उन्हें नजरअंदाज करते हुए पहुँचता है।

"जय हिंद जनाब, जूनियर इंस्पेक्टर रूपेश शनेली थाना से और ये कांस्टेबल अमरजीत और अभिजीत।" जेआई रूपेश सलाम करते हुए परिचय देता है, साथ ही दोनों कांस्टेबल भी एसपी को सलाम करता है।

"आइए, आप लोगों का ही इंतजार हो रहा था। पेश कीजिए, क्या जानकारी इकट्ठा किए हैं ?"

"जनाब, ये रहा रामनगर टोल प्लाजा जाने वाली सड़क, जहाँ से निकलती है, उसी चौराहे का सीसीटीवी फुटेज।" जेआई एक पेनड्राइव टेबल पर रखते हुए कहता है।

"बस एक सीसीटीवी फुटेज लेकर आए हैं आप लोग?" एसपी गुस्से भरी नजरों से जेआई की तरफ देखकर कहते हैं।

"नहीं जनाब, बाकी और भी है।" जेआई दूसरा पेनड्राइव टेबल पर रखते हुए कहता है।

"इसमें भी एक ही फुटेज होगा?"

"नहीं जनाब, इसमें चौराहे से लेकर टोल प्लाजा तक का सीसीटीवी फुटेज है।"

"ये हुई ना बात।"

तभी जेआई मुकेश वहाँ पहुँचता है। मीडिया वाले उसे देखकर दौड़ पड़ते हैं, क्योंकि मुकेश उस सहायक थाना के जूनियर इंस्पेक्टर थे जहाँ रिपोर्ट दर्ज की गई थी। हालांकि, जेआई मुकेश किसी तरह मीडिया को नजरअंदाज करते हुए सीधे एसपी सहाब के ऑफिस में पहुँच जाते हैं।

"जय हिंद जनाब! जेआई मुकेश सहायक थाना से।" जेआई मुकेश सलाम करते हुए अपना परिचय देता है।

"वाह, क्या नाम है आप लोगों का, रूपेश, मुकेश, अमरजीत, अभिजीत।" एसपी ने मुस्कुराते हुए कहा।

यह बात सुनकर चारों के चेहरे पर मुस्कान आ जाती है, लेकिन एसपी सहाब के सामने वे खुलकर मुस्कुरा नहीं पा रहे थे।

"अच्छा, बताइए मुकेश जी, आप क्या लेकर आए हैं? आपके एसआई साहब तो पास हो गए। आप ही कुछ बताइए।"

"जनाब, यह है कॉलेज के मेन गेट के पास का सीसीटीवी फुटेज जिसमें सुरेश यादव जाता हुआ दिख रहा है।" जेआई मुकेश एक पेनड्राइव टेबल पर रखते हुए कहता है।

"बस इतना ही मिला सुबह से आपको?"

"जनाब, इसमें सुरेश यादव के माता-पिता से की गई बातचीत की रिकॉर्डिंग है और कॉलेज के डीन की भी…।"

"और कुछ है जो काम का हो कि ऐसे बैठकर सबकी रिकॉर्डिंग सुनते रहेंगे?" एसपी सहाब ने गुस्से भरी नजरों से जेआई मुकेश को देखते हुए कहा।

"जनाब, एक कर्मचारी की रिकॉर्डिंग भी है, जो सुरेश यादव का काफी करीबी है, सारा दिन उसके ही आगे-पीछे रहता है।" एक यंत्र टेबल पर रखते हुए कहा।

तभी एसपी सहाब का टेलीफोन बजने लगता है, शंकर जाकर कॉल रीसीव करता है।

"हेलो, एसपी ऑफिस पुर्णीया ।"

"हम चंद्रकांत यादव बोल रहे हैं।"

"नमस्कार सर।"

"नमस्कार, एसपी साहब कहाँ हैं?"

"एक मिनट सर, बात करवाते हैं।"

"जल्दी करवाइए।"

"जनाब, विधायक चंद्रकांत यादव हैं, लाइन पर आपसे बात करना चाहते हैं।" शंकर फुसफुसाते हुए एसपी सहाब से कहता है।

"अच्छा, लाओ इधर।" एसपी सहाब रीसीवर लेते हैं।

"नमस्कार, विधायक साहब।"

"हाँ हाँ.. वो मेरा भांजा आज घर पे होना चाहिए, याद है ना? भाषण तो तगड़ा दिए थे टीवी पे।" चंद्रकांत यादव ताना मारते हुए एसपी सहाब से कहता है।

"हाँ सर, याद है, आप फिक्र ना करें, हम सुरेश जी को कुछ घंटों में ढूंढ लेंगे।"

"सो देखते हैं, बस यही याद दिलाने के लिए फोन किया थे।"

"आप फिक्र ना करें सर…।"

"हम तो नहीं करेंगे, लेकिन आप अपना काम सही से नहीं करेंगे तो फिक्र करने की जरूरत आप लोगों को है।"

"जी सर, ध्यान रखेंगे।"

"ठीक है।"

"लगाओ शंकर, फुटेज लगाओ कंप्यूटर पर, देखते हैं क्या सुराग मिल सकता है।" एसपी सहाब ने शंकर से कहा।

"जी जनाब।" बोलकर शंकर टेबल पर से पेनड्राइव उठाकर कंप्यूटर में लगाने लगता है।

"कौन सा फुटेज है इसमें?"

"जनाब, चौराहे से लेकर टोल प्लाजा तक का।" जेआई रूपेश जवाब देता है।

"नहीं, ये रहने दो, कॉलेज वाला लगाओ पहले।"

"जी जनाब।" बोलकर शंकर दूसरा पेनड्राइव उठाकर कंप्यूटर में लगाता है और फुटेज को प्ले करता है।

"दोपहर 2:30 बजे के बाद प्ले कीजिएगा शंकर सहाब, उसके बाद ही सुरेश यादव वहाँ से निकला था।" जेआई मुकेश शंकर से कहता है।

"हाँ, लगाओ फिर 2:30 बजे से ही।" एसपी सहाब शंकर से कहते हैं।
शंकर दोपहर के 2:30 बजे से फुटेज प्ले करता है।

"अरे आप लोग भी आइए ना बगल में, आप लोग भी थोड़ा ध्यान से देखिएगा, काम आसान हो जाएगा।" एसपी सहाब वहाँ उपस्थित सभी अफसरों से कहते हैं।

सभी अफसर एसपी इरशाद शेख के बगल में खड़े हो जाते हैं। शंकर फुटेज प्ले करता है और वहीं खड़ा होकर देखने लगता है। एसपी सहाब अपनी कुर्सी पर बैठे हुए फुटेज पर ध्यान लगाए हुए होते हैं, और अन्य अफसर भी ध्यानपूर्वक फुटेज देख रहे होते हैं, डर के मारे कि कहीं कोई महत्वपूर्ण बात छूट न जाए जो एसपी सहाब ने देखी हो।

थोड़ी देर फुटेज देखने के बाद, 3 बजकर 1 मिनट पर सुरेश यादव भूरे रंग की टी-शर्ट, सफेद रंग की पैंट और सफेद रंग के जूते पहने कॉलेज कैंपस से बाहर निकलते हुए दिखाई देता है। वह अपनी बुलेट मोटरसाइकिल के पास आकर पैंट की बाईं जेब से सिगरेट का डिब्बा और लाइटर निकालता है। डिब्बे से एक सिगरेट निकालकर, लाइटर जलाकर सिगरेट सुलगाता है। सिगरेट के चार कश लगाने के बाद सुरेश का सेलफोन बजता है। सुरेश अपनी दाहिनी जेब से सेलफोन निकालता है और लगभग 30 सेकंड तक बात करता है। इसके बाद वह एक और कश लगाता है और सिगरेट को नीचे फेंककर अपने जूते से मसल देता है। फिर, वह अपनी बुलेट पर बैठता है, किक मारकर उसे चालू करता है और वहाँ से चला जाता है। एसपी सहाब उस फुटेज को बंद कर देते हैं।

"मोटरसाइकिल पर बैठते वक्त चिंतित लग रहा था ना?" एसपी सहाब वहाँ उपस्थित सभी से पूछते हैं।

"हाँ जनाब, चिंतित तो लग रहा था।" शंकर कहता है।

"एसआई अमित बता रहे थे कि इसको कार में देखा गया है शाम 6:00 बजे रामनगर पुलवा के पास। ये कार में कब बैठा?" एसपी सहाब सिर पे हाथ फेरते हुए कहते हैं।

"जनाब, चौराहा वाला फुटेज देखिए ना।" जेआई रूपेश एसपी से कहता है।

"लगाओ शंकर, चौराहा वाला फुटेज।"

"जी जनाब।" शंकर उस पेनड्राइव को कंप्यूटर से खोलकर टेबल पर रखता है।

"चौराहा वाला कौन सा है?" शंकर जेआई रूपेश से पूछता है।

"ये वाला।" जेआई रूपेश पेनड्राइव उठाकर शंकर के हाथ में देते हुए कहता है।

शंकर पेनड्राइव लेकर कंप्यूटर में लगाता है और फुटेज प्ले करता है। एक काले रंग की स्कॉर्पियो दिखती है जिसमें सुरेश यादव तनाव में बैठा होता है। ड्राइविंग सीट पर कोई उजले रंग का शर्ट पहने हुए, साथ में मास्क और टोपी भी लगाए हुए गाड़ी चला रहा था।

"ये दूसरा आदमी कौन है?"

"इसका तो चेहरा ही नहीं पता चल रहा जनाब।" शंकर कहता है।

"हाँ , आप लोगों को कुछ अजीब दिखा?" एसपी सहाब सभी से पूछते हैं।

"नहीं जनाब, लेकिन परेशान दिख रहा है।"

"परेशान तो दिख रहा है। एक विराम लेकर "चौराहा से पहले और कॉलेज के बीच में कोई सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है क्या?" एसपी सहाब पूछते हैं।

"नहीं जनाब, पूरे शहर में सिर्फ मुख्य-मुख्य स्थान पर कैमरा लगे हुए हैं।" जेआई मुकेश एसपी सहाब से कहता है।

"अच्छा, इसका गाड़ी नंबर नहीं दिखा किसी भी कैमरा में?"

"जी जनाब, अगला फुटेज में है।" जेआई रूपेश एसपी सहाब से कहता है।

"लगाओ शंकर, अगला फुटेज।"

शंकर अगला फुटेज प्ले करता है। उस फुटेज में गाड़ी पीछे से जाती हुई दिखाई देती है।

"रोको-रोको।" एसपी सहाब सहाब हड़बड़ा कर बोलते हैं।

शंकर फुटेज को वहीं पर रोक देता है।

"थोड़ा पीछे करो।"

"जी जनाब।" शंकर पीछे करते हुए बोलता है।

"रोको, रोको… जूम करो थोड़ा।"

शंकर फुटेज को जूम करता है। सामने कंप्यूटर स्क्रीन पर गाड़ी का नंबर साफ दिख रहा था (BR38X40656)।

"लिखिए रूपेश जी, गाड़ी नंबर लिखिए।"

"जी जनाब, लिख रहे हैं।"

जेआई रूपेश टेबल पर रखे कागज कलम उठाता है और गाड़ी नंबर लिख लेता है।

"लिख लिए?"

"जी जनाब।"

"शंकर, आरटीओ से पता करो ये गाड़ी किसके नाम पर रजिस्टर्ड है।"

"जी जनाब, पता करते हैं।" बोलकर शंकर खिड़की के पास जाकर आरटीओ में फोन लगाता है। गाड़ी नंबर बता कर गाड़ी के मालिक के बारे में जानकारी देने को कहता है।

"अच्छा मुकेश जी, एफआईआर में तो सुरेश यादव का नंबर होगा ना?" एसपी सहाब पूछते हैं।

"हाँ जनाब।"

"एफआईआर कॉपी मंगवाइए थाना से जल्दी, उसके फोन नंबर से पता चल जाएगा वो किससे बात कर रहा था, उसका लोकेशन भी पता चल जाएगा।"

"ऐसा मुमकिन है जनाब?" जेआई मुकेश एसपी सहाब से पूछता है।

"अरे हाँ जी, आप मंगवाइए जल्दी, पहले मेरे दिमाग में ये आया ही नहीं।"

"जी जनाब, मंगवाते हैं।" बोलकर जेआई मुकेश सहायक थाना फोन लगाते हैं।

"हेलो अमित साहब।" जेआई मुकेश फोन पर बोलता है।

"हाँ , कौन?" एसआई अमित कुमार पूछता है।

"हम जेआई मुकेश।"

"हाँ मुकेश जी, बोलिए।"

"जनाब, वो सुरेश यादव का एफआईआर कॉपी फैक्स कर दीजिए ना, एसपी साहब बोले हैं भेजने।"

"फैक्स मशीन तो खराब है ना मुकेश।"

"हाँ जनाब, ये तो भूल ही गए थे। वो एफआईआर में सुरेश यादव का फोन नंबर का भी वर्णन है ना। थोड़ा लिखवा देते ना, एसपी साहब उसके सेलफोन का लोकेशन पता करवाएंगे।"

"ऐसा हो सकता है अभी?"

"जनाब, हमको भी अभी हीं पता चला है।"

"वाह, ये तो बढ़िया है, रूकिए लिखवाते हैं।"

"जी जनाब, लिखवाइए।" जेआई मुकेश वहीं टेबल पर से कलम और कागज उठाता है, नंबर लिखने के लिए।

"लिखिए।"

"जी, बोलिए जनाब।"

"95400101500, लिखें।"

"हाँ जनाब।"

"ठीक है फिर…।" एसआई कुछ बोलना चाहा पर बोल नहीं पाया।

"जय हिंद जनाब।"

"जय हिंद।"

जेआई मुकेश नंबर लिखा हुआ कागज एसपी सहाब की ओर बढ़ाता है। एसपी सहाब नंबर को एक बार देखते हैं, उन्हे समझ नहीं आ रहा था कि ये किस कंपनी का नंबर है।

"95 से किस कंपनी का नंबर शुरू होता है?" एसपी सहाब वहाँ उपस्थित सभी अफसर से पूछते हैं।

"जनाब, एयरटेल।" शंकर जवाब देता है।

"पक्का ना।"

"हाँ जनाब, पक्का।"

एसपी सहाब कुर्सी खिसका कर टेलीफोन के पास जाते हैं और एयरटेल कस्टमर केयर में कॉल लगाते हैं और बताते है कि वो पुर्णीया एसपी इरशाद सेख बोल रहे हैं। इस शहर में एक अपहरण हुआ है, उन्हे एक नंबर की कॉल डिटेल्स और लोकेशन चाहिए। आगे से एसपी सहाब को बोला जाता है आधा घंटा इंतजार करने के लिए। आधे घंटे में वो फैक्स कर देंगे।

तभी आरटीओ से एक फैक्स आता है जिसमें गाड़ी नंबर BR38X40656 की सारी जानकारी होती है। फैक्स देखने के बाद, एसपी सहाब एसआई अमित कुमार को कॉल लगाते हैं।

"हेलो अमित जी।"

"जय हिंद जनाब।"

"जय हिंद, एक काम कीजिए, लोहिया नगर जाइए और जुल्फिकार अहमद नाम का व्यक्ति को चौकी लेकर आइए, उससे पूछताछ करना है। पता आपको मैसेज कर रहे हैं, जल्दी उठाकर ले आइए उसको।"

"ठीक है जनाब।"

"चौकी में कांस्टेबल सब हैं ना?"

"जी, दो कांस्टेबल हैं।"

"ऐसा कीजिए, दोनों कांस्टेबल को चौकी में हीं रहने दीजिए। हम इधर से दो अफसर भेजते हैं, आप ड्राइवर को लेकर निकलिए।"

"ठीक है जनाब। जय हिंद।"

"जय हिंद।"

एसपी सहाब जेआई रूपेश और कांस्टेबल अमरजीत को भी लोहिया नगर जाने को कहते हैं । एसपी सहाब के आदेश पर दोनों लोहिया नगर के लिए निकल जाते हैं। एसपी सहाब एसआई को जुल्फिकार अहमद का पता मैसेज करते हैं और वहीं अपने ऑफिस में बैठकर एयरटेल कंपनी से फैक्स के आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे होते हैं।

****

एसआई करीब 20 मिनट बाद लोहिया नगर पहुँचता है। वह एसपी सहाब के बताए हुए पते को ढूंढ रहा होता है। तभी एसआई का सेलफोन बजता है। एसआई अपने जेब से सेलफोन निकालता है और कॉल रीसीव है।

"जय हिंद जनाब। जेआई रूपेश बोल रहे हैं। आप कहाँ हैं?"

"लोहिया नगर में।"

"हम लोग भी यहीं लोहिया नगर में ही हैं।"

"मस्जिद के पास आइए।"

"ठीक है जनाब।"

करीब 2 मिनट के अंदर जेआई और कांस्टेबल एसआई के जिप्सी के पास पहुंचते हैं।

"जिप्सी के पीछे-पीछे आइए।" एसआई बोलत है।

"ठीक है जनाब।"

ड्राइवर जिप्सी चालू करता है और आगे बढ़ने लगता है। जिप्सी के पीछे-पीछे जेआई और कांस्टेबल मोटरसाइकिल से जा रहे थे। करीब 5 मिनट बाद एसपी के बताए हुए पते पर वे लोग पहुंच जाते हैं।

"मौलवी साहब, जुल्फिकार अहमद का घर कहाँ है?" वहीं खड़े एक मौलवी से एसआई पूछता है।

"वो सामने वाला घर है साहब।"

मौलवी के बोलने की हीं देरी थी। जैसे ही मौलवी जुल्फिकार अहमद का घर दिखाता है, फटाफट सभी गाड़ी से उतरते हैं और एसआई जाकर जुल्फिकार अहमद के घर का दरवाजा पीटता है। अंदर से एक 25 वर्ष की औरत ने आकर दरवाजा खोला।

"जुल्फिकार है घर में?" एसआई उस औरत से पूछता है।

"नहीं साहब, वो तो बाहर गए हुए हैं।"

"कहाँ गया है?"

"वो तो नहीं मालूम साहब। कोई काम था क्या साहब?"

"हाँ , काम तो था...।" एसआई बोलते-बोलते रुक गया। उसे पीछे से, किसी के भागने की आहट सुनाई दी।

"तुम गाड़ी लेकर आओ।" एसआई ड्राइवर को बोलते हुए दौड़ने लगता है। पीछे-पीछे जेआई और कांस्टेबल भी दौड़ते हैं। थोड़ी देर बाद वे उस व्यक्ति को धर दबोचते हैं।

"भाग क्यों रहा था बे?"

"भाग नहीं रहा था साहब।"

"भाग नहीं रहा था साला।" बोलकर एसआई एक थप्पड़ जड़ देता है।

"नहीं साहब।"

"अच्छा, नाम बता साले?"

"जुल्फिकार अहमद।"

"तुम्हीं को तो खोज रहे थे रे हरामखोर।"

"साहब, हम क्या किए हैं?"

"चल, तुम्हें थाने में पता चलेगा।"

ड्राइवर जिप्सी लेकर वहाँ पहुंच चुका था। एसआई जुल्फिकार का कॉलर पकड़ते हुए उसे जिप्सी में बैठाता है। एक तरफ से कांस्टेबल और दूसरे तरफ से एसआई बैठ जाते हैं। जेआई रूपेश अपना मोटरसाइकिल लेकर पीछे-पीछे जाता है।

लोहिया नगर पार करने के बाद एसआई अपने जेब से सेलफोन निकालता है और एसपी इरशाद शेख को कॉल करता है।

"जय हिंद जनाब, धर दबोचे हैं जुल्फिकार को, भाग रहा था साला।" एसआई एसपी सहाब से बोलता है।

"ठीक है, चौकी पहुंचिए आप लोग, हम भी निकल रहे हैं।"

"ठीक है जनाब, जय हिंद।"

"जय हिंद।"

****

एसपी सहाब बार-बार घड़ी की ओर देख रहे थे। वह एयरटेल कंपनी से फैक्स आने का बड़े ही बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। वह हर मिनट सोच रहे थे कि अब काल कर लेता हूँ, फिर सोचते कि थोड़ी देर और इंतजार कर लेता हूँ। अचानक से एसपी सहाब का टेलीफोन बजा। एसपी टेलीफोन के पास जाकर रीसीवर उठाकर कान से लगाते हैं।

"हेलो सर, मैं एयरटेल कंपनी से अदिति बोल रही हूँ। आपने जो जानकारी की अर्जी डाली थी, वह आपको फैक्स कर रही हूँ।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद अदिति जी।"

"मोस्ट वेलकम सर।"

कुछ सेकंड बाद वह फैक्स एसपी के ऑफिस के फैक्स मशीन से शंकर निकालकर लाता है। एसपी सहाब फैक्स अपने हाथों में लेकर देखते हैं| पूरे दिन में मात्र 3 नंबरों पर हीं कॉल आया-गया हुआ था, जबकि उससे पिछले दिन और पिछले एक सप्ताह तक, दिन में 10 से 15 कॉल आती-जाती थीं। एसपी सहाब ने तुरंत अपना सेलफोन निकाला और नंबर डायल किया। एक नंबर सुरेश की माँ का था, दूसरा चंद्रकांत यादव का, जोकि एसपी सहाब के सेलफोन में पहले से सेव था। तीसरा नंबर एसपी सहाब को खटका क्योंकि जब उस नंबर को एसपी सहाब ने डायल किया, वह नंबर उपयोग में ही नहीं था। शंकर ने बताया कि वह बीएसएनएल का नंबर है। एसपी सहाब ने तुरंत बीएसएनएल कस्टमर केयर को फोन लगाया और अपने बारे में, मामले के बारे में बताते हुए उस नंबर की जानकारी मांगी। बीएसएनएल अधिकारी ने उन्हें आधे से एक घंटे रुकने को कहा। एसपी सहाब ने उस अधिकारी को अपना निजी नंबर दिया और बोला इसी नंबर पर कॉल करने को।

एसपी सहाब फैक्स को अपने जेब में रखते हैं, टेबल में बने दराज से अपनी 9एमएम पिस्टल निकालकर होल्स्टर (पुलिस जिस खोल में पिस्टल रखती है) में रखते हैं और अपने बॉडीगार्ड शंकर समेत जेआई मुकेश और कांस्टेबल अभिजीत को लेकर सहायक थाना के निकलते हैं। बाहर निकलते ही मीडिया एसपी सहाब को घेर लेती है।

"सर, क्या अपडेट है इस मामले के बारे में?" एक रिपोर्टर पूछती है।

"जैसा कि पहले ही बोले हुए हैं, शाम तक सुरेश जी हमारे बीच होंगे, यही अपडेट है बस।"

"सर, क्या पुलिस कोई सुराग ढूंढ पाई है?" दूसरा रिपोर्टर पूछता है।

"देखिए, अगर आप इसी तरह हमें रोक कर रखेंगे तो कुछ महत्वपूर्ण काम छूट सकता है।" इतना बोलकर एसपी सहाब सभी प्रश्नों को नजरअंदाज करते हुए अपनी स्कॉर्पियो में पूरी पलटन के साथ बैठकर सहायक थाना के लिए रवाना हो जाते हैं।

एसपी सहाब, सहायक थाना पहुँचते ही हाजत (लॉक अप) में जाते हैं, जुल्फिकार अहमद के पास। जुल्फिकार काफी डरा हुआ था, बस उसके आंखों से आंसू नहीं या रही थी, लेकिन मानो अंदर से रो ही रहा था।

"जुल्फिकार, तुम्हीं हो जी?" एसपी सहाब गुर्राते हुए पूछते हैं।

"जी साहब।"

"काम क्या करता है?"

"गाड़ी भाड़ा पर चलाते हैं, साहब।"

"गाड़ी कहाँ है तुम्हारी?"

"कौन-सा गाड़ी, साहब?"

"हरामखोर, कौन-सा गाड़ी पूछता है।" एसपी सहाब एक झटकदार थप्पड़ जड़ते है

"बताओ, कौन-सा गाड़ी, अभी।"

"साहब…साहब, मारिए मत, मेरे पास 2 गाड़ी है।" जुल्फिकार कांपते हुए बोलता है।

"नाम बताओ दोनों गाड़ी का, साले।"

"एक बोलेरो और एक स्कॉर्पियो।"

"काला रंग का स्कॉर्पियो है ना।"

"हाँ साहब।"

"BR38X40656 तुम्हारे स्कॉर्पियो का नंबर है ना?"

"हाँ साहब।"

"कहाँ है तुम्हारा स्कॉर्पियो?"

"वो तो कल सुबह ही भाड़ा में गया है।"

"कौन ले गया भाड़ा पे?"

"साहब, वो तो मालूम नहीं। मेरा ड्राइवर ही हमको बोला एक भाड़ा लगा है, साहब। उसने 500 रुपए एडवांस में ही दे दिया था, तो जाने दिए। हम कुछ नहीं बोले।"

"तुमको मालूम है तुम्हारे गाड़ी से क्या हुआ है?"

"क्या, साहब?"

"एक अपहरण हुआ है रे हरामखोर।"

"इसके बारे में कुछ मालूम नहीं, साहब। ड्राइवर भी रात से फोन नहीं उठा रहा।" जुल्फिकार रोते हुए बोला।

"मुकेश, इसका ड्राइवर का नंबर लिखिए, नंबर दो ड्राइवर का।"

मुकेश अपना सेलफोन निकाल कर जुल्फिकार से उसके ड्राइवर का नंबर लेता है और डायल करता है। नंबर स्विच ऑफ आ रहा था। तभी एसपी सहाब का सेलफोन बजता है। एसपी सहाब अपने जेब से सेलफोन निकालते हैं और कॉल रीसीव करते है।

"हेलो सर, मैं सुजीत बीएसएनएल से बात कर रहा हूँ। आपने जिस नंबर की जानकारी हासिल करने की अर्जी डाली थी, मैं वह जानकारी फैक्स कर रहा हूँ।"

"धन्यवाद, सुजीत जी।"

"मोस्ट वेलकम सर।"

"पर एक अनुरोध है।"

"जी कहिए सर, मैं आपकी और क्या मदद कर सकता हूँ?"

"सुजीत जी, फैक्स तो कर ही दीजिए पर ये बता दीजिए ये नंबर बंद कब हुआ है।"

"ये कल शाम को ही कॉल करके बंद कराया गया है।"

"किस नंबर से कॉल करके बंद कराया गया है, ये बता सकते हैं आप?"

"एक मिनट समय दें, मैं बता रहा हूँ।"

"जी, बिल्कुल।"

एक मिनट बाद बीएसएनएल अधिकारी सुजीत बोलता है। "जी, लिखिए सर।"

"हाँ , बोलिए।" एसपी साहब जेआई मुकेश को लिखने के लिए इशारा करते हैं। सुजीत नंबर बोलते जाता है। एसपी सहाब उसको दोहराते हैं और मुकेश अपने सेलफोन में टाइप करते जाता है।

"जनाब, ये तो ड्राइवर का नंबर है जो जुल्फिकार ने दिया है।" जेआई मुकेश एसपी से कहता है।

"क्या…?" एसपी सहाब चौंक जाते हैं।

"हेलो सर, आपकी आवाज नहीं आ रही है।"

"हाँ , सुजीत जी, एक अनुरोध है। दोनों नंबर की लास्ट लोकेशन मिल सकती है क्या?"

"पहले वाला नंबर जो आपने बताया था, उसकी लोकेशन तो मेन रोड चौराहा से टोल प्लाजा के बीच आ रही है। वहीं किसी टावर से शायद इस नंबर को सिग्नल मिल रहा होगा।"

"और दूसरे वाला का?"

"थोड़ा समय लगेगा सर।"

"सुजीत जी, अर्जेंट है। किसी की जान को खतरा है। हालात को समझते हुए कुछ करें।"

"मुझे 2 मिनट दीजिए।"

"जी, बिल्कुल।" एसपी सहाब होल्ड करते हैं|

"इस नंबर को भी उसी एरिया के किसी दूसरे टावर से सिग्नल मिल रहा था। वहाँ शायद आसपास कोई पुल है क्या?"

"सुजीत जी, बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने बहुत मदद की।" एसपी सहाब इतना बोलकर कॉल डिस्कनेक्ट कर देते हैं और वहीं बगल में कुर्सी पे बैठ जाते हैं।

"क्या हुआ जनाब?" एसआई अमित कुमार पूछता है।

"पहले एक गिलास पानी पिलवाइए।"

"जी जनाब।"

एक कांस्टेबल दौड़कर जाता है और चापाकल से पानी भरकर लाता है और लाकर एसपी को पानी पिलाता है। एसपी पानी पीकर अपनी दोनों जांघों पे दोनों हाथों से ताल ठोकता है।

"देखिए, अब जो है रामनगर पुलवा के आस पास ही जाकर अच्छे से छानबीन करनी पड़ेगी। ये तो निश्चित है, सुरेश यादव को हम ढूंढ लेंगे।"

"हम अपना खबरी सब को भी लगा दें जनाब काम पर।" एसआई अमित कुमार ने पूछा।

"चलिए, गाड़ी में बैठकर ही सबको फोन मिला लीजिएगा।"

"जी जनाब, चलिए।"

एसपी सहाब अपने स्कॉर्पियो में शंकर, जेआई रूपेश और कांस्टेबल अमरजीत के साथ बैठ जाते हैं । एसआई अपने जिप्सी में जेआई मुकेश, पांडे जी और दो कांस्टेबल के साथ बैठ जाता है और उसके बाद वे वहाँ से निकल जाते हैं। एसआई अपनी गाड़ी में चलते-चलते अपने खबरी लोगों को कॉल करके काम पे लगता है।

मेन रोड चौराहा से लेकर टोल प्लाजा तक उन्होंने काफी पूछताछ और जांच-पड़ताल की, पर उन्हें कोई सुराग नहीं मिला। टोल प्लाजा से वापस लौटते वक्त एसपी इरशाद शेख को एक टावर नजर आया, एसपी सहाब ने फौरन गाड़ी रुकवाया और गाड़ी से उतरकर नीचे आए, साथ ही पूरी पलटन भी गाड़ी से बाहर आ गई। एसपी सहाब को जैसे ही टावर दिखा वह समीकरण बिठाने लगे, लेकिन एसपी सहाब को एक बात खटक रही थी - यहाँ तो एक ही टावर है।

"शंकर, यहाँ कोई और भी टावर है क्या?" एसपी सहाब पूछते है।

"हाँ जनाब, करीब डेढ़-दो किलोमीटर पीछे।"

"इसका मतलब, बीएसएनएल अधिकारी सुजीत के मुताबिक यहीं दो टावर के बीच दोनों नंबर बंद हुए हैं। लेकिन समझ नहीं आ रहा ये लोग गए कहाँ , टोल प्लाजा पर भी एंट्री नहीं हुई है।"

तभी एसआई अमित कुमार का सेलफोन बजता है। अमित कुमार अपने जेब से सेलफोन निकालता है और कॉल रीसीव करता है।

"हेलो अमित साहब।"

"हाँ , बोलो।"

"साहब, यहाँ बीच खेत में एक काली स्कॉर्पियो पड़ी हुई है।"

"किधर?"

"पुलवा से टोल प्लाजा जाने वाले रास्ते में पुलवा से आगे दूसरी वाली कच्ची सड़क पकड़ के आइए, हम सड़क पर ही खड़े हैं।"

"चार चक्का अंदर जा सकता है वहाँ से?"

"थोड़ा दूर दिक्कत होगा, उसके बाद आराम से आ जाइएगा।"

"वहीं रुको, आते हैं।"

"क्या हुआ अमित जी?" एसपी सहाब ने पूछा।

"जनाब, स्कॉर्पियो मिल गई है।"

"कहाँ ?"

"मेरे पीछे आइए।"

सभी फटाफट गाड़ी में बैठते हैं और एसआई की गाड़ी आगे निकलती है। एसपी सहाब की गाड़ी एसआई की गाड़ी को फॉलो करती है। एसआई खबरी के बताए हुए रास्ते होकर जाता है। काफी दूर जाने के बाद एसआई को खबरी दिखाई देता है। फिर खबरी अपने मोटरसाइकिल से आगे चलता है, पीछे एसआई की गाड़ी और उसके पीछे एसपी सहाब

की गाड़ी। कुछ दूर जाकर खबरी रुकता है, तो पीछे दोनों गाड़ियां भी रुक जाती हैं और सभी गाड़ी से बाहर निकलते हैं। वहीं दूर खेत में एक काली स्कॉर्पियो नजर आती है। जब एसआई और एसपी सहाब पास जाकर देखते हैं, तो पता चलता है कि यह वही गाड़ी है।

गाड़ी की छानबीन की जाती है तो डिक्की में ड्राइवर बंधा हुआ मिलता है। ड्राइवर का मुंह काफी बुरी तरह से बंधा हुआ होता है और उसके सिर पर चोट भी होती है। वह बेहोश पड़ा था। सभी कांस्टेबल मिलकर उसे बाहर निकालते हैं और वहीं खेत में लगे गंदे पानी से उसके चेहरे पर छींटा मारा जाता है, जिससे ड्राइवर होश में आता है। सामने पुलिस देखकर ड्राइवर डर जाता है और कुछ बोल नहीं पाता है। एसपी सहाब और एसआई उससे सवाल पूछते रहे, वह उनका चेहरा देखता रहा।

"अपने मोटरसाइकिल पर बिठाकर इसे अस्पताल ले जाओ और वहाँ से इसे थाने ले जाना। एक कांस्टेबल को भी साथ ले जाना।" एसआई खबरी से कहता है।

"सर, इसको ले जा रहे हैं, लेकिन एक बात पता है - इधर ही चार किलोमीटर दूर सुरेश यादव का पानी प्लांट भी है।"

"जनाब, वह कॉलेज कर्मचारी भी बोल रहा था कि पानी प्लांट पर सुरेश यादव जाया करता है।" जेआई मुकेश कहता है।

"इससे पानी प्लांट का क्या मतलब है?" एसपी सहाब ने पूछा।

"जनाब, पहले भी कई छत्रनेताओं के साथ घटना हुई है। वे अपने किसी निजी स्थान पर ही पाए गए हैं।" शंकर एसपी सहाब से कहता है।

"जनाब, एक बार चलना चाहिए वहाँ भी।" एसआई कहता है।

"चलिए, फिर किसको पता है जगह का?"

"पानी प्लांट तो नहीं देखे हैं, लेकिन उस इलाके का हमें पता है।" खबरी कहता है।

"फिर तुम हमारे साथ चलो। अमरजीत, अभिजीत, तुम दोनों खबरी का मोटरसाइकिल लेकर ड्राइवर को ले जाओ।"

"ठीक है जनाब।"

अमरजीत और अभिजीत ड्राइवर को लेकर अस्पताल के लिए निकल जाते हैं और ये सभी पानी प्लांट के लिए। सड़क काफी खराब थी, पर उन्हें जांच-पड़ताल तो करनी थी। काफी मशक्कत के बाद ये लोग उस इलाके में पहुंचे और फिर लोगों से पूछकर पानी प्लांट पर पहुंचे। वहाँ पानी प्लांट में सामने से ताला लगा हुआ था। उन्होंने आवाज भी लगाई, पर अंदर से कोई आवाज नहीं आई। फिर खबरी ने एक बड़ा सा पत्थर उठाकर

ताला तोड़ दिया। ताला टूटने के बाद जब पानी प्लांट का गेट खोला गया, तो वह दृश्य देखकर सभी चौंक गए।

"यही घटना का जिक्र, तुम कर रहे थे, शंकर?" एसपी सहाब ने शंकर से पूछा।

"जी जनाब।"

तभी वहाँ जेआई रूपेश को मीडिया वाले आते दिखे। वह चौंक गया कि मीडिया को किसने खबर की।

"जनाब, यहाँ तो मीडिया आ गई है।" रूपेश ने एसपी से कहा।

"इनको कौन खबर किया? चलो, आने ही दो, अब इनका क्या ही कर सकते हैं।"

मीडिया ने पहुंचते हीं लाइव प्रसारण शुरू कर दिया|

3. हत्या हो गई है

"जैसे कि आपको पता होगा, कल शाम से सुरेश यादव लापता हैं, लेकिन अभी-अभी पुलिस ने सुरेश यादव की लाश उनके पानी प्लांट पर बरामद की है। बड़े ही बेरहमी से उनकी हत्या की गई है। फोरेंसिक टीम को खबर कर दी गई है, वो किसी भी वक्त यहाँ पहुँचते ही होंगे।" चंद्रकांत यादव अपने घर में कुर्सी पर बैठे यह खबर अपने टीवी पर देख रहा होता है।

इस खबर को सुनते ही वह तिलमिला उठता है। टीवी का रिमोट उठाकर टीवी पर फेंक मारता है और गुस्से में जोर-जोर से चिल्लाने लगता है। चंद्रकांत को सुरेश की हत्या की खबर से सदमा लग चुका था। चंद्रकांत की नजर टेबल पर रखे टेलीफोन पर पड़ती है। वह टेबल के बगल में जाकर नीचे बैठ जाता है और टेलीफोन उठाकर आईजी को कॉल लगता है, रिंग जा रही होती है, लेकिन आईजी उस फोन का जवाब नहीं देता। चंद्रकांत दो-चार बार और फोन मिलाता है, पर आईजी जवाब नहीं देता। चंद्रकांत एसपी सहाब को फोन मिलाता है, एसपी सहाब की तरफ से भी उस फोन का जवाब नहीं मिलता। चंद्रकांत गुस्से में टेलीफोन उठाकर फेंक देता है और उठ खड़ा होता है और अपने घर के दरवाजे से बाहर निकलता है।

"गाड़ी निकालो," चंद्रकांत बाहर खड़े अपने ड्राइवर से कहता है।

"जी साहब," ड्राइवर हड़बड़ाहट में कुछ समझ नहीं पाता।

"हरामखोर, गाड़ी निकालो जल्दी से।"

"जी साहब।" ड्राइवर जल्दी से जाकर चंद्रकांत की एम्बेसडर कार लेकर दरवाजे के पास आता है। चंद्रकांत तुरंत गाड़ी में बैठता है।

"चलो।"

"कहाँ चलना है साहब?"

"सुरेश के पानी प्लांट पर चलो।"

"जी साहब।"

कुछ देर बाद चंद्रकांत यादव वहाँ पहुँचता है। उसके पहुँचने से पाँच मिनट पहले फोरेंसिक टीम वहाँ पहुँच चुकी थी। फोरेंसिक टीम, सुबूत इकट्ठा करने में जुटी हुई थी। चंद्रकांत अपने गाड़ी से उतरता है और भागकर अपने भांजे की लाश की ओर जाता है। चंद्रकांत उसकी दुर्दशा देख सदमे में चला जाता है। वह देख पा रहा था कि किस तरह से उसके भांजे की दोनों आँखें निकाली गई हैं, किस तरह से उसके गले मे चाकू घोंपा गया है, उसके गुप्त अंग को काटा गया है। चंद्रकांत यादव की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। उसने अपने आँसू पोछे और वहाँ से बाहर आकर एसपी सहाब के सामने खड़ा हो जाता है।

"भाषण तो बहुत अच्छा देते हो एसपी, अपना काम भी अच्छे से कर लेते तो मेरा भांजा आज मारा नहीं जाता," चंद्रकांत ने एसपी सहाब से गुस्से में कहा।

"विधायक जी, आपकी नाराजगी हम समझ सकते हैं," एसपी सहाब ने चंद्रकांत से सांत्वना दिखाते हुए कहा।

"क्या समझोगे तुम एसपी, हम अपना बेटा खो दिए हैं, सिर्फ पुलिस की लापरवाही से।"

"यह हमने भी नहीं सोचा था विधायक जी, ऐसा होगा।"

"सरकार से पैसा सोचने का लेते हो एसपी या काम करने का?"

इतने में चंद्रकांत का सेलफोन बजता है। चंद्रकांत अपने कुर्ते की जेब से सेलफोन निकालता है तो देखता है कि उसकी बहन सरिता का कॉल आ रहा होता है। चंद्रकांत की हिम्मत नहीं होती है अपनी बहन से बात करने की, फिर हिम्मत करके कॉल रीसीव करता है।

"हेलो, बोलो सरिता," चंद्रकांत कहता है।

"भैया, यह टीवी पर क्या खबर दिखा रहा है? सुरेश ठीक तो है ना? क्या हो गया मेरे बच्चे को?" सरिता जी रोते हुए बोली।

"सरिता, रो मत बहन।"

"भैया, आपके भरोसे छोड़ा था उसको।"

"घर आके बात करते हैं बहन," चंद्रकांत सिसकते हुए बोला और कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया। उसमें हिम्मत नहीं थी अपनी बहन से बात करने की।

"सुनिए एसपी साहब, हमको कातिल चाहिए, बस चाहे जैसे हो। हमको मेरा भानजा का कातिल चाहिए," चंद्रकांत एसपी की आँखों में आँखें डालकर आदेश देता है।

"जी विधायक जी।"

चंद्रकांत अपनी गाड़ी की ओर जाने लगता है। एसपी सहाब शंकर को इशारा करते हैं, चंद्रकांत को गाड़ी तक छोड़ने को। शंकर पीछे-पीछे जाता है, गाड़ी का दरवाजा खोलता है और चंद्रकांत अंदर जाकर बैठता है और वहाँ से निकल जाता है।

फोरेंसिक वाले वारदात की जगह से सभी निशान और डीएनए सैंपल उठाते हैं, सभी कोणों से लाश की छवियाँ कैप्चर करते हैं, उसके बाद लाश को उठाते हैं और एंबुलेंस में डालकर पोस्टमार्टम के लिए ले जाया जाता है | एसपी सहाब और एसआई अपने अफसर के साथ वहाँ से निकलते हैं।

चंद्रकांत यादव अपनी बहन के घर पर पहुँचता है। गाड़ी से उतरते ही सरिता जी उसे देखकर फूट-फूटकर रोने लगती हैं। दयाल जी उन्हें पकड़े हुए थे और उनकी आँखें भी नम थीं। चंद्रकांत जाकर सरिता जी के पास बैठता है और उन्हें आश्वासन देता है कि हत्यारा जो भी है उसका बुरा हश्र होगा।

"भाईसाहब, आपके ही भरोसे अपने बेटे को छोड़े थे हम दोनों, आप ध्यान नहीं रख पाए मेरे बेटे का," दयाल जी रोते हुए बोले।

"मेरा भी बेटा था सुरेश, सिर्फ आपका ही बेटा नहीं था। मेरे ऊपर क्या बीत रही है, क्या बताऊं आपको," चंद्रकांत सिसकते हुए बोलता है।

"ऐसा कौन सा गुनाह कर दिया था, भैया, मेरे बच्चे ने, जो उसे मार दिया," सरिता जी रोते हुए बोलीं।

"रो मत बहन, बचेगा नहीं जो हमारे बच्चे का कातिल है," चंद्रकांत कहता है।

सरिता जी बस रोए जा रही थीं, उनके आँसू रुक ही नहीं रहे थे। काफी समझाने के बाद वह चुप हुईं।

"भैया, जो भी मेरे बच्चे का कातिल है, उसके साथ भी वही होगा, आप मुझसे वादा कीजिए," सरिता जी अपने साड़ी के पल्लू से आँसू पोंछते हुए चंद्रकांत से कहती हैं।

"हाँ बहन, उसको तो जिंदा जला देंगे। बस तू रो मत।"

"नहीं, रोएंगे नहीं। आप मेरा कसम खाकर कहिए, मेरे बच्चे के कातिल के साथ भी वही होगा जो मेरे बच्चे के साथ हुआ," सरिता जी चंद्रकांत का हाथ उठाकर अपने सिर पर रखते हुए कहती हैं।

"तुम्हारी कसम बहन, उसको हम जिंदा जला देंगे।"

"जिंदा नहीं जलाना है," सरिता जी गुस्से में कहती हैं।

"जिस तरह से मेरे बेटे को मारा गया है, उसी तरह वो कातिल भी मरना चाहिए।"

"वैसा ही हश्र उस कातिल का भी होगा।"

"भैया, अगर ये वादा आप नहीं निभा पाए ना, तो जिंदगी भर आप अपना शक्ल मत दिखाना," सरिता जी रोने लगती हैं।

"रो मत बहन, तुमसे वादा है मेरा और ये निभाकर रहेंगे। तुम चिंता छोड़ दो।"

"सुरेश का बॉडी कब मिलेगा भाईसाहब?" दयाल जी चंद्रकांत से पूछते हैं।

"पोस्टमार्टम के लिए पुलिस बॉडी ले गई है। उसके बाद ही हम लोगों को पुलिस सौंपेगी।"

कुछ देर तक तीनों बैठकर बातें करते हैं। फिर चंद्रकांत अपनी जेब से सेलफोन निकालता है और आईजी को कॉल लगता है।

"हेलो, चंद्रकांत यादव बोल रहा हूँ।"

"नमस्कार विधायक जी।"

"नमस्कार छोड़िए, कातिल को ढूंढिए।"

"जी विधायक जी, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आते ही काम शुरू हो जाएगा। फोरेंसिक वाले भी इसी काम में लगे हुए हैं।"

"जल्दी से कातिल को मेरे हवाले कीजिए।"

"जी विधायक जी।"

"बॉडी कब ला सकते हैं?"

"पोस्टमार्टम होने के बाद कल शाम को बॉडी आप लोगों को सौंप दी जाएगी।"

"ठीक है, बस कातिल को जल्द से जल्द ढूंढिए।"

"जी विधायक जी।"

चंद्रकांत आईजी से बात करने के बाद कुछ देर वहीं बैठकर अपनी बहन और अपने जीजा से बात करता है। फिर अपने गाड़ी में बैठकर अपने घर के लिए रवाना हो जाता है।

****

4 नवंबर 2003

करीब 3:00 बजे, सुरेश यादव की लाश का पोस्टमार्टम पूरा हो चुका था। दयाल जी, सरिता जी, चंद्रकांत यादव और अन्य परिजन सदर अस्पताल में सुरेश यादव के शव को प्राप्त करने के लिए मौजूद थे। कुछ देर बाद, अस्पताल के चार अधिकारी एक स्ट्रेचर पर लाश को लेकर बाहर आते हैं और उसे एंबुलेंस में डालते हैं। एक कांस्टेबल कागजात लेकर आता है और दयाल जी व सरिता जी से हस्ताक्षर कराता है। फिर एंबुलेंस का ड्राइवर एंबुलेंस लेकर दयाल जी के घर के लिए रवाना हो जाता है। चंद्रकांत सभी परिजनों को घर जाने को कहता है और अपने ड्राइवर, बॉडीगार्ड और शुभचिंतकों के साथ वहीं रुकता है। थोड़ी देर बाद, एसपी सहाब और एसआई अस्पताल से बाहर आते हैं और चंद्रकांत के पास जाकर उससे मिलते हैं।

"नमस्ते विधायक जी," एसपी कहता है।

"नमस्ते, जांच-पड़ता शुरू हुई की नहीं?" चंद्रकांत एसपी सहाब से पूछता है।

"पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार है, बाकी कार्यवाही तो चल ही रही है।"

"देखिए एसपी साहब, एक सप्ताह के अंदर कातिल हमको चाहिए। आप लोगों के लिए एक आम नागरिक या एक छात्र नेता की हत्या हुआ होगा, लेकिन मेरे लिए मेरे बेटे की हत्या हुआ है।"

"आपकी भावनाओं को समझ सकते हैं विधायक साहब।"

"नहीं समझ सकते हैं आप एसपी साहब और शायद कभी नहीं समझ पाएंगे कि हम क्या खोए हैं। बस कातिल को पकड़कर सामने खड़ा कीजिए।"

"बिल्कुल विधायक जी।"

"हाँ, जल्द से जल्द कीजिए।"

"हमारी पुलिस फोर्स पूरा प्रयास करेगी कि सुरेश जी का कातिल जल्द से जल्द पकड़ा जाए।"

"प्रयास नहीं एसपी, मेरे सामने हमको सुरेश का कातिल चाहिए तो चाहिए।"

"जी विधायक जी।"

"जितना बढ़िया से और जिस लगन से भाषण देते हो, उसी लगन से कातिल को ढूंढें, मिल जाएगा। बाकी अब चलते हैं।"

"ठीक है विधायक जी।"

चंद्रकांत अपने गाड़ी की ओर जाने लगता है। पीछे-पीछे उसका बॉडीगार्ड, एसपी सहाब और एसआई भी उसके गाड़ी तक जाते हैं। बॉडीगार्ड दरवाजा खोलता है और चंद्रकांत जाकर गाड़ी में बैठ जाता है फिर वहाँ से निकल जाता है।

"चला जाएं आईजी साहब के ऑफिस?" एसपी सहाब एसआई से कहते हैं।

"जी जनाब।"

"रुकिए, शंकर को आने दीजिए।"

दोनों एसपी सहाब और एसआई वहीं अस्पताल के बाहर खड़े होकर थोड़ी देर शंकर का इंतजार करते हैं। थोड़ी देर बाद शंकर अस्पताल से बाहर निकलकर वहाँ आता है।

"पोस्टमार्टम रिपोर्ट कब तक आ जाएगी?" एसपी सहाब ने शंकर से पूछा।

"डॉक्टर साहब बोले हैं, परसों तक भेज देंगे।"

"फोरेंसिक वालों से बात हुई है क्या?"

"वो लोग भी काम में लगे हुए हैं, खेत से बरामद हुई स्कॉर्पियो की भी जांच-पड़ताल कर रहे हैं।"

"चलो फिर, चलते हैं आईजी साहब के ऑफिस।"

तीनों वहाँ से एसपी की स्कॉर्पियो में बैठकर आईजी के ऑफिस के लिए रवाना हो जाते हैं। अस्पताल से 10 मिनट की दूरी पर आईजी का ऑफिस था। वे तीनों वहाँ पहुंचते हैं और गाड़ी से उतरकर आईजी के ऑफिस में प्रवेश करते हैं और आईजी को सलाम करते हैं।

"बॉडी सौंप दी परिजनों को?" आईजी पूछता है।

"हाँ जनाब, बॉडी सौंप दी है, पूरी कागजी कार्यवाही के साथ," एसपी सहाब जवाब देते हैं।

"पोस्टमार्टम वाले क्या बोले?"

"परसों रिपोर्ट मिल जाएगी।"

"और फोरेंसिक?"

"वो भी काम में लगे हैं।"

"यह मामला गंभीर हो चुका है; अब इसे संभालना और अपराधी को पकड़ने की जिम्मेदारी आपकी है," आईजी एसपी से कहता है।

"जी जनाब।"

"अगर पुलिस की ओर से कोई लापरवाही हुई, तो लोगों में गलत संदेश जाएगा। लोगों का भरोसा पुलिस पर से उठना नहीं चाहिए; उनका भरोसा पुलिस पर बना रहना

चाहिए। यह मामला बहुत हाईलाइटेड है, हर किसी को इसके बारे में पता है। इस अपराध को अंजाम देने वाले अपराधी को गिरफ्तार करना बहुत जरूरी है," आईजी उपस्थित अफसरों से कहता है।

"जी जनाब, निश्चित रूप से अपराधी को हम गिरफ्त में लेंगे," एसपी सहाब जवाब में कहते हैं।

"देखिए, जितना भी पुलिस बल लगे, और जो भी लगे, उसका उपयोग कीजिए और अपराधी को गिरफ्त में लीजिए।"

"जी जनाब।"

"एसआई साहब, आपको भी ध्यान देना है इस मामले में," आईजी एसआई अमित कुमार से कहता है।

"जी जनाब, बिल्कुल।"

"जनाब, कुछ कहें?" शंकर आईजी से अनुरोध करता है।

"हाँ शंकर, कहो।"

"जनाब, जिस तरह से सुरेश यादव की हत्या हुई है, बिल्कुल उसी तरह से तीन और हत्याएं हुई हैं। उन हत्याओं में भी लाश की आँखें निकाली गई थीं और गुप्तांग भी काटे गए थे।"

"वो भी उसी कॉलेज के थे ना?"

"हाँ जनाब, पहली हत्या 1999 में हुई थी, जिसके हत्यारे अब भी जेल में सजा काट रहे हैं। इसके बाद 2001 में दो छात्र नेताओं की हत्या एक साथ हुई, जो घनिष्ठ मित्र थे। उनके हत्यारे कभी पकड़े नहीं गए क्योंकि कोई ठोस सुराग या सबूत नहीं मिला।"

"मिश्रा जी ही सॉल्व किए थे ना वो पहली हत्या वाला मामला? नाम क्या था उस लड़के का?" आईजी शंकर से पूछता है।

"जनाब, शंकुर यादव।"

"हाँ-हाँ, शंकुर यादव। छेड़छाड़ वाले मामले में उसका हत्या हुआ था ना?"

"जी जनाब। उसी समय मिश्रा जी की हत्या भी हुई थी, जिससे पूरी पुलिस फोर्स का ध्यान कुख्यात अपराधी अवधेश सिंह को गिरफ्तार करने पर था। इस कारण डबल मर्डर केस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया। उस थाने के थाना प्रभारी और कुछ अफसरों ने ही उस केस की छानबीन की, लेकिन कोई सुराग न मिलने के कारण केस ठंडा पड़ गया। उस समय मीडिया और जनता का पूरा ध्यान अवधेश सिंह की गिरफ्तारी पर था।"

"बड़ी बेरहमी से मिश्रा जी की हत्या हुई थी, वो कैसे कोई पुलिस अफसर भूल सकता है।"

"हाँ जनाब, इस वजह से अवधेश सिंह का भी बुरा हश्र हुआ।"

"ठीक है, इरशाद जी, इस मामले को निपटाइए जल्द से जल्द।"

"जी जनाब।"

"चलिए, अब रात हो गई है, हमें भी अपने आवास पर जाकर कुछ दवाई लेनी है।"

"जी जनाब, हम लोग भी निकलते हैं।"

"ठीक है।"

"जय हिंद जनाब।" एसपी, एसआई और शंकर आईजी को सलाम करके वहाँ से निकल जाते हैं।

आईजी भी थोड़ी देर बाद अपने आवास के लिए रवाना हो जाता है।

****

अगले दिन एसआई, जेआई मुकेश और जेआई रूपेश एसपी के ऑफिस में उपस्थित होते हैं। पूरे दिन मामले की छानबीन करने के बावजूद उन्हें कुछ सुराग नहीं मिलता। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बावजूद कई दिनों तक कोई ठोस जानकारी नहीं मिलती। फोरेंसिक रिपोर्ट भी मामले को सुलझाने में मदद नहीं करती। रोज शाम को चंद्रकांत यादव एसपी सहाब को कॉल करके पूछता, "कुछ पता चला की नहीं?" पुलिस हर जगह जाकर पूछताछ और छापेमारी कर रही थी, कई अपराधी छवि वाले लोगों से पूछताछ की जा रही थी, लेकिन हत्यारे तक पहुंचने के लिए ठोस सबूत नहीं मिल पा रहे थे।

एक सप्ताह से अधिक बीत चुका था और पुलिस के पास कोई ठोस परिणाम नहीं था जिससे वे हत्यारे को ढूंढ सकें। 16 नवंबर 2003 को शाम 6:00 बजे, चंद्रकांत यादव ने एसपी सहाब और आईजी को कॉल करके अपने आवास पर बुलाया।

शाम 6:00 बजे एसपी सहाब और आईजी अपने-अपने बॉडीगार्ड के साथ चंद्रकांत यादव के आवास पर पहुँचते हैं। चंद्रकांत का बॉडीगार्ड उन्हें अंदर लेकर आता है, और वे दोनों चंद्रकांत के सामने बैठते हैं।

"कहिए विधायक जी, क्यों बुलाया है हमें?" आईजी ने चंद्रकांत से कहा।

"आपके अफसरों से कोई काम नहीं होने वाला है," चंद्रकांत गुस्से में बोलत है।

"विधायक जी, सब तो लगे हुए हैं काम में, एसपी साहब खुद इस मामले को संभाल रहे हैं।"

"पूछिए अपने एसपी साहब से, क्या पता लगा पाए हैं अभी तक।"

"काम चल रहा है विधायक जी, जल्द ही हम हत्यारे तक पहुंच जाएंगे और उसे अपने गिरफ्त में ले लेंगे," एसपी सहाब विधायक से कहते हैं।

"आप लोग रहने दीजिए, अपने सबसे काबिल अफसर को इस केस पर लगाइए। वो क्या नाम था उसका जिसको सस्पेन्ड करवाए थे?"

"कौन सर?" एसपी सहाब पूछते हैं।

"अरे वो, आपका बॉडीगार्ड भी उसके साथ ही था पहले, उसे सब स्पाई बुलाते हैं।"

"समर प्रताप," आईजी कहता है।

"हाँ, समर प्रताप। उसे लगाइए इस केस पर।"

"वो तो काफी समय से ड्यूटी पर नहीं है विधायक जी," आईजी कहता है।

"एसटीएफ को भी आपने ही बंद करवाया था।"

"उसे फिर से बुलवाइए।"

"कोशिश करते हैं।"

"कोशिश नहीं आईजी, उसे इस केस पर लगाइए चाहे जैसे हो, कोई जरूरत पड़े तो हमको खबर कीजिएगा।"

"जी विधायक जी।"

"ठीक है, निकलिए आप लोग, यही बोलने के लिए बुलाए थे।"

"ठीक है विधायक जी, निकलते हैं।"

आईजी और एसपी सहाब समर प्रताप यादव को वापस लाने के बारे में बात करते हुए वहाँ से निकल जाते हैं।

4. अवधेश सिंह का खात्मा

10 मार्च 2002

मेरी पोस्टिंग गया जिले के एक सहायक थाने में एसआई के तौर पर हुई थी। मेरे नाम से अपराधी वहाँ खौफ खाते थे। मैंने कई अपराधियों को जेल में डाला था और कई एनकाउंटर भी किए थे। मेरे यहाँ आने से गया जिले से अपराध लगभग खत्म हो गया था।

मैं सुबह अपने बिस्तर से उठकर हॉल में आया, तो देखा कि सिया (मेरी धर्मपत्नी) किचन में नाश्ता बना रही थी।

"जाओ, स्नान कर लो, नाश्ता तैयार है," सिया ने किचन से कहा।

"बस पाँच मिनट दो, बेबी," मैंने कहा।

"ओके, बेबी।"

मैं स्नान करने चला गया। दस मिनट बाद मैं वाशरूम से बाहर आया और अपने कमरे में जाकर कपड़े पहने। फिर मैं डाइनिंग टेबल पर आकर सिया से नाश्ता लाने को कहा। वह नाश्ता लेकर आई और मेरे पास बैठ गई।

"क्या बना है, बेबी?" मैंने पूछा।

"तुम्हें जो सबसे अधिक पसंद है।"

"अरे, छोले भटूरे! लव यू, बेबी।"

"लव यू टू, चलो अब खा लो।"

उसने बड़े ही प्यार से मेरी थाली में परोसा। मैं भी काफी उत्सुक था, क्योंकि मुझे छोले भटूरे बहुत पसंद हैं। जैसे ही मैं पहला निवाला लेने वाला था, मेरे टेलीफोन की घंटी बजी। मैंने उसे नजरअंदाज किया और छोले भटूरे पर ध्यान दिया, लेकिन टेलीफोन की घंटी फिर से बजी। मैंने सोचा कि कुछ ज़रूरी हो सकता है, इसलिए जाकर कॉल रीसीव किया।

"हेलो, समर प्रताप, प्रमोशन मुबारक हो।" सामने से गया जिले के आईजी की आवाज़ आई।

"जी जनाब, मैं समझा नहीं।"

"अरे, खुशखबरी है, समर प्रताप, तुम्हारा प्रमोशन हो गया है।"

"धन्यवाद, जनाब।"

"पैकिंग चालू कर दो।"

"क्यों, जनाब?"

"प्रमोशन के साथ ट्रांसफर भी हुआ है। लेटर तुम्हारे क्वार्टर पहुँचता ही होगा।"

"जी, जनाब।"

"चलो, तुम तैयारी करो निकलने की, ठीक है।"

"जी, जनाब! जय हिंद।"

"जय हिंद।"

कॉल डिस्कनेक्ट होने के बाद मैंने रिसीवर नीचे रखा और सोच में डूब गया। प्रमोशन तो ठीक है, लेकिन ये ट्रांसफर ज़रूरी था क्या?

"किस सोच में डूबे हो?" सिया ने मुझसे पूछा।

"प्रमोशन हुआ है," मैंने कहा।

"ये तो अच्छी बात है। फिर मुंह क्यों लटका लिया है?"

"ट्रांसफर भी हुआ है।"

"कहाँ?"

"ये नहीं पता, फिलहाल लेटर आएगा तब पता चलेगा।"

"कोई बात नहीं, पहले नाश्ता खत्म करो।"

मैं सिया के बगल में बैठकर नाश्ता खत्म करने लगा। बहुत ही स्वादिष्ट छोले भटूरे थे। वैसे सिया खाना बहुत अच्छा बनाती है। अब मुझे प्रमोशन और ट्रांसफर लेटर का इंतजार था, जिससे मुझे पता चल सके कि मेरी पोस्टिंग कहाँ हुई है और मुझे कौन-सी पोस्ट मिली है। इंतजार की घड़ी खत्म हुई और एक हवलदार लेटर लेकर मेरे क्वार्टर पर पहुँचा। मैंने लेटर निकाला और पढ़ा, तो पता चला कि मेरी पोस्टिंग पुर्णीया जिले के पुर्णीया

शहर में हुई है, बतौर एसटीएफ हेड। मुझे 12 मार्च 2002 को ड्यूटी ज्वाइन करनी है। मैंने सिया को लेटर दिखाया।

"कब निकलना होगा, बेबी?" सिया ने लेटर पढ़कर मुझसे पूछा।

"दो दिन बाद ज्वाइनिंग है। यहाँ से वहाँ जाने में कितना वक्त लगेगा, ये भी मुझे पता नहीं है," मैंने कहा।

"मेरी एक फ्रेंड की शादी हुई है वहाँ। उसे कॉल करके पूछती हूँ, शायद उसे पता हो।"

"हाँ, पूछो।"

सिया ने अपनी एक फ्रेंड को कॉल मिलाया, जिसकी शादी पुर्णीया में ही हुई थी। वो भी गया से ही थी। कुछ देर बाद सिया ने अपनी फ्रेंड से बात की।

"बेबी, मेरी फ्रेंड ने बताया कि हम एक दिन में वहाँ पहुँच जाएंगे।"

"चलो, मैडम, आपकी फ्रेंड मेरे किसी काम तो आई।"

"अच्छा जी! चलो, पैकिंग करो। ज्यादा मेरी फ्रेंड के बारे में बोलने की ज़रूरत नहीं है, मैं तुम्हारी बीवी हूँ, मुझसे डरा करो, समझे?" सिया ने मेरे कान पकड़ते हुए कहा।

"जी जनाब, माफ कर दीजिए मुझे।"

"पहले टिकट तो करा लो," सिया ने कहा।

"बस से जाना पसंद करेंगी आप या ट्रेन से, बेगम साहिबा?"

"ट्रेन से ही चलिए, जहाँपनाह।"

मैंने चौकी के एक कांस्टेबल को कॉल किया और उनसे हमारी टिकट कराने को कहा। फिर हमने पैकिंग करना शुरू कर दिया। काफी वक्त लगा पैकिंग करने में। पैकिंग करने के बाद हमने चैन की सांस ली ही थी कि कांस्टेबल साहब टिकट लेकर हमारे क्वार्टर आ पहुँचे।

"जनाब, ये रही टिकट। शाम 9:00 बजे की ट्रेन है," कांस्टेबल ने टिकट देते हुए कहा।

"7:00 बजे आ जाइएगा, हम लोगों को थोड़ा स्टेशन छोड़ दें," मैंने कांस्टेबल से कहा।

"हाँ, जनाब, आ जाऊँगा।"

"बैठिए ना, चाय पी लीजिए," मैंने कहा। वहीं मेरे सामने कुर्सी पर कांस्टेबल बैठ गया।

"सिया, ज़रा चाय बना दो ना," मैंने सिया से कहा।

"बना रही हूँ," सिया ने कमरे से कहा।

थोड़ी देर चाय के इंतजार में मैं और कांस्टेबल साहब बातें करते रहे। थोड़ी देर बाद सिया एक ट्रे में तीन कप चाय लेकर आई और टेबल पर रखकर मेरे बाजू में बैठ गई। फिर हमने चाय उठाई और चाय पीते-पीते यहाँ बिताए वक्त के बारे में बातें करने लगे। काफी देर बाद कहीं जाकर बातें खत्म हुईं। मैंने दीवार पर टंगी घड़ी की ओर देखा, दोपहर के 4:00 बज चुके थे।

"समय तो काफी हो गया, कांस्टेबल साहब," मैंने कांस्टेबल से कहा।

"हाँ, जनाब! एक विराम लेकर... क्या मैं एक बार घर हो आऊँ?" कांस्टेबल ने मुझसे पूछा।

"हाँ, कोई बात नहीं। जाइए, लेकिन 7:00 बजे से पहले पहुँच जाइएगा।"

"जी, जनाब।"

कांस्टेबल अपने घर के लिए निकल जाता है, और मैं और सिया भी कमरे में चले जाते हैं। जाकर हमलोग थोड़ा आराम कर लेते हैं क्योंकि रेल-यात्रा में थोड़ी परेशानी तो होगी ही।

करीब एक घंटे बाद मैं जागता हूँ। बचे-खुचे कपड़ों वगैरह की पैकिंग करने के बाद मैं सिया को जगाता हूँ और उससे कहता हूँ कि किचन में बचा सामान पैक कर ले और कुछ खा लें, सिया ने आकार ऑमलेट बनाया फिर हुमने खाया और उसके बाद हम दोनों सारा पैकिंग निपटा कर तैयार हो जाते हैं। कुछ देर बाद कांस्टेबल साहब भी हमारे क्वार्टर पहुँच जाते हैं।

मैंने पुलिस चौकी कॉल करके एक जीप भेजने को कहा, जो हमें स्टेशन तक छोड़ दे। पुलिस की नौकरी में यही छोटी-छोटी सुविधाएँ मिल जाती हैं, जिससे अपने खुद के जेब पर असर नहीं पड़ता, यूं तो आम आदमी को इन सब खर्चों के कारण बहुत परेशानी होती है।

कुछ देर बाद चौकी से जीप भी आ गई। फिर हमने सारा सामान जीप में डाला। कांस्टेबल साहब ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठे, मैं और सिया बीच वाली सीट पर, फिर हम स्टेशन के लिए रवाना हो गए।

करीब 8:00 बजे हम स्टेशन पहुँचे। जीप से उतरकर मैंने एक बैग उठाया और बाकी सामान ड्राइवर और कांस्टेबल को लाने के लिए कहा। मैं और सिया बात करते हुए प्लेटफार्म की ओर बढ़ने लगे, तभी मैं एक व्यक्ति से टकरा गया। मैंने उसे सॉरी बोला और फिर चल दिया।

"वाव, क्या सेक्सी दाढ़ी-मूछें थीं उसकी।" सिया ने चलते-चलते उस व्यक्ति के बारे में कहा।

"अरे ये क्या बात है, तुम्हारा पति तुम्हारे साथ है और तुम किसी और की तारीफ किए जा रही हो।"

"अच्छा बुरा लगा तुम्हें?"

"नहीं, मेरा मन उछल के नाच रहा है।"

"अरे गुस्सा महाराज, मैं तो बस तुम्हें छेड़ रही थी। तुम्हें पता है ना मुझे तुम्हारी मूछें बड़ी अच्छी लगती हैं, बढ़ाते क्यों नहीं।"

"पुलिस की नौकरी है बेगम साहिबा।"

"तो क्या हुआ, दाढ़ी थोड़ा ही रखना, पर मूछें तो बढ़ा सकते हो ना।"

"ट्रेन पकड़िए, मैडम, पहले।" मैंने प्लेटफार्म पर पहुँचते ही कहा।

हमारे सामने पुर्णीया जाने वाली गया एक्सप्रेस खड़ी थी। मैंने पीछे मुड़कर कांस्टेबल और ड्राइवर को देखा, वो सामान लेकर आ चुके थे। मैंने ट्रेन के डिब्बे में जाकर सिया को बिठा दिया, फिर बाहर आकर कांस्टेबल और ड्राइवर की सहायता से सारा सामान ट्रेन में रखा और उन दोनों से वापस जाने को कह दिया। मैं ट्रेन में जाकर बैठा, और चंद मिनट बाद ट्रेन स्टेशन से खुल चुकी थी। मैंने अपना सेलफोन निकाला और पुर्णीया के आईजी को खबर कर दी कि मैं आ रहा हूँ, जिससे वो हमें लेने किसी को भेज सकें। खबर करके मैंने सेलफोन जेब में रखा और सिया का हाथ पकड़कर बैठ गया।

"एक बात बताओगे?" सिया ने मुझसे पूछा।

"हाँ, पूछो ना।"

"गुस्सा तो नहीं करोगे?"

"बिलकुल नहीं।"

"दाढ़ी और मूछ कब बढ़ाओगे?"

"अच्छा, बढ़ा लूँगा ना बाबा।"

"कब, सेवानिवृत्त होने के बाद?"

"क्या पता, सस्पेंड हो जाऊं बीच में।"

"क्या, कुछ भी बोलते हो।"

सिया थोड़ा नाराज हो गई, तो मैंने उसके गले पर दायाँ हाथ रखकर अपने बाएं हाथ से अपना कान पकड़ा और 'सॉरी' बोला। फिर भी वो नाराज़ थी, तो मैंने कहा 'बढ़ा लूँगा ना

बाबा।' वो मुस्कुराई और मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर सो गई। थोड़ी देर बाद मैं भी सो गया।

सुबह 4:00 बजे सिया की नींद खुली। तब तक ट्रेन कई स्टेशनों पर रुकी और चली। मेरी नींद खुलती थी, पर मैं हिला नहीं क्योंकि मुझे सिया को जगाना नहीं था, इसलिए मैं आराम से बैठा रहा।

"बेबी, मुझे वाशरूम जाना है।" सिया ने मुझसे कहा।

"चलो।" मैं उसे ट्रेन के डब्बे में बने वाशरूम में लेकर गया। वो अंदर गई, मैं उसका इंतजार वहीं बाहर खड़े होकर कर रहा था। थोड़ी देर बाद वो बाहर आई, तभी वो व्यक्ति, जिससे मैं टकराया था, वहाँ आ गया। सिया ने उसे देखा और फिर मेरी तरफ देखा। मैं समझ गया, सिया क्या बोलना चाह रही है। "बढ़ा लूँगा मैं भी," मैंने धीमे स्वर में कहा। फिर हमलोग आकर अपनी सीट पर बैठ गए। थोड़ी ही देर बाद एक स्टेशन पर ट्रेन रुकी। मैंने वहाँ चायवाले से दो कप चाय ली और हम दोनों ने चाय पी। कुछ देर में वहाँ से ट्रेन चली, फिर हमलोग बातें करते-करते पुर्णीया स्टेशन पहुँच गए।

ट्रेन के रुकते ही तीन कांस्टेबल मेरे डिब्बे में मुझे ढूंढते हुए आए। मुझे देखते ही एक कांस्टेबल ने मुझसे पूछा-

"आप समर प्रताप यादव साहब हैं?"

"हाँ, मैं ही हूँ।"

"जय हिंद, जनाब! आईजी साहब ने हमें आपको लेने भेजा है।"

उन्होंने मेरा सारा सामान उठाया और ट्रेन से बाहर लेकर आए।

"जनाब, आप और मेम साहब चलिए बाहर, जीप खड़ी है, हम सामान उठा लेते हैं।"

मैं सिया के साथ स्टेशन से बाहर आया। बाहर दो पुलिस की जीप खड़ी थी। एक जीप में पहले से ड्राइवर मौजूद था। उसने हमें अपनी जीप में बैठने का इशारा किया। हमने जीप के बीच वाली सीट पर जाकर बैठा। सभी कांस्टेबल ने सामान को दूसरी जीप में डाला और वहाँ से पुलिस लाइन के लिए हम रवाना हो गए। पुलिस लाइन पहुँचते ही एक कांस्टेबल हमें एक क्वार्टर की ओर ले गया, जोकि दूसरी मंजिल पर था। हम सीढ़ी लेकर उस क्वार्टर में गए, पीछे-पीछे सभी कांस्टेबल सामान लेकर आए।

कांस्टेबल ने अपनी जेब से चाबी निकालकर दरवाजे का ताला खोला, और हम अंदर चले गए। मुझे खुशी हुई कि इस बार वन बेडरूम हॉल नहीं, बल्कि टू बीएचके फ्लैट मिला है।

"समर साहब, प्रमोशन तो हुई है आपकी, हाँ?" सिया ने मेरा मुस्कुराता चेहरा देख कर कहा। सिया के यह बोलते ही मैं थोड़ा और मुस्कुराया।

"जनाब, ये रही चाबी, ये रहा मेरा नंबर। कोई भी जरूरत हो तो मुझे कॉल कर लेना।" कांस्टेबल ने मुझे घर की चाबी और नंबर लिखा एक कागज़ देते हुए कहा।

"ठीक है।"

"नाम क्या है?" मैंने कांस्टेबल से पूछा।

"जनाब, अभिजीत।"

"ठीक है, अभिजीत, कोई जरूरत होगी तो मैं तुम्हें कॉल करूंगा।"

"जय हिंद, जनाब! चलता हूँ मैं।"

"ठीक है।"

सभी कांस्टेबल चले गए थे। हमने थोड़ी देर वहीं रखी कुर्सी पर बैठकर बिताई। फिर सिया एक बैग लेकर कमरे में गई, कपड़े बदलकर आई और सामान अनपैक करने लगी। मैं सोच रहा था कि इतने सामान को हम दोनों मिलकर कैसे एडजस्ट करेंगे, लेकिन तभी किसी ने दरवाजे पर आकर घंटी बजाई। मैंने उठकर दरवाजा खोला और सामने एक अधेड़ उम्र की महिला खड़ी थी।

"साहब, मैं यहाँ काम करने आई हूँ। बड़े साहब ने बोला है आपके यहाँ काम करने को," उस औरत ने कहा।

मैं ये सुनकर बहुत खुश हुआ, बता नहीं सकता, कितना खुश। अब मेरी बीवी को आराम मिलेगा।

"आओ, अंदर आओ," मैंने उस औरत से कहा।

"देखो, कौन आया है, सिया। यू हैव ए हेल्पर नाउ!" मैंने खुशी की सीमा में गोते लगाते हुए सिया से कहा।

"वाह, समर साहब! प्रमोशन तो हुई है आपकी," सिया ने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा।

"सब कुछ आपके लिए, बेगम साहिबा," मैंने कुर्सी पर जाकर बैठते हुए कहा।

"अच्छा जी।" फिर एक विराम लेकर सिया ने कहा, "दीदी, ये सारा सामान खोलकर यहाँ किचन में रखना है।"

"जी, मेम साहब, रखती हूँ।"

मैं बहुत खुश था। मेरे प्रमोशन से ज्यादा मुझे इस बात की खुशी थी कि सिया को एक अच्छा सा बड़ा घर मिल गया था, जिसमें सारी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। गया में मेरे पास इतनी सुविधाएँ नहीं थीं और हमारा क्वार्टर भी बहुत छोटा था। मैं हमेशा सोचता था कि

किसी तरह एक अच्छा घर लेना है। खरीद नहीं सकूं, तो किराए पर ही ले लूं, लेकिन मेरे खर्चों के कारण नहीं ले पाता था।

कुर्सी पर बैठकर ये सोचते-सोचते मेरी आँख लग गई और मैं वहीं सो गया। काफी देर बाद सिया ने आकर मुझे जगाया।

"अरे, उठो! जाकर नहा लो," सिया ने मुझे हिलाते हुए कहा।

"क्या हो गया?" मैंने नींद से उठकर सिया को सामने देखते हुए कहा।

"खाना बन गया है, जनाब! जाकर स्नान कर लें और भोजन ग्रहण करें।"

"वाह, बेगम साहिबा! खाना भी बना लिया आपने?"

"हाँ, दीदी ने मदद कर दी, तो जल्दी हो गया। अब जाकर स्नान कर लो।"

"जी, बिल्कुल।" मैं चला गया स्नान करने।

"तुम भी फ्रेश हो जाओ, स्नान कर लो," मैंने वाशरूम से बाहर आकर कहा।

"मुझे अभी काम है, तुम खाना खा लो।"

"अरे, दीदी कर लेंगी। तुम फ्रेश होकर खा लो। क्यों, दीदी, कर लोगी ना आप?"

"हाँ, साहब।"

"देखो, कर लेंगी वो। बोलो, दीदी, इसको।"

"हाँ, मेमसाब, मैं कर लूंगी।"

"ठीक है, जाती हूँ।"

सिया फ्रेश होकर आई, और फिर हमने साथ बैठकर खाना खाया। भोजन के बाद हम दोनों ने काफी देर तक गप्पें मारीं। तभी मेरे मन में ख्याल आया कि क्यों न आईजी साहब से मिल लिया जाए। कल से मुझे ज्वाइन करना ही है, आज ही मिल लेना बेहतर होगा। मैंने अभिजीत को कॉल लगाया और उसे आने को कहा। उसने कहा कि एक घंटे में आ रहा हूँ।

एक घंटे बाद, दरवाजे की घंटी बजी। दीदी ने जाकर गेट खोला और सामने अभिजीत खड़ा था। मैंने उसे अंदर आने को कहा। वह अंदर आकर मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गया, और हम बातें करने लगे। थोड़ी देर बाद दीदी ट्रे में दो कप चाय लेकर आई। अभिजीत और मैंने चाय पी, और फिर मैंने उससे आईजी साहब के ऑफिस चलने को कहा।

मैंने अच्छे कपड़े पहनकर अभिजीत के साथ जीप में बैठकर आईजी साहब के ऑफिस के लिए रवाना हो गया। रास्ते में अभिजीत ने मुझे शहर की सैर करवाई और इसके बारे में कई बातें बताईं। कुछ देर बाद हम आईजी के ऑफिस पहुंचे। मैंने आईजी साहब के सामने जाकर उन्हें सलाम किया, और अभिजीत ने भी मेरे पीछे से सलाम किया।

"आइए, समर प्रताप जी, बैठिए," आईजी ने मुझसे कहा।

"सोचा, जनाब, कल से ज्वाइन तो करना ही है, आज ही मिल आते हैं। बैठे-बैठे बोर हो रहे थे," मैंने कुर्सी पर बैठते हुए आईजी साहब से कहा।

"अच्छा किए, आ गए।"

"जी, जनाब।"

"देखिए, एसटीएफ की टीम हाल ही में नियुक्त की गई है। उस टीम को हेड करने के लिए मुझे आपसे बेहतर व्यक्ति नहीं दिखा।"

"शुक्रिया, जनाब, इस मौके के लिए।"

"आपको यहाँ क्यों बुलाया गया है, आपको ज्ञात है?"

"अपराध खत्म करने के लिए, जो कि मेरा काम है।"

"वो तो है, लेकिन इस शहर में एक ऐसा अपराधी है जिसने सबके नाक में दम कर रखा है और जिससे पूरे शहर और प्रशासन को भी खतरा है," आईजी ने बड़ी गंभीरता से कहा।

"कौन?" मैंने पूछा।

"अवधेश सिंह नामक एक अपराधी है, जिसने बहुत आतंक मचा रखा है। मिश्रा जी नाम के एक एसपी थे, बहुत ईमानदार और जज़्बाती अफसर थे, उनकी भी हत्या कर दी उस कमीने ने।"

"जी, उनके बारे में सुना था।"

"यह आपके पीछे देख रहे हैं, कांस्टेबल अभिजीत।"

"हाँ।"

"इसके पिता भी अवधेश सिंह से हुई मुठभेड़ में ही जख्मी हुए थे। अस्पताल जाते-जाते दम तोड़ दिया। ये जिद्द करके बोला कि 'साहब, हमें समर साहब के साथ ही रहने दीजिएगा। अवधेश सिंह का खात्मा अपने आँखों से देखना चाहते हैं और उसमें शामिल भी होना चाहते हैं।' इस वजह से इसको आपके पास भेजा है।"

"जनाब, अवधेश सिंह ढेर होगा, मेरा ये वादा है आपसे, अभिजीत से, इस शहर की जनता से और हर उस इंसान से जिसने भी अवधेश सिंह की वजह से कुछ खोया है।"

"सबको यही चाहिए, बस कुछ नहीं। कल मीडिया में यही बयान दे दीजिए। अवधेश सिंह आपके इर्द-गिर्द भटकना शुरू कर देगा। अगर आपको शांति से करना है, तो फिर शांति से कीजिए।"

"नहीं जनाब, बोलकर वार करेंगे।"

"इससे अच्छा और क्या हो सकता है," आईजी ने मुस्कुराते हुए कहा।
तभी आईजी का टेलीफोन बजा। आईजी कुर्सी खिसकाकर टेलीफोन के पास जाकर रिसीवर उठाते हैं।

"हाँ, विधायक जी! हाँ, आ गए हैं वो तो! अच्छा, भेजते हैं," कहकर आईजी ने रिसीवर रख दिया। आईजी ने इधर से जो भी कहा, मैंने बस यही सुना।

"समर जी, आपको यहाँ किसके कहने पर बुलाया गया है, आपको मालूम है?"

"नहीं जनाब," मैंने कहा।

"यहाँ के विधायक हैं चंद्रकांत यादव। उन्हें अपराध-मुक्त शहर चाहिए, इसलिए उन्होंने आपको बुलवाया है। अभिजीत, इन्हें विधायक जी के आवास पर लेकर जाओ।"

"नहीं जनाब, रहने दीजिए। मुझे मेरे काम से मतलब है, क्या मिलना-जुलना," अभिजीत हाँ में जवाब देता उससे पहले मैंने आईजी से कहा।

"अरे, मिल आइए। अच्छे नेता हैं वो।"

"ठीक है, जनाब।"
मैं अभिजीत को साथ लेकर आईजी साहब के ऑफिस से बाहर निकलता हूँ और उसे विधायक चंद्रकांत यादव के घर चलने को कहता हूँ। लगभग 20 मिनट बाद हम लोग चंद्रकांत यादव के यहाँ पहुँचते हैं। चंद्रकांत यादव का बॉडीगार्ड हमें अंदर लेकर जाता है।

"आइए, समर प्रताप बाबू, बैठिए," चंद्रकांत ने मुझसे कहा।
मैं वहीं चंद्रकांत के सामने सोफे पर बैठ गया। अभिजीत खड़ा था, मैंने उससे भी बैठने को कहा। वह कतरा रहा था, लेकिन जब चंद्रकांत ने उसे बैठने को कहा, तो वह भी बैठ गया।

"और कोई समस्या तो नहीं हुई आने में?"

"नहीं, विधायक जी, कोई समस्या नहीं हुई।"

"हमको वो बड़ा अच्छा लगता है, वो लोग क्या बुलाते हैं आपको?"

"Spy," चंद्रकांत के बॉडीगार्ड ने कहा।

"हाँ-हाँ, spy, बड़ा अच्छा लगता है। आपका काम भी हमको बड़ा अच्छा लगता है, कैसे आप अपराधी को जासूस की तरह ढूंढकर खत्म कर देते हैं। Spy का मतलब जासूस ही होता है ना?"

"हाँ, वही होता है।"

"अच्छा, समर बाबू, आपको spy क्यों बुलाने लगे लोग?"

"वो मेरा नाम समर प्रताप यादव है ना, तो तीनों के पहले अक्षर को जोड़कर सब बुलाने लगे।"

"छोड़िए ये सब। खाना क्या बनवाएँ? मटन, मुर्गा, मछली? क्या खाना पसंद करेंगे, समर बाबू?"

"नहीं-नहीं, इन सब की जरूरत नहीं है।"

"मना मत कीजिए, समर बाबू। वो क्या है ना, हम बिहारी लोग मेहमानों की खातिरदारी में कोई कसर नहीं छोड़ते।"

"आज मेरा उपवास है, विधायक जी," मैंने बहाना मारा।

"लीजिए, सब गड़बड़ हो गया ना।"

तब तक उसका एक नौकर चाय की ट्रे लेकर आता है और वहीं सामने टेबल पर रखता है।

"चाय तो पी सकते हैं ना, समर बाबू?"

"हाँ, चाय पी लेंगे," मैंने चाय का कप उठाया और चाय पीने लगा।

"समर बाबू, एक बात कहें?"

"हाँ, बोलिए।"

"अपराध को न, इस शहर से मिटा दीजिए।"

"मेरा काम ही वही है।" मैंने कहा।

"हाँ, लेकिन आप अगर अवधेश सिंह को खत्म कर देंगे ना, तो सारे अपराधी हाथ-पैर समेट के बैठ जाएंगे।"

"वो तो हो ही जाएगा।"

"अब चलते हैं, विधायक जी," मैंने चाय खत्म करके कप रखते हुए कहा।

"थोड़ा और बैठते तो ठीक रहता, वैसे आपकी जो इच्छा हो।"

"अभी चलते हैं, विधायक जी। फिर कभी।"

"हाँ, समर बाबू, अपना घर ही समझिए।"

मैं वहाँ से निकल गया। विधायक की बातों से मैं परेशान हो गया था, बहुत चिपकू सा लगा मुझे वो। रास्ते में मुझे एक मिठाई की दुकान दिखी, तो मैंने अभिजीत को गाड़ी रोकने को कहा और गाड़ी से उतरकर कुछ मिठाई ले ली सिया के लिए और अपने क्वार्टर के लिए रवाना हो गया।

क्वार्टर पहुँचकर, मैंने अभिजीत को जाने को कहा और दूसरी मंजिल पर जाकर दरवाजे पर लगी बेल के बटन को दबाया। अंदर से सिया ने आकर दरवाजा खोला। काम वाली दीदी चली गई थी, सिया घर पर अकेले ही थी।

"ओह, तुम आ गए," सिया ने आँख मलते हुए कहा।

"हाँ, एक चिपकू आदमी से मिलकर आया हूँ।"

"कौन?"

"यहाँ का एक विधायक है, चंद्रकांत यादव।"

"उससे मिलने क्यों गए थे?"

"आईजी साहब भेजे थे।"

"ओह।"

"वो बोल रहे थे कि उस विधायक ने ही मुझे बुलवाया है।"

"कोई बुलवाए हो, उससे क्या? तुम खुश हो ना, बस हो गया।"

"हाँ, मैं तो खुश हूँ। देखो, तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।"

"क्या है?"

"तुम्हें क्या पसंद है?"

"मिठाई।"

"तो ये लो, वो भी काजू कतली और बर्फी।"

"आई लव यू, बेबी।"

"लव यू टू।"

सिया ने मेरे हाथ से मिठाई लेते हुए मुझे गले लगाया और मिठाई लेकर किचन में गई और मुझे कपड़े बदलने को कहा। फिर वह प्लेट में मिठाई, कुछ बिस्किट, और पानी लेकर आई। उसने प्लेट को हाल में टेबल पर रखा, फिर हमने बैठकर मिठाई खाई और काफी देर तक बातें कीं। बातें करते-करते रात हो गई थी।

"तुम्हारी बातें खत्म नहीं होंगी, मुझे खाना बनाना है," सिया ने मुझसे कहा।

"आज सिर्फ तुम खाना नहीं बनाओगी, मैं भी तुम्हारे साथ खाना बनाऊंगा।"

"वाह, आज शेफ समर प्रताप यादव उर्फ Spy भी खाना बनाएंगे।"

"जी, बिल्कुल।"

"तो चलिए, मिस्टर शेफ।"

हम दोनों ने मिलकर खाना बनाया, जिसमें मेरा योगदान एक हेल्पर का था। मैं चावल और पानी उबालने के सिवाय कुछ नहीं कर सकता। ऐसा नहीं है कि मुझे खाना बनाना

नहीं आता, बस मैं अपनी बीवी से अच्छा खाना नहीं बना सकता। खाना बनने के बाद हमने साथ बैठकर सुकून से खाना खाया, फिर खाना खाकर, हम दोनों बेडरूम में चले गए। काफी बातें कीं और सो गए।

****

12 मार्च 2002

सुबह जब मैं सोकर जगा, तो देखा कि सिया किचन में नाश्ता बना रही थी। मैंने ब्रश किया और वाशरूम चला गया। नहा-धोकर जब तक मैं बाहर आया, सिया नाश्ता लगाकर मेरा इंतजार कर रही थी। मैं फटाफट कपड़े पहनकर आया और सिया के साथ बैठकर नाश्ता करने लगा। थोड़ी ही देर में अभिजीत किसी और अफसर के साथ आया।

"जनाब, ये शंकर साहब हैं," अभिजीत ने मुझसे कहा।

"जय हिंद, जनाब," शंकर ने मुझे सलाम करते हुए कहा।

"जय हिंद।"

"जनाब, आपके बारे में काफी सुना है। आपसे मिलकर खुशी हुई," शंकर ने मुझसे कहा।

"क्या सुना है, शंकर, मेरे बारे में?" मैंने नाश्ता करते हुए पूछा।

"यही, जनाब, आप जहाँ भी गए, वहाँ अपराध खत्म कर दिए हैं।"

"यहाँ भी करेंगे, शंकर। फिलहाल तो मुझे ऑफिस ले चलो।"

"जी, जनाब।"

नाश्ता करके हम तीनों नीचे आए, जहाँ एक काले रंग की स्कॉर्पियो खड़ी थी, जो सिर्फ मेरे उपयोग के लिए थी। मैं स्कॉर्पियो देखकर काफी खुश हुआ और मन ही मन सोचा, "समर बाबू, प्रमोशन तो हुई है।" फिर मैंने ऊपर देखा, तो बालकनी में खड़ी सिया मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी। मैंने भी उसे देखकर मुस्कुराया और समझ गया कि वह बोलना चाह रही थी, "प्रमोशन तो हुई है।"

शंकर ने गाड़ी का दरवाजा खोला, मैं जाकर गाड़ी में बैठा। मेरे पीछे वाली सीट पर शंकर बैठा, और अभिजीत ने गाड़ी चालू की। फिर हम ऑफिस के लिए रवाना हो गए। वहाँ पहुंचते ही मैंने देखा कि सामने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था 'रामनगर थाना, पुर्णीया'।

"यह रामनगर थाना क्यों लेकर आए हो?" मैंने अभिजीत से पूछा।

"जनाब, तीसरी मंजिल पर ही अपना ऑफिस है। तीसरी मंजिल खाली पड़ी थी।"

"खाली थी, तो एसटीएफ का ऑफिस बना दिया।"

"हाँ , जनाब।"

"वाह, क्या बात है, चलो फिर।"

मैं उन दोनों के साथ तीसरी मंजिल पर एसटीएफ ऑफिस गया। वहाँ बस एक कमरा था, जो मेरा केबिन था। बाकी पूरा हॉल था, जहाँ बैठकर पूरी टीम काम करती और एक लॉकअप। वहाँ उपस्थित सभी अफसरों से मिला और सभी से परिचय हुआ।

"क्या चल रहा है?" मैंने उन सभी से पूछा।

"अपराध बढ़ते जा रहे हैं, जनाब," एक अफसर ने कहा।

"कोई बात नहीं, खत्म कर देंगे अपराधियों को। इसी वजह से तो हमारी टीम इकट्ठी हुई है।"

"जनाब, ये अवधेश सिंह है न, इससे बड़ा अपराधी इस शहर में कोई नहीं है," शंकर ने मुझसे कहा।

"शुरुआत उससे ही करेंगे," मैंने कहा।

काफी देर तक मैंने उनसे बातें कीं और अवधेश सिंह के बारे में सारी जानकारी ली, लेकिन उनके पास भी कोई ठोस ठिकाना नहीं था। तभी मेरा सेलफोन बजा। मैंने अपनी जैकेट से सेलफोन निकाला और कॉल रिसीव किया।

"हेलो, समर प्रताप जी, हम आईजी पुर्णीया बोल रहे हैं।"

"जय हिंद, जनाब! बोलिए जनाब," मैंने कहा।

"बोल रहे थे कि एक कॉन्फ्रेंस किया जाए, मीडिया को बुलवाकर। एसपी साहब भी आ रहे हैं।"

"बिलकुल, जनाब। मैं आ रहा हूँ।"

मैं अभिजीत और शंकर के साथ आईजी के ऑफिस पहुंचा। वहाँ एसपी साहब भी उपस्थित थे। उनसे मेरा परिचय हुआ और हमने काफी चीजों के बारे में बात की।

"जनाब, मीडिया वाले नीचे इंतजार कर रहे हैं," शंकर ने आकर हमसे कहा।

मैं, आईजी साहब और एसपी साहब तीनों नीचे जाकर मीडिया के सवालों का जवाब देने लगे।

"सर, करीब एक साल होने को है, अवधेश सिंह को पुलिस गिरफ्तार क्यों नहीं कर पाई है?" एक रिपोर्टर ने आईजी साहब से पूछा।

"वह हमेशा अपना ठिकाना बदलता रहता है। एक बार पकड़ा गया, तो मुठभेड़ हुई, जिसमें हमारे अफसर की जान गई।"

"सर, इस नाकामी का कारण क्या है?"

"नाकामी तो नहीं बोल सकते, उनके पास AK-47 जैसे आधुनिक हथियार थे, और हमारे पास सिर्फ राइफल। फिर भी हमारी पुलिस ने मुकाबला किया, लेकिन अब समर प्रताप जी आए हुए हैं। अब वह नहीं बचेगा।"

"आप अवधेश सिंह के बारे में क्या कहना चाहेंगे? एसपी मिश्रा की हत्या के आरोप समेत कई और आरोप हैं उस पर। उसकी गिरफ्तारी कब होगी?" मीडिया से आई हुई एक महिला ने मुझसे पूछा।

"गिरफ्तारी नहीं, अवधेश सिंह का खात्मा होगा। ऐसे लोगों को समाज में रहने का कोई हक नहीं है," मैंने जवाब दिया।

"इसके लिए आप क्या कदम उठाने वाले हैं?" उसी महिला ने मुझसे पूछा।

"कदम उठाने वाले नहीं हैं, कदम उठ चुका है। कुछ दिनों में आप ही अपने अखबार और चैनल पर खबर देंगे कि अवधेश सिंह का खात्मा हो चुका है।"

कॉन्फ्रेंस खत्म करके मैंने आईजी साहब और एसपी साहब से विदा ली और अभिजीत, शंकर के साथ अपने एसटीएफ ऑफिस आ गया। वहाँ आकर हमने काफी चर्चाएँ कीं अवधेश सिंह के द्वारा किए गए अपराधों के बारे में। मैंने उसकी फाइल भी पढ़ी। हमारी टीम के पास उसकी एक तस्वीर थी।

"क्या गोरा-चिट्टा आदमी है अवधेश सिंह, तुमको फिल्मों में ट्राई करना चाहिए था," मैंने मन ही मन उसकी तस्वीर को देखते हुए कहा।

शाम ढलते ही, अभिजीत और शंकर ने मुझे मेरे क्वार्टर पर ड्रॉप किया। फिर मैंने सिया के साथ बैठकर बातें कीं। हमने खाना बनाया, खाया, और फिर बातें करते-करते सो गए।

****

13 मार्च 2002

करीब रात के 12:00 बज रहे होंगे। मुझे नींद में पटाखों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। तभी सिया ने मुझे जगाया और कहा, "कोई गोली चला रहा है।" मैंने अपने दराज से पिस्टल निकालकर उसे लोड किया और सीढ़ियों से नीचे की ओर भागा। जब तक मैं नीचे आया, वे जा चुके थे। RX100 मोटरसाइकिल पर दो अपराधी सवार थे। मोटरसाइकिल पर पीछे बैठे हुए अपराधी ने गोली चलाई थी। फिर मैं झट से ऊपर गया और सिया से मेरा सेलफोन लाने को कहा। सिया ने मुझे सेलफोन लाकर दिया। मैं शंकर को कॉल लगाने ही वाला था, तभी मेरे नंबर पर एक अनजान नंबर से कॉल आई। मैंने कॉल रिसीव किया और सेलफोन को कान से लगाया।

"हेलो, का हाल समर बाबू?" अगले ने बोला।

"कौन?" मैंने पूछा।

"अरे, आप तो हमको भूल गए। सुबह ही तो याद किए थे ना आप, समर बाबू? क्या दिखा रहा था टीवी वाला सब? spy ने कहा, अवधेश सिंह का खात्मा होगा।"

"ओह, तो अवधेश सिंह हो?"

"अवधेश सिंह नहीं, यमराज का दूत मानो तुम समर बाबू। हमको पकड़ने का सपना छोड़ दो, नहीं तो जिंदा दफना दिए जाओगे। अभी तो ये एक नमूना पेश किए थे। एसपीया था ना वो मिश्रा, पता है ना क्या हुआ उसका ?"

"सुनो अवधेश सिंह, एक तो मैं मिश्रा जी नहीं हूँकि तुझे पकड़ने जाऊंगा, मैं तुझे मारने आऊंगा।"

"अरे बंबईया बाबू, फिल्म नहीं चल रहा यहाँ । बहुत हो गया तुम्हारा डायलॉगबाजी। हिम्मत है तो आ जा, मार दे, वरना हम तो तुमको मारेंगे ही।"

मैं आगे कुछ बोल पाता, उससे पहले उसने कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया। फिर मैंने शंकर को कॉल करके अपने पास बुलाया। थोड़ी देर में शंकर अभिजीत के साथ आया। मैंने शंकर को अवधेश सिंह का नंबर दिखाया और पूछा, "ये कौनसी कंपनी का सिम हो सकता है?"

"जनाब, ये बीएसएनएल है," शंकर ने कहा।

"पक्का?"

"हाँ जनाब, पक्का। मेरे पास भी बीएसएनएल है और इसी अंक से मेरा भी नंबर शुरू होता है।"

मैंने तुरंत बीएसएनएल कस्टमर केयर में कॉल लगाया। बीएसएनएल की महिला अधिकारी ने मुझसे बात की। मैंने उनसे अनुरोध किया कि मुझे इस नंबर की लोकेशन जाननी है, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया। फिर मैंने उन्हें बताया कि ये एक एसपी का हत्यारा है और बहुत ही बड़ा अपराधी है। तो उन्होंने मुझे बताया कि अभी वो ये जानकारी नहीं दे सकतीं, क्योंकि वहाँ कोई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित नहीं थे। वह एक जूनियर थीं, उसे इन चीजों को ऑपरेट करने की अनुमति नहीं थी। उसने कहा, "सुबह आपको जानकारी दे दी जाएगी।" तो मैंने उन्हें अपना नंबर नोट कर लेने को कहा ताकि वे मुझे वापस कॉल करके जानकारी दे सकें।

मैं अपने हॉल में सोफे पर बैठकर सुबह का इंतजार करने लगा। सिया कमरे में जाकर सो गई। अभिजीत और शंकर को मैंने जाने को कहा, तो उन्होंने साफ मना कर दिया।

उन्होंने मेरे साथ ही लोकेशन की जानकारी का इंतजार करने का फैसला कर लिया। इंतजार करते-करते हम तीनों की आंख लग गई।

सुबह के करीब 5:00 बजे मेरा सेलफोन बजा। अचानक मेरी नींद खुली। मैंने देखा कि किसी अनजान नंबर से कॉल आ रहा है। मैंने कॉल रिसीव किया।

"मैं अनिल, बीएसएनएल से बात कर रहा हूं। क्या मेरी बात समर प्रताप यादव से हो रही है?" अगले ने पूछा।

"जी हाँ ।"

"सर, आपने जो रीक्वेस्ट डाली थी एक नंबर की लोकेशन के लिए, क्या मैं आपको डिटेल फैक्स कर दूं?"

"फैक्स छोड़िए, आप बस बता दीजिए," मैंने तेजी से कहा, क्योंकि मुझसे सब्र नहीं हो रहा था।

"सर, ये शनेली एक जगह है, गेड़ाबाड़ी से लगा हुआ है। जो गेड़ाबाड़ी प्रवेश करते ही पहला बीएसएनएल टावर है, उससे ही ये नंबर सिग्नल पकड़ता है।"

"धन्यवाद, अनिल जी।"

मैंने तुरंत कॉल डिस्कनेक्ट किया और शंकर को लोकेशन के बारे में बताया।

"जनाब, ये तो एक छोटा सा इलाका है, जहाँ पर वो हो सकता है।"

"कैसे ढूंढा जाए उसको? चलो, चलकर ही देखते हैं।"

"जनाब, मेरे कुछ खबरी उस इलाके में भी हैं। मैं उनसे बात करता हूं। तब तक बाकी अफसर भी आते ही होंगे, मैंने कॉल कर दिया था।"

मैं शंकर की बातों को सुनकर रुक गया। अच्छा यही होगा कि कोई हमें पहले ही पता लगाकर बता दे कि यहाँ अवधेश सिंह का ठिकाना है, तो हम अच्छे तरीके से उस पर वार कर पाएंगे।

थोड़े देर बाद शंकर को एक खबरी ने कॉल किया।

"जनाब, एक खबरी ने बताया है कि शनेली में एक जगह है, जहाँ काफी अपराधिक छवि वाले लोगों का आना-जाना लगा रहता है। वहाँ अवधेश सिंह हो सकता है। लेकिन अगर वो वहाँ होगा, तो उसके पास काफी कारगर हथियार होंगे। हमें भी बंदोबस्त करके जाना चाहिए।"

"आईजी साहब को कॉल करो," मैंने शंकर से कहा।

शंकर ने साहब को कॉल लगाया और मुझे अपना सेलफोन दिया।

"जय हिंद, जनाब! मैं समर प्रताप।"

"हाँ , बोलिए समर प्रताप जी।"

"जनाब, अवधेश सिंह के ठिकाने का पता लगा लिया है। रात को मेरे क्वार्टर पर हमला हुआ था। अवधेश सिंह ने मुझे कॉल भी किया था, न्यूज देखकर। मैंने उसके फोन नंबर से उसके ठिकाने का पता लगाया है।"

"आपको पक्की जानकारी है?"

"जी जनाब, शंकर ने कुछ खबरी से भी पता किया। वहाँ कुछ तो अजीब चल रहा है।"

"जाइए, धर लीजिए उसे।"

"जनाब, एक विनती थी आपसे।"

"बताइए।"

"मुझे और अफसरों की जरूरत पड़ेगी, हथियारों की भी।"

"भेजते हैं।"

मैं शंकर और अभिजीत के साथ नीचे आया। थोड़ी देर में और भी अफसर आए, जो अलग-अलग थानों से आए हुए थे। एसटीएफ की 15 लोगों की टीम थी, जो जांबाज सिपाही थे। हम शनेली के लिए निकल गए। मैंने शंकर को बोला था, "खबरी को रास्ते में आने को कहो।" रास्ते में खबरी मिला और सारी जानकारी दी। शंकर को इस इलाके के बारे में अच्छे तरीके से पता था, इसलिए उसने मुझे सब रास्तों के बारे में बताया। फिर हम तीन टीम में बंट गए। अवधेश सिंह के ठिकाने के पास पहुंचते ही मैंने दो टीम को आगे से भेजा, और मैं, शंकर, अभिजीत और दो एसटीएफ अफसर पीछे की तरफ से गए। अगर आगे से हमला होने पर कोई भागेगा, तो पीछे ही भागेगा और यहाँ हम उसे धर दबोचेंगे। लेकिन जब आगे से पुलिसकर्मियों ने गोली चलाना शुरू किया, तो अवधेश सिंह के गुर्गों ने भी जवाब में गोली चलाना शुरू कर दिया, वो भी आधुनिक हथियारों से। मैंने कुछ देर सोचा और शंकर के हाथ से एसएलआर ली, जो एक कारगर हथियार थी। मैंने एसएलआर लोड किया और दीवार कूदकर अंदर घुस गया। मेरे पीछे-पीछे शंकर और बाकी अफसर भी आए। मेरे गोली चलाने से पहले, शंकर ने मुझे एक आदमी की तरफ इशारा करते हुए कहा, "ये अवधेश सिंह का राइट हैंड है, छुट्टन।" बस फिर मैंने एसएलआर उठाकर गोली चलाना शुरू किया। एक ही राउंड में सबको मार गिराया, बस छुट्टन को छोड़कर। छुट्टन मेरे ऊपर AK-47 ताने खड़ा था, और मैं उसके ऊपर अपनी एसएलआर। छुट्टन काफी लंबा था, उसे देखते ही कोई भी उसे पहलवान ही कहता।

"रे पुलिसवा, हम तो तुम्ही को मारने के लिए रुके हैं। तुमको क्या लगा, अवधेश भैया को पता नहीं लगेगा कि तुम यहाँ आओगे?" छुट्टन ने मेरी आंखों में देखते हुए कहा, और मैं देख पा रहा था कि छुट्टन ट्रिगर पर उंगली रख रहा है। मैं सोच रहा था, इसे मार दूं, तो कुछ हाथ नहीं लगेगा अवधेश सिंह के बारे में, और अगर ऐसे खड़ा रहा, तो ये मुझे मार देगा। तभी मेरे बगल से आवाज आई, "फटाक!" मैंने देखा कि छुट्टन के हाथ से AK-47 नीचे गिर गई और छुट्टन अपनी बाईं हाथ को दाईं हाथ से पकड़कर नीचे बैठ गया। दरअसल, शंकर ने उसके हाथ में गोली मार दी थी।

मैंने उसके नजदीक जाकर AK-47 उठाकर बगल में फेंक दिया। छुट्टन को अभिजीत ने हथकड़ी पहनाई। फिर एंबुलेंस आई और 5 लाशों को उठाकर ले गई, जो मेरी गोली से मरे थे। साथ ही छुट्टन को भी सदर अस्पताल में भर्ती कराकर गोली निकलवाई गई।

उस स्थान से हमने दो AK-47 और कई हथियार-गोला भी बरामद किए। मैंने उस स्थान को सील करवाया और शंकर से कहा, "मीडिया को बुलाओ।" शंकर ने कॉल करके कुछ रिपोर्टर और पत्रकारों को बुलाया।

"सर, यहाँ पर अभी पुलिस की किनसे मुठभेड़ हुई है?" एक रिपोर्टर ने मुझसे पूछा।

"ये अवधेश सिंह का ठिकाना है। हमें पता चला कि यहाँ अवधेश सिंह उपस्थित है। हम यहाँ छापा मारने आए। पुलिस को देखते ही अवधेश सिंह के गुर्गों ने AK-47 से गोलियां बरसाना शुरू कर दिया। हमने भी गोली चलाई। हमारी गोली से वे मर गए और हमने अवधेश सिंह के राइट हैंड छुट्टन को गिरफ्तार कर लिया है।"

"यहाँ पर पुलिस को और कोई सुराग मिला है क्या?" दूसरे रिपोर्टर ने मुझसे पूछा।

"कुछ सुराग तो नहीं मिला है, लेकिन हमने दो AK-47 बरामद किए हैं। कुछ और हथियार भी हैं, जैसे कि सिक्सर, मास्केट और हथगोले भी हैं।"

"सर, अवधेश सिंह को कोई मैसेज देना चाहेंगे आप?"

"उस भगोड़े को क्या मैसेज दूंगा, जो मुझे देखकर ही भाग गया।"

"आपको क्या लगता है, अवधेश सिंह कब तक आपके हिरासत में होगा?"

"बहुत जल्द। हमारी एसटीएफ टीम ने बाकी थाना प्रभारियों की मदद से, पुर्णीया से बाहर जाने वाले सारे रास्ते पर नाकाबंदी कर दी है।"

"सर, हमने सुना है कि कल रात आप पर भी हमला हुआ था, किसने करवाया?"

"अवधेश सिंह ने करवाया और कॉल करके भी बताया। शायद वो नहीं बताता, तो आज छुट्टन नहीं पकड़ाता। आज नहीं पकड़ता, लेकिन पकड़ता जरूर।"

मैंने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए वहाँ से सदर अस्पताल चला गया। छुट्टन वहाँ बेड पर लेटा हुआ था, दर्द से कराह रहा था और कुछ बड़बड़ा रहा था।

"क्या बड़बड़ा रहा है ये?" मैंने अभिजीत से पूछा।

"जनाब, तब से बड़बड़ाए जा रहा है, पुलिस कायर है।"

"क्यों बे पहलवान, हम तुझे कायर दिखते हैं?" मैंने छुट्टन से पूछा।

"कायर नहीं हो तो पीछे से क्यों वार किया?"

"अबे पहलवान, उसे कायर नहीं कहते, उसे दिमाग का उपयोग करना कहते हैं।"

पहलवान को थोड़ी खरी-खोटी सुनाने के बाद, मैं डॉक्टर के पास गया और उनसे पूछा, "इस पहलवान को कब यहाँ से ले जा सकते हैं?" तो उन्होंने कहा, "शाम को ले जा सकते हैं।" मैंने छुट्टन के पास सिक्योरिटी बढ़ा दी ताकि उसे कोई नुकसान न पहुँचा सके या फिर वो किसी को नुकसान न पहुँचा सके। फिर मैं अस्पताल से निकलकर बारी-बारी से जाकर हर एक चेक पोस्ट पर रिपोर्ट लेता था। कुछ इसी तरह शाम हो गई। फिर मैं अभिजीत और शंकर के साथ अस्पताल जाकर छुट्टन पहलवान को साथ लेकर एसटीएफ ऑफिस के लिए निकल गया। मैंने काफी समय तक उससे पूछताछ की, लेकिन उसने मुंह नहीं खोला। फिर मैंने सोचा, कल देखते हैं, क्योंकि रात हो गई थी। मैंने छुट्टन को कड़ी सिक्योरिटी के बीच रखकर क्वार्टर जाने का सोचा।

अभिजीत और शंकर ने मुझे क्वार्टर छोड़ा। सिया ने आकर दरवाजा खोला। जब मैं अंदर आया, तो देखा कि टीवी पर मेरी ही खबर चल रही थी।

"टीवी कौन लगाया ?"

"मैंने और दीदी ने मिलकर लगाया है। तुम्हारे भरोसे रहते, तो टीवी ऐसे ही पैक रहता।"

"लो, लगा ली हमारी दूरी बढ़ाने वाली वस्तु को। अब रात को तो बात भी नहीं करोगी मुझसे।"

"ऐसी बात नहीं है, बेबी। तुम नहीं रहते, तो अकेले मन नहीं लगता। और तुम भी तो न्यूज में ही दिखते हो, तुम्हें ही देखती हूं।"

"वो तो दिख रहा है।"

"बाय द वे, आज पूरा दिन तुम ही चर्चे में रहे हो।"

"हाँ , वो तो है। चलो अब खाना खाते हैं।"

हमने खाना खाया। उसके बाद बेड पर जाकर थोड़ी बहुत बातें की और सो गए।

****

14 मार्च 2002

मैं सुबह नहा धोकर नाश्ता किया और शंकर, अभिजीत के साथ एसटीएफ ऑफिस चला गया। आज पहलवान को कोर्ट में पेश करना था। हमने बहुत कोशिश की, लेकिन पहलवान ने मुंह नहीं खोला; कोई भी तरकीब उस पर असर नहीं कर पाई।

मैं परेशान होकर अपने केबिन में बैठा हुआ था, तभी मेरे दिमाग में एक तरकीब आई—क्यों न मैं कोर्ट से इसके एक सप्ताह का रिमांड मांगूं। मैंने अपने एक अफसर से एक अर्जी लिखने को कहा और शंकर से कहा, "इसका मेडिकल करवा के इसे कोर्ट लेकर पहुंचो।" मैं अभिजीत और कुछ अफसरों के साथ कोर्ट पहुंच गया। कुछ देर बाद शंकर भी छुट्टन का मेडिकल करवा के उसे कोर्ट लेकर पहुंच गया। छुट्टन को कोर्ट में पेश किया गया, और जज साहब के सामने मैंने रिमांड की अर्जी डाली। जज साहब ने भी अवधेश सिंह के अपराध को देखते हुए छुट्टन की रिमांड की अर्जी मंजूर कर ली। अब एक सप्ताह तक छुट्टन मेरे पास था। छुट्टन को लेकर हम फिर से एसटीएफ ऑफिस गए और सबसे पहले इसकी जमकर कुटाई की, लेकिन हरामखोर मुंह नहीं खोला।

मैं फिर से अपने केबिन में जाकर सोचने लगा कि इस पहलवान का क्या करना चाहिए। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। मैंने शंकर को अपने केबिन में बुलाया।

"क्या हुआ जनाब? परेशान दिख रहे हैं आप?" शंकर ने मुझसे पूछा।

"ये मुंह क्यों नहीं खोल रहा है?" मैंने मायूस होकर कहा।

"जनाब, कुछ ऐसा करें जिससे अवधेश सिंह को नुकसान पहुँचा सकें।"

"बात तो सही कह रहे हो तुम, शंकर। थोड़ा सोचा फिर मैंने शंकर से पूछा, 'धंधा तो कोई होगा ना अवधेश सिंह का?'"

"देसी शराब बनाता है, गांजा की तस्करी करता है।"

"तुम्हारे बहुत सारे खबरी हैं ना? पता लगाओ इसका धंधा कहाँ चलता है और कौन चलाता है।"

"ठीक है जनाब।"

शाम होने से पहले शंकर के एक खबरी ने उसे बताया कि गेड़ाबाड़ी के जानोगिया गांव में उसका देसी शराब बनता है, जो वहाँ के कुछ गांव वाले ही चलाते हैं। जैसे ही शंकर ने मुझे यह खबर दी, मैंने अपनी टीम को लेकर गेड़ाबाड़ी के लिए निकल गया। गेड़ाबाड़ी थाना प्रभारी को साथ लेकर हम जानोगिया गांव चले गए और वहाँ जाकर हमने उस अवेध देसी शराब के अड्डे पर छापा मारा। वहाँ से हमने 100 लीटर देसी शराब बरामद किया और चार लोगों को गिरफ्तार किया। फिर शंकर ने मीडिया को बुलाया और मैंने मीडिया

के सामने आग उगली और थोड़ा क्रेडिट गेड़ाबाड़ी थाना प्रभारी को भी दे दिया, वो भी खुश हो गए। बरामद किए शराब और गिरफ्तार किए गए लोगों को मैंने गेड़ाबाड़ी थाना प्रभारी को सौंप दिया, लेकिन पूछताछ मैंने उनसे भी करी। उनसे पूछताछ के बावजूद कुछ खास पता नहीं चला। उनका कहना था कि छुट्टन ही वहाँ आकर सब देखता था।

हम वापस एसटीएफ ऑफिस आ गए। छुट्टन को भी काफी तोड़ने की कोशिश की, लेकिन वह टूटा नहीं। लेकिन मुझे इस बात की खुशी थी कि अवधेश सिंह मेरे डर से भागा है और आज मैंने उसका नुकसान किया है। आगे तो मैं उसके साम्राज्य को मिटा दूंगा।

आज भी थक हारकर मैं घर आया और खाना खाकर सो गया।

****

15 मार्च 2002

मैं आज सोचकर जगा कि आज कुछ तो करना है इस छुट्टन का और इस अवधेश सिंह का। मैंने फ्रेश होकर नाश्ता किया और ऑफिस चला गया। वहाँ जाकर मैंने अवधेश सिंह के नाम पर जितने केस दर्ज थे, उन सभी फाइलों को निकालकर बैठ गया। मुझे भी नहीं पता था कि मैं क्या कर रहा हूं। कुछ घंटे बाद शंकर मेरे केबिन में आया।

"जनाब, छुट्टन की बीवी आई हुई है, वह उससे मिलना चाहती है।"

मैं भागकर नीचे आया छुट्टन की बीवी के पास।

"नमस्ते जी, मैं समर प्रताप यादव।" मैंने कहा।

"नमस्ते साहब, एक बार मेरे पति से मिलवा दीजिए।"

"मिलवा तो देंगे, लेकिन आपको मेरा एक काम करना होगा।"

"जी साहब, कहिए ना।"

"छुट्टन को कहिए कि वह सरकारी गवाह बन जाए और बता दे कि अवधेश सिंह कहाँ छुपा है। मैं उसकी सजा बहुत ही कम करवा दूंगा।"

"साहब, वह नहीं बताएगा।"

"बहुत परेशानी होगी आपलोगों को। मार खा रहा है, लेकिन बता नहीं रहा।"

"साहब, हम बताते हैं, लेकिन हमारे पति को मत मारिए।"

"आपको पता है?"

"हाँ साहब, हम जानते हैं कि अवधेश भैया कहाँ जा सकते हैं।"

"कहाँ जा सकता है अवधेश?"

"साहब, वह बंगाल में होगा।"

"आप ऐसे कैसे कह सकती हैं?"

"साहब, मेरे पति ने बहुत बार बोला है कि कुछ भी होता, भैया के साथ हम बंगाल चले जाते हैं।"

"बंगाल में कहाँ ?"

"जगह तो नहीं मालूम है साहब।"

"कुछ तो पता होगा, कुछ सुना होगा?"

"साहब, याद नहीं है।"

"याद कीजिए ना, मैडम।"

"हावरा टोली ऐसा कुछ बोला करते थे। हम पढ़े-लिखे नहीं हैं, इसलिए उतना समझ नहीं पाते हैं।" बहुत देर तक सोचने के बाद वो बोली|

मैंने छुट्टन से उसकी पत्नी को मिलने दे दिया और वहीं खड़ा रहा। कहीं वह अवधेश सिंह का कोई मैसेज न देने आई हो और उसके बात करने से कुछ पता चल जाए। छुट्टन से मिलकर उसकी पत्नी चली गई। उसके हावभाव से नहीं लगा कि वह मुझसे झूठ बोल रही थी, लेकिन मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि यह हावरा टोली क्या है—कोई मोहल्ला है या गांव है, क्या है, कुछ समझ नहीं आ रहा था।

मैं अपने केबिन में बैठा था और यही सोच रहा था कि मुझे ख्याल आया कि क्यों न बंगाल का मानचित्र मंगवाया जाए। मैंने शंकर से बोलकर बंगाल का मानचित्र मंगवाया।

"शंकर, बंगाल में हावरा टोली का कुछ समझ आया?" मैंने शंकर से पूछा।

"जनाब, हावड़ा ब्रिज बोल रही होगी वह।"

"नहीं, शंकर। हावरा टोली एक साथ बोली, हो सकता है कोई मोहल्ला या टोला कुछ हो।"

"हाँ जनाब, हो सकता है।"

फिर मैंने मानचित्र खोला। हावड़ा तो मुझे सामने ही दिख रहा था, लेकिन काफी गौर से देखने के बाद मुझे एक छोटा सा इलाका दिखा जिसका नाम था टॉलीगंज। फिर मैंने शंकर को दिखाया।

"हो सकता है जनाब, यही दोनों जगहों में से कहीं हो।"

"लेकिन शंकर मुझे लग रहा है टॉलीगंज, क्योंकि टॉलीगंज छोटा सा इलाका है। वहाँ ही यह रह सकता है। ऐसे लोग इसी तरह के इलाकों में छुपते हैं।"

"हो सकता है जनाब।"

"चलो, आओ जादू दिखाते हैं।"

मैं अपने केबिन से बाहर आया और लॉकअप में छुट्टन के पास गया।

"क्या पहलवान, हावड़ा गए हो कभी?"

"क्या मतलब?"

"अच्छा, छोड़ो। टॉलीगंज गए हो?"

"क्या बोल रहे हैं आप साहब? हमको समझ नहीं आया।" छुट्टन ने घबरा कर जवाब दिया।

"चलो, पहलवान, मेरा काम हो गया है। तुम आराम करो।"

मेरे हावड़ा बोलने पर छुट्टन थोड़ा सा सकपकाया, लेकिन जब मैंने टॉलीगंज बोला तो छुट्टन घबरा गया। इसका मतलब अवधेश सिंह टॉलीगंज में है। मैं जाकर अपने केबिन में बैठ गया और शंकर को बुलाया।

"शंकर, मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँन?" मैंने शंकर से पूछा।

"जी जनाब, क्या हो गया?"

"देखो, अब जो मैं बताने जा रहा हूं, वह काफी गुप्त रहना चाहिए, क्योंकि पुलिस में कोई घूसखोर हो सकता है या हो सकता है वह अवधेश सिंह का ही आदमी हो, जिस वजह से वह कभी पुलिस के गिरफ्त में नहीं आया होगा।"

"हाँ जनाब।"

"अवधेश सिंह बंगाल में है, वह भी टॉलीगंज में। मैं दावे के साथ कह तो नहीं सकता हूं, लेकिन उसे छुट्टन पे भरोसा होगा की ये मुह नहीं खोलेगा, अगर भरोसा होगा इसपे तो वो वहीं होगा।"

"अब करना क्या है जनाब?"

"तुम अच्छे से पहचान लोगे, अवधेश सिंह को सामने आएगा तो?"

"नहीं जनाब, लेकिन अभिजीत पहचान लेगा और वो उसके कुछ आदमी को भी पहचानता है।"

"बुलाओ अभिजीत को।"

अभिजीत मेरे केबिन में आया। मैंने अभिजीत को सारी बातें बताई और अगले दिन मैंने अपने पैसे से उन्हें टॉलीगंज भेज दिया, लेकिन डिपार्टमेंट को सिलिगुड़ी बताया। पैसे का क्या है, बाद में सीक्रेट मिशन बता कर सरकार से ले लूंगा। मुझे बस इस मिशन को गुप्त रखना था। दोनों को मैंने कहा कि उस इलाके में जाकर एक कमरा किराए पर लो और हर जगह गुप्त तरीके से छानबीन करो। जब अवधेश सिंह का पता चले, तो मुझे खबर करना।

****

20 मार्च 2002

मैं सुबह सोकर जगा तो देखा सिया अभी तक सो रही थी। अक्सर वह मेरे जागने से पहले उठकर नाश्ता तैयार रखती थी। मुझे लगा उसकी तबीयत खराब हो गई है। मैंने उसका हाथ छूकर देखा तो बुखार भी नहीं था, लेकिन उसकी नींद खुल गई।

"क्या हुआ बेबी?" मैंने पूछा।

"कुछ भी नहीं।"

"अभी तक सोई हो? मुझे लगा तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है।"

"मेरी तबीयत ठीक है। आपको क्या हुआ महाराज, दो घंटे लेट जगे हैं आप। मैं बोर हो रही थी, इसलिए सो गई।"

"अरे, आज तो मुझे छुट्टन को कोर्ट में पेश करना है।" मैं बेडरूम से वाशरूम की ओर भागते हुए बोला।

थोड़ी देर बाद, मैं वाशरूम से नहा-धोकर निकला। सिया ने नाश्ता लगा रखा था। मैं कपड़े पहनकर नाश्ता करने बैठ गया।

"अच्छा सुनो, वक्त मिले तो घुमा दोगे थोड़ा?" सिया ने मुझसे कहा।

"अच्छा, अवधेश सिंह को पकड़ने के बाद।" मैंने खाते-खाते बोला।

"अगर उससे पहले वक्त मिले तो?"

"कहाँ मिलेगा वक्त?" मैंने सिया को देखते हुए कहा, और उसने मुझे कुछ इस तरह से घूरा कि मैंने डर के मारे बोल दिया, "हाँ , बिल्कुल घुमा दूंगा।"

नाश्ता करके, मैं एसटीएफ ऑफिस पहुंचा। वहाँ जाकर मैंने छुट्टन से कुछ सवाल-जवाब किए। फिर उसे लेकर मैं सदर अस्पताल गया और मेडिकल करवा कर छुट्टन को कोर्ट में पेश किया। इसके बाद उसे पुर्णीया सेंट्रल जेल में डाल दिया।

मैं पुर्णीया सेंट्रल जेल के मुख्य द्वार पर खड़ा था तभी मेरा सेलफोन बजा। मैंने अपनी जेब से सेलफोन निकाला तो देखा शंकर का कॉल आ रहा था। मैंने रिसीव किया।

"जनाब, अवधेश सिंह मेरे सामने है। गोली मार दें क्या?"

"रुको, रुको शंकर। वहाँ गोली मत चलाओ। तुम लोग कहाँ हो?"

"जनाब, यहीं टॉलीगंज स्टेशन के बगल में। हम दोनों चाय पी रहे थे, अवधेश भी यहीं सिगरेट ले रहा है।"

"तुम्हारे बगल में है?" मैंने पूछा।

"नहीं, सामने वाली दुकान में।"

"एक काम करो....."

"जनाब, वह निकल रहा है। बोलिए, यहीं गोली मार देते हैं, फिर हाथ नहीं आएगा ये साला।"

"गोली नहीं चलाना, शंकर। बस उसका पीछा करो और देखो कहाँ जाता है। मैं आईजी साहब से बात करता हूं, टॉलीगंज के आस-पास के थानों से तुम्हें सपोर्ट भिजवाता हूं।"

"ठीक है जनाब, पीछा करते हैं।"

शंकर और अभिजीत ने अवधेश का पीछा करना शुरू कर दिया। दो गली पार करने के बाद अवधेश को शक हो गया कि कोई उसका पीछा कर रहा है। उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा, लेकिन ये दोनों सीधे चलते रहे, जिससे शक न हो। अवधेश थोड़ा दूर आगे चला, अचानक से अपनी बंदूक निकालकर शंकर पर गोली चला दी। शंकर वहीं गिर गया, उसके हाथ में गोली लग गई। फिर भी शंकर उठा और उसका पीछा किया, लेकिन वह कहाँ गायब हो गया, पता नहीं चला। अभिजीत ने शंकर को बगल के अस्पताल ले गया। वहाँ अस्पताल वालों ने पुलिस को बुला लिया। शुक्र है कि तब तक हमने बंगाल पुलिस से संपर्क कर लिया था।

शंकर पूरा दिन अस्पताल में रहा। शाम को उसे अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया और मुझे इधर आईजी साहब ने डांट लगा दी कि मैंने उन्हें पहले इन्फॉर्म नहीं किया। अगर इन्फॉर्म किया होता, तो शायद ऐसा नहीं होता।

बंगाल पुलिस ने भी हमारी बहुत मदद की। शंकर और अभिजीत के साथ मिलकर उन्होंने भी अवधेश सिंह को ढूंढा, पर परिणाम कुछ नहीं मिला। उसे ढूंढने में हम असमर्थ रहे। थक-हारकर मैंने शंकर और अभिजीत को भी वापस बुला लिया। शायद अगर उस दिन गोली चला दी होती, तो निराशा नहीं होती।

****

7 अगस्त 2002

छह महीने बीत चुके थे, अवधेश सिंह का कुछ पता नहीं चल पाया था। मैं रोज देर से जागने लगा था और सारा दिन यूं ही उदास बैठा रहता था। आज रविवार है, सिया ने मुझे जबरदस्ती सुबह जगाया और फ्रेश होने को कहा। मैं जाकर फ्रेश होकर आया। सिया ने कुछ कपड़े निकालकर दिए और पहनने को कहा। मैंने कपड़े पहने और फिर उसने मुझे पार्क जाने को कहा।

"नहीं जाना यार सिया।" मैंने हताश होकर कहा।

"तुम्हें पता भी है तुम कैसे होते जा रहे हो? न काम पर जा रहे हो, न समय से खाते हो। क्या हो गया बेबी?"

"मैं ठीक तो हूं।"

"तुम बिलकुल ठीक नहीं हो। तुम ऐसे रहते हो, मुझे कितना बुरा लगता है, तुम्हें पता है।" बोलते हुए उसके आंखों में आंसू आ गए थे। मैं चाहता था कि मैं ऐसे चिंतित ना रहूं, लेकिन लाख कोशिश के बावजूद मुझे उस दिन अपने लिए निर्णय पर अफसोस होता था। मुझे हमेशा लगता था कि उस दिन शंकर को रोकना नहीं चाहिए था।

तभी कमरे में मेरा सेलफोन बजा। सिया ने कमरे से सेलफोन लाया और कहा, "शंकर का कॉल आ रहा है।" मैंने उसके हाथ से सेलफोन लिया और कॉल रिसीव किया।

"जय हिंद जनाब, एक खबर हाथ लगी है।"

"हाँ बोलो शंकर।"

"जनाब, अवधेश सिंह के गांजे का ठिकाना पता चला है।"

"कहाँ?" मैंने खड़े होते हुए पूछा।

"झील टोला वाला रोड से चार किलोमीटर दूर एक गोदाम है, उसी में। वहाँ लगभग 100 किलो गांजा है।"

"पक्की खबर है?"

"हाँ, पक्की खबर है।"

"ऑफिस पहुंचो तुम, मैं आ रहा हूं।" मैंने कॉल डिस्कनेक्ट किया। सिया को गले लगाया और उसके सिर को चूमा, फिर मैं ऑफिस के लिए निकल गया। मैंने सिया को गले लगाते वक्त महसूस किया कि वह खुश है, जोकि मैं उसे हमेशा रखना चाहता हूं।

ऑफिस जाकर मैंने सभी को सख्त हिदायत दी कि हमारे टीम के सिवाय किसी को कानो कान खबर नहीं होनी चाहिए कि हम क्या करने जा रहे हैं, क्योंकि मुझे अभी भी शक था कि अवधेश सिंह की मदद किसी पुलिस वाले ने की है, इसलिए वह हमारे हत्थे नहीं चढ़ा। बस इसी कारण से मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता था।

हम आधे घंटे बाद गोदाम पहुंचे और वहाँ 100 किलो से ज्यादा गांजा बरामद किया और तीन तस्करों को गिरफ्तार किया। उनमें से एक काफी बड़बड़ कर रहा था।

"कोन है बे तू?" मैंने थप्पड़ लगाते हुए पूछा।

"तुम सही नहीं कर रहे पुलिसिया, तुम्हें पता नहीं है हम कौन हैं।"

मैंने फिर से थप्पड़ जड़ दिया। इस बार सीधा कनपटी पर दिया, जिससे उसे पता चले मैं कौन हूं।

"रे भोसड़ीवाला, हमको मरेगा।" उसने मुझे गाली दी। फिर शंकर ने एक थप्पड़ जड़ दिया और उसी के गमछे से उसका मुंह बांध दिया।

मैं उस गोदाम को सील करवाने लगा और वहीं खड़ी एक ट्रक पर सारे गांजे को लोड करवाने लगा, जिसे मैं कोर्ट में पेश करता। तभी मेरा सेलफोन बजा। मैंने अपनी जेब से सेलफोन निकाला तो देखा, आईजी साहब का कॉल आ रहा था। मैंने रिसीव किया।

"जय हिंद जनाब।"

"कहाँ पर हैं समर प्रताप जी?" आईजी ने मुझसे पूछा।

"जनाब, एक छापेमारी कर रहे हैं।"

"जो कर रहे हैं छोड़िए, जल्दी से अपने ऑफिस आकर मुझे कॉल कीजिए।"

"हुआ क्या जनाब?" मैंने शक के दायरे में पूछा। मुझे लगा आईजी इस छापे को रुकवाना तो नहीं चाहते।

"अवधेश सिंह का पता चल गया है। दो घंटे में वह इधर से बंगाल निकलेगा।" आईजी ने मुझसे कहा।

मैंने यह बात सुनते ही तीन एसटीएफ अफसर को वहाँ छोड़ दिया, ट्रक को थाने ले जाने के लिए और गिरफ्तार किए हुए तस्कर सहित हम एसटीएफ ऑफिस पहुंचे। यहाँ आकर हमने उन्हें लॉकअप में डाला। तब तक एसपी साहब और आईजी साहब भी एसटीएफ ऑफिस पहुंच गए। आईजी ने बताया कि वह किसी काम के सिलसिले में कटिहार आया हुआ है और दो घंटे बाद वह फिर वहाँ से बंगाल निकलेगा। आईजी साहब ने उसका जाने का पूरा प्लान बताया, जिस रास्ते से अवधेश सिंह जाएगा, उस रास्ते का पूरा मानचित्र मेरे सामने पड़ा था। फिर मैंने प्लान बनाया कि कैसे अवधेश सिंह को दबोचा जाए। मेरे मन में एक बार ख्याल आया कि आईजी साहब से पूछूं कि यह सारी जानकारी उन्हें कहाँ से मिली, लेकिन फिर मैंने सोचा कि मुझे इससे क्या लेना देना, मुझे तो बस अवधेश सिंह को खत्म करना है।

थोड़ी देर बाद, आईजी साहब के खबरी ने उन्हें कॉल किया और बताया कि अवधेश सिंह निकल चुका है। एक उजले रंग की स्कॉर्पियो से उसका नंबर भी बताया। यह भी बताया कि उनके पास एक AK-47 है।

हम भी वहाँ से निकले और उस इलाके के रणिपत्रा थाना जा पहुंचे। आईजी को मैंने वहीं पुलिस चौकी में ही बैठने को कहा और एक कांस्टेबल को मैंने सिवल ड्रेस मे सड़क

के किनारे साइकिल लेकर खड़ा किया| उसे मैंने अवधेश सिंह की गाड़ी का रंग और नंबर बताया फिर मैंने उसके सेलफोन मे अपना नंबर सेव किया और उससे कहा "जैसे हीं ये गाड़ी यहाँ से गुजरे मुझे तुरंत कॉल करना |"

मैं, एसपी साहब, रणिपत्रा थाना प्रभारी एसआई अमित कुमार, उनके साथ एक कांस्टेबल और मेरी टीम, प्लान के हिसाब से सिवल ड्रेस मे खड़े किए गए कांस्टेबल से एक किलोमीटर दूर जाकर अपने-अपने जगह पर तैनात हो गए।

थोड़ी देर बाद, मेरा सेलफोन बजा मैंने झट से अपनी जेब से सेलफोन निकाला और कॉल रीसीव किया।

"हैलो जनाब, गाड़ी मेरे सामने से अभी गुजरी है |" उस कांस्टेबल ने कहा।

"तुमने ध्यान से देखा, वो अवधेश सिंह की हीं गाड़ी है?"

"जी जनाब।"

"आगे-पीछे कोई और गाड़ी है क्या?"

"नहीं जनाब।"

मैंने कॉल डिस्कनेक्ट किया और एक सिटी बजाकर सबको अलर्ट किया। मैं अपने हाथ में एसएलआर लिए तैनात था। मेरी दूसरी ओर शंकर भी एसएलआर लिए तैनात था और बाकी सड़क के नीचे जंगल में छिपे हुए थे। जैसे ही अवधेश सिंह की गाड़ी हमारे नजदीक पहुँची, बगल वाले खेत से एक गाय आकार रोड के बीचों-बीच खड़ी हो गई, गाय को देखकर ड्राइवर ने गाड़ी रोक दिया। जैसे ही गाड़ी रुकी गाय सड़क के इस पार आ गई। उसके बाद जैसे हीं ड्राइवर ने ऐक्सेलरैटर दबाया, सभी पुलिसकर्मी ने अपने बंदूकों के साथ रोड जाम कर दिया और एक अर्धगोलायी बनाकर उन्हे घेर लिया। ड्राइवर ने फिरसे ब्रेक मारी और अपने हाथ खड़े कर दिए। अवधेश सिंह ड्राइवर के बगल वाले सीट पर बैठा हुआ था, उसने ड्राइवर को टपली मारा और गुस्से मे कुछ कहा। ड्राइवर ने फिरसे स्टेअइरिंग पकड़ लिया और पीछे से एक आदमी ने दरवाजे का कांच नीचे किया और अंदर से AK-47 निकालकर सामने खड़े पुलिस वालों को दिखाया। सामने खड़े पुलिस वाले पीछे हटने लगे, और स्कॉर्पियो धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। उस सड़क के बीचों-बीच एक नहर गुजरती थी। नहर के एक तरफ बांध पर मैं खड़ा था, और दूसरी तरफ वाले बांध पर शंकर। धीरे-धीरे सामने खड़ी पुलिस पीछे जा रही थी और स्कॉर्पियो धीरे-धीरे आगे जा रही थी। उन्हें लगा कि पुलिस वाले डर जाएंगे, लेकिन जैसे ही स्कॉर्पियो मेरे और शंकर के निशाने पर आई, हमने तुरंत फायरिंग शुरू कर दी, सामने खड़े पुलिसकर्मी ने भी फायरिंग शुरू कर दी। लगभग 250 राउंड गोलियां चलीं, उसके बाद हमने फायरिंग

बंद की। फिर पास जाकर देखा तो अवधेश सिंह समेत उसका ड्राइवर और एक व्यक्ति हमारे गोलियों से भूना गया था। अगर वो गौ माता बीच मे न आई होती तो, शायद अवधेश सिंह को मारना हमारे लिए मुश्किल हो सकता था।

उस दिन पुर्णीया पुलिस ने अपने सरदर्द से छुटकारा पाया। मिश्रा जी की आत्मा को शांति मिली होगी और उनके घरवालों को इंसाफ मिला, और उन सबको भी इंसाफ मिला जिन्होंने अवधेश सिंह के कारण कुछ खोया था। उस दिन मैं बहुत ही खुश होकर सिया के पास लौटा और जाते हीं मैंने अपना सेलफोन बंद कर दिया क्यूंकी मै आज बहुत खुश था, पिछले कई महीनों से सिया के साथ मैंने एक पल भी खुशी से नहीं बिताया था। हुमने बहोत सारी बातें की खाना बनाया। हुमदोनों ने एक दूसरे के घरवाले से भी बात की उसके बाद खाना खाया। खाने के बाद, सिया ने टीवी ऑन किया और चर्चों में मैं ही था। वह मुझे देखकर मुस्कुराई और मुझे गले लगा लिया।

5. एस टी एफ को शट किया जाय

सुबह के 4:00 बज रहे थे। मैं सोया हुआ था। बार-बार टेलीफोन की घंटी बजने की आवाज़ मेरे कानों में आ रही थी, जिससे मेरी नींद खुल गई। मैं बिस्तर से उठकर वाशरूम की ओर जाने लगा। जैसे ही मैं कमरे से बाहर आया, टेलीफोन की घंटी फिर से बजने लगी। मैंने सोचा, "सुबह के 4:00 बजे ऐसा क्या हो गया आज?" मैंने टेलीफोन के पास जाकर रिसीवर उठाया और कहा,

"समर प्रताप यादव स्पीकिंग।"

"कितनी बार कॉल किया आपको, आपका सेलफोन स्विच ऑफ बता रहा है। टेलीफोन पर भी एक घंटे से रहें हैं," सामने से आईजी की आवाज़ आई।

"माफ़ी कीजिएगा जनाब, वो सेलफोन में बैटरी नहीं है।"

"आपकी कस्टडी में विधायक जी का भतीजा है, क्या?"

"कौन विधायक का भतीजा?"

"चंद्रकांत यादव का भतीजा, आप आज ही उसे गिरफ्तार किए हैं ना?"

"हाँ, तीन गांजा तस्करों को तो गिरफ्तार किए हैं, लेकिन वो तो अवधेश सिंह का आदमी है।"

"उसमें एक विधायक चंद्रकांत यादव का भतीजा है, उसे छोड़ना पड़ेगा।"

"जनाब, 100 किलो से अधिक गांजा के साथ पकड़ा गया है वो, उसे कैसे छोड़ सकते हैं?"

"कोई पैंतरा आज़माइए और उसे रिहा कीजिए।"

"ठीक है जनाब, सुबह होने दीजिए।"

"जल्दी उसे रिहा कीजिए।"

"जी जनाब, जय हिंद।"

"जय हिंद।"

रिसीवर वापस रखकर मैं वाशरूम चला गया। मेरे समझ में नहीं आ रहा था, विधायक तो इतना भोला बन रहा था, इतना अच्छा बन रहा था, मेरे सामने और आईजी भी उसकी तारीफ करने से नहीं चूके थे, लेकिन उसका भतीजा अवधेश सिंह के गोदाम में 100 किलो गांजे के साथ क्या कर रहा था? मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा था। मैं वाशरूम से बाहर आकर बेडरूम गया और अपना सेलफोन लिया। फिर हॉल में आकर सोफे पर बैठा। जब सेलफोन स्विच ऑन किया तो देखा शंकर ने भी मुझे कॉल करने की कोशिश की थी। मैंने वापस शंकर को कॉल लगाया।

"हेलो, जनाब, आईजी साहब का कॉल आया था," शंकर ने कहा।

"मुझे भी आया था।"

"जनाब, हमने विधायक के भतीजे को गिरफ्तार कर लिया है।"

"तीनों में से कौन है?"

"जनाब, चेहरे से तो मालूम नहीं, पर उसका नाम श्याम है।"

"फिर ये अवधेश सिंह के गोदाम पर क्या कर रहा था?"

"जनाब, ये तो मेरे समझ में भी नहीं आ रहा। जबकि दोनों में दुश्मनी काफी समय से चल रही है।"

"कौन दोनों?" मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"अवधेश सिंह और विधायक चंद्रकांत यादव में।"

"क्या बात कर रहे हो? पहले ये तुमने क्यों नहीं बताया?"

"आईजी साहब ने मना किया था, आपको ये सब बताने से।"

"मतलब?"

"जनाब, हम आते हैं आपके पास, फिर बताते हैं आपको।"

"जल्दी आओ।"

मैंने कॉल डिस्कनेक्ट किया और सेलफोन सोफे पर पटक दिया। मुझे कुछ अजीब सा महसूस हो रहा था। मुझे लग रहा था कि मेरा इस्तेमाल हुआ है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मेरे साथ किसी ने धोखा किया है।

थोड़ी देर बाद सिया जागकर आँख मलते हुए बाहर आई और आकर मेरे गोद में सिर रखकर सोफे पर सो गई। उसने मेरे उतरे हुए चेहरे को देखा।

"क्या हुआ बेबी? तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों है? और सुबह-सवेरे जग गए आज?"

"कुछ नहीं, वो रात में नींद अच्छी आई थी ना, तो सुबह नींद खुल गई।"

"मुझे सोने नहीं दिया तुमने और खुद सो गए।"

"तुम्हें और सोना है?"

"हाँ, सोने दो मुझे।" सिया मुझसे लिपटकर मेरे गोद में सो गई।

करीब एक घंटे बाद दरवाजे की घंटी बजी। मैंने सिया को जगाया। वह फ्रेश होने वाशरूम चली गई, और मैंने जाकर दरवाजा खोला। सामने शंकर खड़ा था। मैंने शंकर को अंदर आने को कहा। शंकर अंदर आकर सोफे पर बैठ गया। मैंने उसे पानी का ग्लास लाकर दिया और उसके बगल में बैठ गया।

"बताओ शंकर, क्या बात है?" मैंने शंकर से पूछा।

"जनाब, यही कि चंद्रकांत यादव और अवधेश सिंह में काफी समय से दुश्मनी चल रही है।"

"इसका मतलब चंद्रकांत ने दुश्मनी के कारण अवधेश सिंह का एनकाउंटर करवाया है।"

"जी जनाब।"

"पहले तुमने क्यों नहीं बताया मुझे?"

"हमारी पूरी टीम को मना किया गया था आपको ये सब बताने से। टीम छोड़िए जनाब, पूरी पुलिस फोर्स में से एक भी अफ़सर आपको नहीं बताता।"

"फिर अब तुम क्यों बता रहे हो?" मैंने गुस्से में कहा।

"जनाब, ये सब आपको बताना ही सही लगा। हम हमेशा सोचे कि बता दें, लेकिन डरते थे कि अगर बता दिए, तो कहीं नौकरी न खो बैठें।"

"नौकरी क्यों खो दोगे?"

"चंद्रकांत यादव पागल है। उसके मुताबिक काम नहीं होता, तो वह अपना पावर का उपयोग करके हम सबको सस्पेंड करवा देता।"

"साला हरामखोर चंद्रकांत..." मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था। इसलिए नहीं कि मेरे हाथों अवधेश सिंह मारा गया, बल्कि इसलिए कि मैं किसी दो कौड़ी के विधायक के हाथ का कठपुतली बन गया।

सिया वाशरूम से बाहर आई। उसने मेरे चेहरे पर गुस्सा देखा, और वाकई तभी मेरा चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। शायद उसने वाशरूम में मेरी गुस्से भरी आवाज़ भी सुनी हो।

"क्या हुआ समर जी?" सिया ने पूछा।

"कुछ नहीं," मैंने कहा।

"कुछ हुआ है, शंकर, तुम बताओ, ये तो बताएंगे नहीं?"

"कुछ नहीं, मेमसाहब, वो एक अपराधी कस्टडी में है, उसी के बारे में बात कर रहे थे।"

"ओ, चाय पियोगे ना तुम?"

"हाँ, मेमसाहब, पी लेंगे।"

"क्या मेमसाहब बोल रहे हो, शंकर, भाभी बोल सकते हो।"

"जी, मेमसाहब।"

"फिर वही..."

"सॉरी, भाभी," शंकर ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हाँ, अब ठीक है। बातें करो तुम दोनों, मैं चाय लेकर आती हूँ।"

"ठीक है, भाभी।"

सिया किचन में जाकर चाय बनाने लगी, और मैं चुप्पी साधकर बैठा हुआ था। शंकर मुझे देखता जा रहा था। फिर मैंने सोचा, क्यों न सब जान लिया जाए।

"तुम्हें इन दोनों की पूरी कहानी के बारे में पता है क्या?" मैंने शंकर से पूछा।

"जी जनाब।"

"चलो फिर बताओ।"

"जनाब, चंद्रकांत यादव की मदद से ही अवधेश सिंह एक बड़ा अपराधी बन सका था। चंद्रकांत यादव राजनीति में सक्रिय था और अवधेश सिंह उसकी गुंडागर्दी के लिए जाना जाता था। जो भी गैरकानूनी और धोखाधड़ी से जुड़े काम होते थे, उनमें अवधेश सिंह का हाथ होता था। दोनों मिलकर अवैध धंधे को अंजाम देते थे। अवधेश सिंह एक सनकी और निडर व्यक्ति था, जिससे शहर के लोग खौफ खाते थे। यहाँ तक कि पुलिस और राजनेता भी उससे भिड़ने की हिम्मत नहीं करते थे। उसकी धाक इस कदर थी कि धीरे-धीरे उसने बिहार के हर जिले में अपने संपर्क स्थापित कर लिए और वहाँ गांजा सप्लाई करने लगा। इसके अलावा, वह हर जगह अवैध देसी शराब का उत्पादन कर उसे बेचता था। इस धंधे से उसने अपार दौलत कमाई और उसका रुतबा बढ़ता चला गया। चंद्रकांत यादव, जो विधायक भी था, अवधेश सिंह की वजह से खूब पैसा बना रहा था, क्योंकि जब भी कोई कानूनी समस्या आती, तो चंद्रकांत ही उसे सुलझाने में मदद करता था।"

इतने में सिया चाय लेकर आई और टेबल पर रखकर मेरे बगल में बैठ गई। शंकर सिया के सामने आगे बताने को हिचकिचा रहा था। फिर मैंने कहा, "अरे बताओ, कोई बात नहीं।"

"जनाब, बस यही, इसी सब कारण से वो साथ थे।"

"फिर दोनों में दुश्मनी कैसे हुई?" मैंने पूछा।

"जनाब, चुनाव नज़दीक थे और इस बार कुछ नया होने वाला था। चंद्रकांत यादव पहले से ही राजनीति में था, लेकिन इस बार अवधेश सिंह भी चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा था। वह विधानसभा का चुनाव लड़ना चाहता था, और वो भी उसी क्षेत्र से जहाँ से चंद्रकांत यादव चुनाव लड़ता था। जब चंद्रकांत को इस बात का पता चला, तो उसने अवधेश सिंह से बातचीत की। अवधेश सिंह ने चंद्रकांत से कहा, "आप लोकसभा का चुनाव लड़िए, हमें विधानसभा लड़ने दीजिए।"

हालांकि, चंद्रकांत का पहले से ही लोकसभा चुनाव लड़ने का मन था, लेकिन उसे डर था कि अगर अवधेश राजनीति में आया, तो उसका कद बहुत ऊँचा हो जाएगा और उसका प्रभाव कम हो सकता है। इसी कारण दोनों के बीच तनातनी शुरू हो गई। अवधेश सिंह, जो एक खतरनाक अपराधी था, ने चंद्रकांत पर हमला करवा दिया, लेकिन चंद्रकांत उस हमले में बच गया। इस घटना के बाद, चंद्रकांत ने पुलिस को अवधेश सिंह के पीछे लगा दिया। इस अभियान के दौरान मिश्रा जी की जान चली गई।"

"मिश्रा जी के साथ क्या हुआ था? मतलब उस दिन कैसे ये सब हो गया?"

"जनाब, मिश्रा जी के एक खबरी ने उन्हें जानकारी दी कि अवधेश सिंह बंगाल बॉर्डर के पास डालकोला के एक गेस्ट हाउस में रुका हुआ है। यह गेस्ट हाउस पुर्णिया जिले में स्थित था और अवधेश सिंह का ही था।

मिश्रा जी तुरंत अपनी टीम के साथ निकल पड़े, और हम भी उनके साथ थे। जब हम वहाँ पहुँचे, तो अवधेश सिंह को भनक लग गई कि पुलिस आ गई है। वह और उसके आदमी पीछे के दरवाजे से निकलने लगे। उस तरफ सिर्फ मिश्रा जी और एक कांस्टेबल ही थे, जबकि हम गेस्ट हाउस के सामने खड़े थे। जैसे ही मिश्रा जी ने अवधेश सिंह को देखा, उन्होंने तुरंत उस पर पिस्टल तान दी और उसे सरेंडर करने को कहा। लेकिन अवधेश सिंह ने बिना हिचकिचाए उन दोनों को मार दिया। उसके पास खतरनाक हथियार थे। जब तक हम वहाँ पहुँचे, वह फरार हो चुका था।"

तभी मेरा सेलफोन बजा। मैंने सेलफोन उठाया तो देखा कि आईजी का कॉल आ रहा था। मैंने रिसीव किया।

“जी जनाब,” मैंने कहा।

“समर जी, क्या हुआ? जल्द से जल्द उसे रिहा कीजिए। क्या नाम था उसका?” आईजी ने चिंतित होते हुए कहा।

“श्याम।”

“हाँ, श्याम। उसे जल्दी से जल्दी रिहा कीजिए।”

“जनाब, 100 किलो गांजे के साथ पकड़ा गया है वह, इतनी आसानी से तो नहीं छोड़ा जा सकता।”

“देखिए, समस्या हो जाएगी, उसे रिहा कीजिए।”

“क्या समस्या, जनाब...?”

“देखिए, ऐसा कीजिए, वो दो लड़के जो श्याम के साथ हैं, उन्हें अंदर रख लीजिए, लेकिन श्याम को रिहा कर दीजिए।”

“ठीक है, जनाब।”

मैं कॉल डिस्कनेक्ट करके सेलफोन टेबल पर रखता हूँ और कुछ देर तक सोचता हूँ कि इस विधायक का क्या करना चाहिए। फिर मेरे दिमाग में एक ख्याल आता है कि क्यों न श्याम को जेल भेज दिया जाए।

“अच्छा, शंकर, तुम तो इस शहर में काफी समय से हो?”

“जी, जनाब।”

“तो न्यूज़ चैनल में तुम्हारे दोस्त होंगे?”

“दोस्त तो नहीं, जनाब, पर जान-पहचान है।”

“तो ऐसा करो, किसी ऐसे को कॉल करो जो तुरंत ये खबर दिखाए और चंद्रकांत के घर मीडिया की लाइन लग जाए।”

“पर जनाब...”

“पर-वर छोड़ो, मैं तुम्हारा सीनियर हूँ और तुम्हें ये ऑर्डर दे रहा हूँ।”

शंकर ने अपने एक परिचित रिपोर्टर को कॉल करके श्याम की गिरफ्तारी की खबर दे दी। कुछ ही समय में यह खबर आग की तरह फैल गई। मैं नहा-धोकर नाश्ता करता हूँ और शंकर के साथ एसटीएफ ऑफिस चला जाता हूँ। जैसे ही मैं एसटीएफ ऑफिस पहुँचता हूँ, मीडिया के लोग मुझे घेर लेते हैं।

“सर, आप कब श्याम को गिरफ्तार किए हैं?” एक रिपोर्टर ने मुझसे पूछा।

“कल दोपहर, अवधेश सिंह के एनकाउंटर से पहले।”

“पर अभी तक यह सूचना गुप्त क्यों रखी गई?”

“इन्हें जैसे ही मैंने गिरफ्तार किया, मुझे अवधेश सिंह के बारे में सूचना मिली, तो उसमें व्यस्त हो गया था।”

“अवधेश सिंह की सूचना आपको किसने दी?”

“अवधेश सिंह के किसी खास आदमी ने।”

मीडिया वाले कुछ और सवाल पूछ पाते, उससे पहले ही मैं वहाँ से निकलकर अपने ऑफिस चला आया। ऑफिस पहुँचने के बाद मेरे मन में आया कि इन नवाबजादों की खास "खातिरदारी" की जाए। यह सोचकर, मैं लॉकअप में उन तीनों के पास गया।

“श्याम कौन है तुम लोगों में से?” मैंने उनसे पूछा।

“हम हैं,” कोने में बैठे एक काले-कलूटे आदमी ने जवाब दिया।

“तुम्हारा बाप तो बाहर हिल गया है?” मैंने श्याम से कहा।

“रे पुलिसवाला, क्यों बंद करके रखे हो हमको? जानते हो, हम कौन हैं?”

“हाँ, जानते हैं, चंद्रकांत यादव का नाजायज औलाद, न?”

“रे भोसड़ीवाला पुलिसवाला, हाथ खोलो, तब तुम्हें बताते हैं।” गाली सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया। पिछले दिन भी इसने मुझे गाली दी थी। मैंने शंकर को अंदर बुलाया और कहा, “खोलो इसका हाथ।”

“जनाब...,” वह हक्का-बक्का रह गया।

“शंकर, हाथ खोलो इसका,” मैंने चिल्लाते हुए कहा।

“हिम्मत है तो खोल ना रे साला,” श्याम भी चिल्लाते हुए बोला।

शंकर ने उसे धक्का दिया और उसका हाथ खोल दिया। हथकड़ी खुलते ही श्याम ने मुझ पर हमला करने का प्रयास किया। जब तक वह मेरे पास पहुँचता, मैंने अपनी पिस्टल से नीचे की ओर एक गोली चला दी। वह तुरंत पीछे हटकर कोने में दुबक कर बैठ गया। मैंने शंकर से एक डंडा लाने को कहा। शंकर लॉकअप से बाहर जाकर डंडा लेकर आया।

“जनाब, आपके केबिन में टेलीफोन की घंटी बज रही है,” शंकर ने मुझसे कहा।

“रहने दो, आईजी या विधायक का होगा।”

मैंने शंकर से डंडा लिया, फिर दो अफसरों को बुलाकर श्याम को बाँधने का आदेश दिया। इसके बाद, मैंने श्याम की थोड़ी पिटाई की, ताकि उसके अंदर डर बैठ जाए और वह जल्दी से सब कुछ उगल दे। मेरा समय बर्बाद न हो, यही मकसद था। पिटाई के दौरान वह लगातार चिल्लाता रहा, लेकिन मुझे जरा भी रहम नहीं आया। आए भी क्यों? अपराधी के साथ अपराधी जैसा ही बर्ताव होना चाहिए। पिटाई के बाद, मैंने उसे बैठाया और पानी मंगवाकर उसे दिया। उसने पानी पिया, फिर मैंने पूछा:

“अवधेश सिंह के गोदाम में क्या कर रहा था?”

“चाचा भेजे थे,” श्याम ने कहा।

“क्यों?”

“डिलीवरी लेने।”

“अवधेश सिंह से?”

“हाँ।”

“पर दोनों में तो दुश्मनी है, न?”

“उन लोगों के बीच एक डील हुआ था।”

“कौन-सी डील?”

“अवधेश सिंह चुनाव नहीं लड़ेगा और पुर्णीया में जो भी गांजा सप्लाई होगा, उसका सारा पैसा चाचा रखेंगे, तो पुलिस अवधेश सिंह के पीछे नहीं जाएगी।”

“कहाँ बात हुई, फोन या मिलकर?”

“पहले तो फोन पर, फिर मिलकर बात करने वाले थे। हमको इतना ही पता है।”

तभी मेरा सेलफोन बजा। मैंने अपनी जेब से सेलफोन निकाला तो देखा कि आईजी का कॉल आ रहा था। मैंने रिसीव किया।

“हेलो, समर प्रताप जी, छोड़े क्यों नहीं अभी तक?”

“जनाब, मीडिया में खबर फैल चुकी है, अब कैसे छोड़ सकते हैं?”

“एक मिनट लाइन पर रहिए।”

“जी जनाब, लाइन पर ही हूँ।”

“हेलो, समर बाबू, आप हमें तकलीफ दे रहे हैं।” मैं पहचान गया कि यह चंद्रकांत की आवाज थी।

“प्रणाम, विधायक साहब। अब क्या करें, बताइए, मीडिया में खबर फैल चुकी है।”

“वो हम संभाल लेंगे, समर बाबू, आप बस श्याम को छोड़ दीजिए।”

“अरे सर, कैसे छोड़ दें? अभी पता चला है कि आईजी साहब के खबरी आप ही हैं, जिसने अवधेश सिंह की सूचना दी।”

“क्या बोल रहे हैं आप, समर प्रताप?” आईजी ने घबराहट में कहा।

“आप चिंता मत कीजिए, जनाब। मुझे पता है इसके और अवधेश सिंह के डील के बारे में। इसने उसका पैसा हड़प लिया और मेरा उपयोग करके मरवा भी दिया।”

“समर बाबू, गलत बात कर रहे हैं आप,” चंद्रकांत ने कहा।

“क्या गलत बोल रहे हैं? कल कटिहार में कैसी रही मीटिंग?” मैंने कहा।

"समरवा, तुमको हम छोड़ेंगे नहीं। नौकरी खा जाएंगे तुम्हारा, अगर श्याम जेल गया तो।"

"अरे, विधायक जी, समर बाबू से समरवा? चल, रख फोन, हरामखोर! तुमको भी जेल भेजेंगे।" मैंने इतना कहकर कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया।

मैंने श्याम और उसके साथियों के खिलाफ एफआईआर तैयार की और एसपी इरशाद शेख को सूचना दी। उनके बारे में मैंने काफी सुना था कि वह एक ईमानदार और कर्मठ पुलिस अफसर हैं। उन्होंने मेरे साथ जाकर श्याम और उसके साथियों का मेडिकल करवाया और उन्हें कोर्ट में पेश किया। फिर हमने उन्हें पुर्णीया सेंट्रल जेल में डाल दिया, और जब्त किया हुआ गांजा एक्साइज डिपार्टमेंट वाले ले गए।

उस दिन मेरे नंबर पर बहुत से कॉल आए, लेकिन मैंने एक भी रिसीव नहीं किया। मुझे पता था कि ये कॉल बस श्याम को छोड़ने के लिए किए जा रहे हैं। एसपी साहब के सिवाय, सभी बड़े पदाधिकारी यही चाहते थे कि मैं श्याम को छोड़ दूं।

कुछ दिनों बाद, अवधेश सिंह के एनकाउंटर को लेकर मेरी पूरी टीम पर जांच शुरू की गई। हमें दोषी ठहराया गया कि हमने गलत तरीके से एनकाउंटर किया था। जांच टीम ने आदेश दिया कि "एसटीएफ को बंद किया जाए।" 10 अक्टूबर 2002 को, मुझे और शंकर को सस्पेंड कर दिया गया क्योंकि टीम की जिम्मेदारी मेरी थी और आईजी ने सभी अफसरों को मेरे खिलाफ बयान देने का आदेश दिया था, क्योंकि उन पर चंद्रकांत का दबाव था। अफसर मेरे खिलाफ बयान देने को तैयार नहीं थे, लेकिन मेरे कहने पर उन्होंने बयान दे दिया।

हालांकि, शंकर ने मेरे लाख कहने के बावजूद मेरे खिलाफ बयान देने से इनकार कर दिया, जिससे उसे भी सस्पेंड कर दिया गया। एसपी साहब ने सामने आकर तो मदद नहीं की, लेकिन गुप्त तरीके से उन्होंने मेरी काफी सहायता की। बाकी अफसर, जो विभिन्न थानों से आए थे, उन्हें वापस भेज दिया गया।

शंकर के सस्पेंशन को लेकर मैं काफी चिंतित था। मैंने एसपी साहब से दरख्वास्त की कि किसी तरह शंकर का सस्पेंशन हटवा दिया जाए। एसपी साहब ने मेरी बात का मान रखा और दो महीने बाद शंकर का सस्पेंशन हटवा दिया। उन्होंने शंकर को अपने बॉडीगार्ड के तौर पर भी नियुक्त कर लिया।

मैं भी पुर्णिया छोड़कर गाँव नहीं जा सकता था, क्योंकि वहाँ जाकर अपने सस्पेंड होने की खबर नहीं बता सकता था। इससे घर में सभी बहुत चिंतित हो जाते। सिया ने भी अपने मम्मी-पापा को यह बात नहीं बताई कि मैं सस्पेंड हो गया हूँ। मेरे पास कुछ

सेविंग्स थीं, तो उससे मैंने किराए पर एक छोटा सा घर लिया और सिया भी घर पर ही ट्यूशन देने लगी।

****

8 जनवरी 2003

सिया हॉल में बच्चों को ट्यूशन पढ़ा रही थी, और मैं अपने कमरे में अपने सस्पेंशन के हटने का इंतजार करते हुए "पच्चीस हजार" नामक उपन्यास पढ़ रहा था। तभी मैंने सुना कि कोई मेरे घर का दरवाजा पीट रहा है। मैं कमरे से बाहर आया तो देखा कि सिया दरवाजा खोल रही थी। जैसे ही सिया ने दरवाजा खोला, सामने पुलिस की टोली खड़ी थी। वे बिना कुछ कहे हमारे घर में आकर तलाशी लेने लगे। मैं पूछता रहा कि क्या चल रहा है, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया।

एक पुलिस अफसर मेरे कमरे से नोटों की गड्डी लेकर निकला। उसे देखकर मैं चौंक गया कि ये पैसे मेरे घर में कहाँ से आ गए।

"और पैसा कहाँ है?" उस अफसर ने मुझसे पूछा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। मैंने नजर नीचे की तो उसके नेमप्लेट पर "रामगोपाल शर्मा" लिखा हुआ था।

"रामगोपाल जी, मुझे नहीं पता," मैंने कहा।

"रामगोपाल बोलता है! साहब बोलने में दिक्कत है?" उसने मुझे धक्का देते हुए कहा।

फिर उन्होंने मुझे हथकड़ी लगाई और उसके बाद शनेली पुलिस चौकी ले जाया गया। वहाँ जाकर मुझे पता चला कि किसी ने चंद्रकांत के कहने पर मेरे खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई है, जिसमें आरोप है कि मैंने उससे 10 लाख रुपए लिए हैं और उसे पुलिस में भर्ती करवाने का वादा किया है।

अगले दिन पुलिस ने मुझे कोर्ट में पेश किया और उसके बाद मुझे पुर्णीया सेंट्रल जेल में डाल दिया गया।

6.एस टी एफ वापस गठित किया जाए

मैं बेगुनाह होकर भी ग्यारह महीने जेल में रहा। काफी प्रयास करने के बाद भी मेरी जमानत नहीं हो रही थी क्योंकि उस समय चंद्रकांत यादव पुर्णीया विधान सभा से विधायक था। उसने मेरी रिहाई को रोकने के लिए काफी अड़चनें डालीं, जिसकी वजह से मुझे इतने वक्त जेल में रहना पड़ा। जब पूरे बिहार में धारा 144 लागू हुई और सभी नेताओं के पास कोई शक्ति नहीं बची, तब जाकर मेरी जमानत हो पाई।

जेल से निकलने के बाद मैं अपने गांव मोगरा चला आया, जिसे मोगरे पाडा के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत के महाराष्ट्र राज्य के मुंबई में अंधेरी पूर्व स्टेशन के पास एक छोटा सा क्षेत्र है।

वहाँ जाकर मैं अपने पिताजी के काम में हाथ बटाने लगा। मेरे पिता मोगरा गांव में सब्जियां और फल उगाते थे और उन्हें मुंबई जैसे शहरों के व्यापारियों को बेचते थे। मैं पूरी तरह से पिताजी के काम में व्यस्त हो गया था, अब मुझे पुलिस की नौकरी नहीं करनी थी। मेरे अंदर से वह इंसान मर चुका था, जो इंसाफ के लिए लड़ता था और जो अपराध मुक्त समाज चाहता था। मेरे साथ जो हुआ, उसने मुझे काफी तोड़ दिया था। अब मेरा मन पिताजी के काम में लग गया था, और मैं बीती बातों को भूलना चाहता था। क्योंकि जब भी मैं अपने साथ हुए अन्याय के बारे में सोचता, तो मुझे लगता कि जब मैं खुद के लिए नहीं लड़ सका, खुद को सुरक्षित नहीं रख सका, तो दूसरों को क्या सुरक्षित रखूंगा, उनके लिए कैसे लड़ूंगा।

दिन भर मैं अपने खेत और गोदाम में वक्त बिताता था। शाम को घर आता था और अपने परिवार के साथ हंसी-खुशी से रहता था। सिया भी वहाँ बच्चों को पढ़ाने लगी थी,

वह भी काफी व्यस्त रहती थी और बाकी का समय मेरे माता-पिता के साथ बिताती थी। सिया का भी दिल गांव में लग गया था। हमारी शादी के बाद न मैंने इतना वक्त गांव में गुजारा था और न ही सिया ने। हमारी शादी के एक सप्ताह बाद ही हम दोनों गया चले गए थे।

20 नवंबर 2003 की शाम को मैं, सिया और मेरे माता-पिता साथ बैठकर बातें कर रहे थे। तभी मेरा सेलफोन बजा। मैंने अपने जेब से सेलफोन निकाला तो देखा एसपी इरशाद शेख का कॉल आ रहा था। मैंने रिसीव किया।

"हेलो, समर कैसे हो?"

"ठीक ही हूं, एसपी साहब। आप बताएं, आप कैसे हैं?"

"ठीक हूं। गांव में क्या चल रहा है, समर?"

"खेती-बाड़ी, एसपी साहब, अब तो इधर ही मन लग गया है।"

"समर, तुम वापस पुलिस क्यों नहीं ज्वाइन कर लेते?"

"अब इच्छा नहीं रही पुलिस में काम करने की, और अभी तक सस्पेंशन भी हटा नहीं है।"

"सस्पेंशन हटवा देंगे समर, वापस तुम्हारा ज्वाइनिंग पुर्णीया में ही करवा देंगे, बस तुम वापस आ जाओ।"

"अब नहीं एसपी साहब।"

"एक बार ठंडे दिमाग से सोच लो, समर।"

"मैंने सोच लिया है, एसपी साहब।"

"देखो, वक्त लो समर, ऐसे ही किसी चीज का निर्णय मत लो।"

"ठीक है, एसपी साहब।"

"ठीक है, समर, अब मैं रखता हूं।"

"ठीक है।" मैंने कॉल डिस्कनेक्ट करके सेलफोन अपने जेब में रख लिया और मैं काफी भावुक हो गया। मुझे अपनी पुलिस की नौकरी के दौरान किए गए काम याद आने लगे, और उस दौरान मिले लोगों की भी यादें ताजा हो गईं।

मुझे इस हालत में देख पापा अपनी जगह से उठकर मेरे बगल में आकर बैठ गए और उन्होंने मेरे हाथ को पकड़ा और कहा,

"बेटा, क्या हुआ?"

"कुछ नहीं पापा, बस ऐसे ही।" मैंने सिसकते हुए कहा और आंखों में आने वाले आंसू को रोक लिया।

“देखो बेटा, मैं तुम्हें एक ही सलाह दूंगा: किसी एक हादसे की वजह से तुम अपने जीवन जीने का नजरिया और समाज को देखने का नजरिया बदल दो, यह बिल्कुल सही बात नहीं है। मुसीबतें आएंगी-जाएंगी, पर तुम्हें डटे रहना होगा। क्या हुआ, एक बार तुम बिखर गए? तुममें इतनी ताकत है कि तुम दोबारा खुद को संवार सकते हो।”

“जी पापा जी।” मुझे समझ नहीं आ रहा था कि पापा की इन बातों का क्या जवाब दूं।

“जब से तुम आए हो, तुम बिल्कुल भी ठीक नहीं लग रहे हो मुझे। परेशान रहने से समस्या का हल नहीं होगा, बेटा।”

“जी पापा जी।”

“एसपी साहब क्या कह रहे थे?”

“नौकरी पर वापस आने के बारे में बोल रहे थे। कह रहे थे कि वो सस्पेंशन हटवा देंगे।”

“यह तो अच्छी बात है ना बेटा, इसमें परेशान होने वाली क्या बात है?”

“जी पापा जी।”

“क्या सोचा है तुमने?”

“सोचता हूँ कुछ, पापा।”

“पापा, चलिए ना खाना खाते हैं।” सिया ने कहा।

सिया जानती थी, अगर पापा से इसी तरह मैं कुछ देर और बात करता रहा, तो कहीं मैं रो न दूं, इसलिए उसने पापा को खाने के लिए पूछ लिया। हम सबने जाकर खाना खाया। खाना खाकर हम अपने-अपने कमरे में जाकर सो गए। रात में मुझे काफी बेचैनी हो रही थी, नींद नहीं आ रही थी। सिया ने मुझे अपने आलिंगन में लिया और कहा, “परेशान मत हो बेबी, सब ठीक हो जाएगा।” उसके बाद मैं किसी तरह सो पाया।

****

21 नवंबर 2003

मैं सुबह देर से जगा। नहा-धोकर जैसे ही नाश्ता करने के लिए पापा के पास आकर बैठा, पापा ने मेरे हाथ में एक लिफ़ाफ़ा दिया।

“क्या है इसमें, पापा?” मैंने पूछा।

“खोल कर तो देखो।”

मैंने लिफाफा खोला तो देखा कि वह मेरा ज्वाइनिंग लेटर था। मैं थोड़ा खुश हुआ, फिर मुझे मेरे साथ हुए अन्याय की याद आई। मैंने लेटर को बगल में रखा और सिया को नाश्ता लाने को कहा।

"क्या हुआ बेटा, क्या सोचा है?" पापा ने मुझसे पूछा।

"सोचना क्या है, पापा? मैं अब पुलिस की नौकरी नहीं करने वाला।"

"एक बार और सोच लो, बेटा।"

"सोच लिया, पापा।" मेरे ये कहते ही सिया ने मुझे नाश्ता लाकर दिया और साथ में एक अखबार।

"इसे खोलकर देख लीजिए एक बार।" सिया ने मुझसे कहा।

मैंने अखबार खोलकर देखा तो मैं भी चौंक गया कि चार हत्याएं, वह भी एक पैटर्न में, और अपराधी अभी तक पकड़े नहीं गए हैं।

"पुर्णीया का अखबार यहाँ कैसे आया?" मैंने पूछा।

"इस लिफाफे के साथ ही आया है," पापा ने कहा।

"इन सबका कोई फायदा नहीं है, पापा। मुझे अब पुलिस की नौकरी नहीं करनी।"

"देखो बेटा, मौका बार-बार नहीं मिलता है। मौका मिल रहा है, तो इसे जाने मत दो। जाओ, फिर से अपनी काबिलियत साबित करो। तुम्हारे साथ अन्याय करने वालों के मुंह पर यही तमाचा होगा।"

मैंने पापा की बातों का कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप नाश्ता करके गोदाम चला गया। गोदाम जाने के बाद थोड़ा काम निपटाया, लेकिन आज मुझे कुछ अजीब सा लग रहा था। यहाँ काम करने की मेरी इच्छा नहीं हो रही थी। मैं थक-हारकर वापस घर आकर अपने कमरे में विश्राम करने लगा। कुछ देर बाद सिया मेरे बगल में आकर बैठी।

"क्या सोच रहे हैं आप?" सिया ने मुझसे पूछा।

"कुछ नहीं।"

"एक बात बोलूं, समर जी?"

"हाँ , बोलो ना।"

"आपको इस हालत में देखकर बिलकुल अच्छा नहीं लगता। पापा-मम्मी को कितना दुख होता है, आपको नहीं पता। आप वापस पुलिस ज्वाइन कर लो, अभी मौका है।"

"कैसे, सिया? इतना कुछ होने के बाद भी।"

“आपको न, एक ही चीज करने में अच्छा लगता है, आपकी ड्यूटी। और आप उससे ही पीछा छुड़ा रहे हैं। आपको भी मालूम है कि आपकी खुशी किसमें है, ऐसे बैठे रहने में या वापस पुलिस ज्वाइन करने में। चुपचाप सेलफोन निकालिए और एसपी साहब को कॉल कीजिए।”

उस वक्त मेरा मन 90 प्रतिशत कह रहा था कि पुलिस वापस ज्वाइन कर लो, समर, लेकिन 10 प्रतिशत कह रहा था कि नहीं। मैंने 90 प्रतिशत को नजर में रखते हुए एसपी साहब को कॉल किया।

“बोलो, समर।” एसपी साहब ने कहा।

“मैं वापस ज्वाइन करना चाहता हूं।”

“गुड, समर, यह तो खुशी की बात है। अखबार देखा तुमने?”

“हाँ जनाब, मैंने देखा।”

“तुमको इसी केस पर काम करना है। कब आ रहे हो?”

“अभी फिलहाल तो निश्चित नहीं है।”

“लेकिन जितना जल्दी आ सको, समर, आ जाओ।”

“जी, बिल्कुल। लेकिन मेरा एक सवाल है।”

“हाँ , पूछो ना, समर।”

“मेरा सस्पेंशन कैसे हटा?”

“आईजी दुबे ने हटवाया है।”

“ओह, लेकिन एसपी साहब, मैं वापस एक ही शर्त पर ज्वाइन करूंगा।”

“बोलो ना, समर, क्या शर्त है?”

“मैं आईजी को रिपोर्ट नहीं करूंगा।”

“तुम्हें किसी को रिपोर्ट करने की जरूरत नहीं है। तुम खुद बॉस हो, तुम्हारा निर्णय ही अंतिम निर्णय होगा। बाकी मदद के लिए हम हैं ही।”

“एक और शर्त है।”

“निसंकोच बोलो, समर।”

“एसटीएफ वापस गठित किया जाए और जो टीम पहले थी, वही टीम मुझे वापस चाहिए।”

“बिलकुल, तुम्हारी टीम तुम्हें वापस मिल जाएगी।”

“धन्यवाद, एसपी साहब।”

“इसकी कोई जरूरत नहीं है, समर, तुम डिज़र्व करते हो।”

“मेरी एक और इच्छा है, अगर यह पूरी हो जाती, तो मैं तुरंत आ जाऊं।”

“क्या बताओ?”

“चंद्रकांत यादव से माफी मिल जाती, तो...” मैंने झिझकते हुए यह कहने की सोची।

“ठीक है, मैं आईजी से बात करता हूं।”

“ठीक है, कीजिए।”

“घर में सब बढ़िया है ना, समर?”

“जी, एसपी साहब।”

“ठीक है, फिर रखता हूं। और तुम जल्दी आने का प्रयास करो।”

“ठीक है, एसपी साहब।” कॉल डिस्कनेक्ट होने के बाद मैंने जैसे ही अपना सेलफोन नीचे बिस्तर पर रखा, देखा कि सिया मुझे मुस्कुराते हुए देख रही है।

“उधर देखो।” सिया ने मुस्कुराते हुए दरवाजे की तरफ देखने को कहा। मैंने दरवाजे की तरफ देखा, तो पापा और माँ मुस्कुराते हुए मुझे देख रहे थे। मेरे देखते ही पापा ने आकर मुझे गले लगा लिया, फिर सिया और माँ ने भी मुझे गले लगा लिया। इस वक्त मैं अपने आंसुओं को रोक नहीं पाया और ऐसा नहीं था कि सिर्फ मेरे ही आँखों मे आंसू थे। माँ, पापा, और सिया के भी आंखों में आंसू थे। आज मुझे पता चला कि खुशी के आंसू भी होते हैं।

“मुझे तुम पर गर्व है, बेटा।” पापा ने मुझसे कहा। मैं उनकी खुशी में बहुत खुश था, और अब मैं दिल से वापस पुलिस में जाना चाहता था।

शाम को मैं अपने कमरे में बैठकर "आईपीएस संतोष मिश्रा" नामक उपन्यास पढ़ रहा था। तभी सिया कमरे में आई और मेरे आंखों को बंद करते हुए मुझे हॉल में टीवी के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। वहाँ माँ और पापा भी उपस्थित थे और वे भी टीवी देख रहे थे। जैसे ही सिया ने मेरे आंखों से अपने हाथ हटाए, मैंने टीवी पर चंद्रकांत यादव को देखा। वह एक प्रेस कांफ्रेंस कर रहा था। टीवी म्यूट पर था, तो पापा ने तुरंत आवाज बढ़ा दी।

“सुरेश की हत्या को सिर्फ एक ही काबिल अफसर सुलझा सकता है, और वो है समर प्रताप यादव। उनका सस्पेंशन भी हटा दिया गया है,” चंद्रकांत यादव बोल रहा था।

“पर उन पर तो फ्रॉड का इल्जाम लगा था, और उन पर यह भी आरोप था कि उन्होंने अवधेश सिंह का एनकाउंटर गलत तरीके से किया था?” एक रिपोर्टर ने पूछा।

“झूठा इल्जाम था। समर प्रताप एक ईमानदार पुलिस अफसर हैं। आप लोगों को शायद याद नहीं होगा कि अवधेश सिंह एक कुख्यात अपराधी था। उसने एक आईपीएस

अफसर को जान से मार दिया था। उसके साथ ऐसा ही होना चाहिए था, ताकि अपराधी पुलिस के नाम से डरें।"

"अगर समर प्रताप यादव सही थे, तो उनके साथ ऐसा दुरव्यवहार क्यों किया गया?" दूसरे रिपोर्टर ने पूछा।

"यह विरोधियों की चाल थी, लेकिन समर प्रताप जी, हम आपसे तहे दिल से माफी मांगते हैं।"

यह सुनने के बाद मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं बहुत खुश था, और इतने में एसपी साहब का भी कॉल आ गया। मैंने कॉल रिसीव किया।

"समर, अब तो खुश हो ना?" एसपी साहब ने मुझसे कहा।

"जनाब, बहुत खुश! मैं टिकट करवा लेता हूं।"

"टिकट करवाने की कोई जरूरत नहीं है। लिफाफा अच्छे से खोलकर देखो, कल की टिकट पहले से ही करवा कर भेज दी है।"

"ठीक है जनाब, मैं कल निकलता हूं।"

"ठीक है, समर।"

मैंने कॉल डिस्कनेक्ट होते ही सिया को लिफाफा लाने को कहा। सिया लिफाफा लेकर आई और मुझे दे दिया। मैंने लिफाफा खोलकर देखा तो उसमें ट्रेन की दो टिकट थीं। मैंने सिया की ओर देखा और उससे कहा,

"कल 8:00 बजे की ट्रेन है।"

"हाँ , तो तुम्हारा सामान पैक कर देती हूं।"

"मेरा क्यों? तुम भी तो जा रही हो।"

"नहीं, मैं कुछ दिन माँ-पापा के साथ ही रहूंगी।"

"सिया, पर मैं अकेले कैसे…"

"कुछ नहीं बोलोगे तुम! मुझे मां-पापा के साथ कुछ दिन रहना है। इतने सालों में उनके साथ थोड़ा भी वक्त नहीं बिताया है," सिया ने मेरी बात काटते हुए कहा।

"वक्त तो मैंने भी नहीं बिताया है।"

"अरे बेटा, इसका मन है, तो कुछ दिन रहने दो," पापा ने कहा।

"हाँ , सुना, पापा क्या कह रहे हैं। तुम इस केस को सॉल्व कर लो, उसके बाद मैं आ जाऊंगी।"

"ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी।"

मैं दुखी था कि सिया मेरे साथ नहीं जा रही है, लेकिन इस बात से भी खुश था कि वह मां-पापा के साथ कुछ वक्त बिताना चाहती है।

अगले दिन, मैं ट्रेन पकड़कर पुर्णीया के लिए रवाना हो गया। दो दिन बाद, जब मैं पुर्णीया पहुँचा, तो स्टेशन पर उतरते ही मैंने शंकर को सामने देखा। उसे देखते ही मैं उसे गले लगा लिया। पीछे अभिजीत और चार कांस्टेबल्स भी खड़े थे। मैंने अभिजीत और कांस्टेबल्स से हाल-चाल पूछा। कांस्टेबल्स ने मेरा सामान उठाया और स्टेशन से बाहर आकर जीप में रखा।

मुझे लेने के लिए मेरी पुरानी स्कॉर्पियो भेजी गई थी, और ड्राइवर भी अभिजीत था। शंकर भी मेरे साथ था। यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। वहाँ से मुझे मेरे पुराने क्वार्टर ले जाया गया। मैं काफी खुश था कि सब कुछ वापस मिल गया। मैंने सिया को कॉल करके सब कुछ बताया, और वह भी यह सुनकर खुश हो गई। फिर मैंने मां-पापा से भी बात की।

नहा-धोकर मैं अभिजीत और शंकर के साथ एसपी ऑफिस गया और एसपी साहब से मिला। उसके बाद मैं एसटीएफ ऑफिस जाकर सबसे मिला।

"जनाब, आज आप आराम क्यों नहीं कर लेते? कल से काम शुरू करेंगे," शंकर ने मुझसे कहा।

"नहीं शंकर, काम जरूरी है।"

फिर सबने ज़िद की, "जनाब, आज आप आराम कर लें।" तो मैंने कहा, "सिर्फ मैं क्यों आराम करूं? तुम सब आज शाम मेरे घर आओ, आज पार्टी करते हैं।" यह कहकर मैं वापस अपने क्वार्टर आ गया।

शाम को सभी एसटीएफ अफसर मेरे क्वार्टर पहुंचे। हमने साथ मिलकर खाना बनाया, खाया, और बीते दिनों की बहुत सारी बातें कीं। फिर रात होते ही वे लोग चले गए, और मैं भी सो गया।

7.सुराग तो नहीं मिला आज

25 नवंबर 2003

मैं सुबह जगा और फटाफट फ्रेश होकर नाश्ता बनाया। मुझे नाश्ता बनाना नहीं आता, इसलिए मैंने ब्रेड और चाय को ही नाश्ता समझकर ग्रहण कर लिया। सिया के ना रहने से मुझे ऐसी ही दिक्कतें आने वाली थीं। मैंने एक चेक शर्ट उठाई और पहनी, और नीचे वही वर्दी वाली पैंट और जूते। इसके बाद मैं खुद को एक बार आईने में निहारता हूं। मूंछ और दाढ़ी भी बड़े हो गए थे क्योंकि मैंने जेल में उन्हें नहीं कटवाया था। काश अभी सिया यहाँ होती तो वह मुझे इस घने मूंछ-दाढ़ी में ड्यूटी पर जाते हुए देख पाती।

वैसे भी जब मैंने अपनी मूंछ-दाढ़ी बढ़ाई, तो मैं देवदास बन बैठा था, जोकि सिया को पसंद नहीं था। उसे तो मूंछ-दाढ़ी वाला पुलिस अफसर पसंद था और मैं घर पर मूंछ-दाढ़ी वाला देवदास बना बैठा था।

मैं आईने में खुद से बातें कर रहा था, तभी किसी ने दरवाजे की बेल बजाई। मैंने जाकर दरवाजा खोला, तो देखा शंकर और अभिजीत मुझे लेने आए हुए हैं। मैं अंदर आकर अपना सेलफोन लेता हूँ और अपना दरवाजा लॉक करके उनके साथ एसटीएफ ऑफिस चला जाता हूं।

ऑफिस पहुंचते ही मैंने शंकर से सुरेश की फाइल लाने को कहा। शंकर ने मुझे फाइल लाकर दी। मैंने फाइल खोला और एफआईआर कॉपी निकालकर पढ़ा। फिर मैंने लापता होने से लेकर हत्या होने तक की जो भी जांच-पड़ताल हुई, उसकी रिपोर्ट पढ़ी। इसके बाद भी मुझे कुछ खास समझ नहीं आया कि हत्या का मकसद क्या था। फिर मैंने फाइल में रखी पोस्टमार्टम रिपोर्ट और फोरेंसिक रिपोर्ट को देखा। रिपोर्ट में लाश की कुछ

तस्वीरें भी थीं। तस्वीरों में साफ दिख रहा था कि सुरेश की दोनों आंखें निकाली गई थीं, गले के स्वर-तंत्री के बीचों-बीच चाकू को आरपार घोंपा गया था और गुप्तांग काटे गए थे। फोरेंसिक रिपोर्ट के अनुसार, पहले गुप्तांग काटे गए, फिर आंखें निकाली गईं, और उसके बाद गले में चाकू घोंपकर मारा गया। रिपोर्ट के अनुसार, सुरेश को करीबन एक घंटे तक टॉर्चर किया गया और उसकी मौत रात 1:00 बजे हुई थी।

रिपोर्ट पढ़ने के बाद मैंने शंकर को अपने केबिन में बुलाया। शंकर जैसे ही मेरे केबिन में आया, मैंने उससे सुरेश की हत्या के दिन की जांच-पड़ताल में जो भी सीसीटीवी फुटेज इकट्ठा किया गया था, उसे लाने को कहा। शंकर दो पेनड्राइव लेकर आया और मेरे सामने टेबल पर रखा।

“लगाओ इसको कंप्यूटर में,” मैंने शंकर से कहा।

“जनाब कौनसा लगाऊं, इसमें दो हैं?”

“कॉलेज वाला लगाओ।” शंकर कंप्यूटर में पेनड्राइव लगाता है और फुटेज प्ले करता है। कॉलेज वाला फुटेज देखने के बाद, मैं शंकर से दूसरा पेनड्राइव लगाने को कहता हूँ। दूसरे फुटेज देखने के बाद बस इतना मालूम होता है कि जब सुरेश कॉलेज से निकला और जब सुरेश को पुल के पास गाड़ी में देखा गया, तो उसमें तीन घंटे का अंतर था। जबकि कॉलेज से रामनगर पुल की दूरी आधे घंटे की थी।

“इन तीन घंटों में सुरेश क्या कर रहा था या किससे मिला, यह पता लगाना होगा।” मैंने शंकर से कहा।

“जनाब, हमने पता लगाने की कोशिश की, लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया।” शंकर ने मुझसे कहा।

“उस इलाके के सभी दुकानदारों से तुमने पूछताछ की है?”

“जी जनाब।”

“वो स्टेटमेंट में जो कॉलेज कर्मचारी अमरेश का जिक्र था, उसका ऑडियो रिकॉर्डिंग है क्या?”

“जी जनाब।”

“वो लेकर आओ और चार अफसरों की टीम बनाकर, उसे भेजो, पता करने के लिए कि सुरेश उन तीन घंटों में कहाँ था।”

“जी जनाब।” बोलकर शंकर मेरे केबिन से बाहर चला जाता है।

चंद मिनटों में शंकर वापस मेरे केबिन में आता है और मेरे टेबल पर एक यंत्र रखता है जिससे आवाज रिकॉर्ड करके सुनी जा सकती है।

“चालू करो इसको, बस वो कर्मचारी वाला भाग चलाना।”

“जी जनाब।” शंकर उस कॉलेज कर्मचारी का रिकॉर्डिंग चालू करता है। उस रिकॉर्डिंग में कर्मचारी की आवाज सुनकर ही मुझे लगा कि इसको कुछ तो और पता होगा। जब मैं उसका स्टेटमेंट पढ़ रहा था,

उस व्यक्त भी मुझे लगा की अमित कुमार को कुछ सवाल और करना चाहीइए था इस कर्मचारी से ।

“एक काम करो शंकर, किसी को साथ लो और इस कर्मचारी अमरेश को उठाकर लाओ।” मैंने शंकर से कहा|

“जी जनाब।”

“चार अफसरों की टीम को भेजा तुमने?”

“हाँ जनाब, भेज दिया।”

“ठीक है, तुम कर्मचारी को ले आओ।” शंकर मुझे सलाम करता है और दो अफसर के साथ कॉलेज के लिए निकल जाता है।

करीब एक घंटे बाद शंकर उस कॉलेज कर्मचारी अमरेश को लेकर एसटीएफ ऑफिस पहुंचता है। तब तक मैं सुरेश की फाइल को दोबारा बारीकी से देख रहा था। शंकर उसे लेकर मेरे केबिन में आता है।

“अमरेश नाम है तुम्हारा?” मैं पूछता हूं।

“जी साहब।”

“बैठो।” मेरे कहने पर वह मेरे सामने रखी कुर्सी पर बैठ जाता है।

“सुरेश के बारे में क्या जानते हो?” मैंने पूछा।

“साहब, जितना हमको मालूम था, उस दिन बता दिए थे।”

“और भी कुछ तो मालूम होगा तुम्हें।”

“नहीं साहब।”

“जो भी जानते हो, बता दो, वरना साहब बहुत मारेंगे।” शंकर अमरेश से कहता है।

“नहीं साहब, हमको ज्यादा कुछ मालूम नहीं है।” इतना कहते ही शंकर उसकी कनपटी पर एक जोरदार थप्पड़ जड़ता है।

“सही-सही बता दो, नहीं तो समस्या हो जाएगी।” मैंने कहा।

“साहब, हमको नहीं मालूम है, कुछ भी सच बोल रहे।” उसने अपनी कनपटी को हाथ से सहलाते हुए कहा।

“शंकर, बंद करो इसको लॉकअप में, चलो इसकी कुटाई करते हैं।”

“साहब… साहब… आप पूछिए, हम बताएंगे।” उसने हाथ जोड़ते हुए कहा।

“ठीक है, तो बताओ फिर।” मैंने कहा।

“क्या बताऊं साहब।”

“हत्या से पहले कुछ अजीब हुआ था?”

“साहब, एक घटना हुई थी, सुरेश भैया किसी दो लड़कों को पकड़कर पुलिस में दिए थे, मारपीट के इल्जाम में। शायद पुलिस उन दोनों को जेल भी भेज दिया।”

“किस थाने में दिया था?”

“वहीं, कॉलेज के बगल में जो पड़ता है।”

“सहायक थाना?” शंकर पूछता है।

“हाँ साहब।”

“शंकर, सहायक थाना प्रभारी को कॉल लगाओ।” शंकर सहायक थाना प्रभारी एसआई अमित कुमार को कॉल लगाकर मुझे देता है।

“हेलो, मैं समर प्रताप यादव एसटीएफ से।”

“जय हिंद जनाब।”

“अमित जी, बीते दिन में सुरेश यादव किसी दो लड़कों को लाकर आपके चौकी में बंद करवाया था क्या?”

“जी जनाब।”

“किस मामले में?”

“जनाब, वो दोनों दाखिला करवाने में अड़चन डाल रहे थे और कुछ लड़कों के साथ मारपीट कर रहे थे।”

“एफआईआर कॉपी मुझे भेजिए।”

“जी जनाब, भेजता हूं।”

थोड़ी देर तक मैं अमरेश से पूछताछ करता रहा, लेकिन उसने कोई ऐसा जवाब नहीं दिया जिससे इस केस का कोई लेना-देना हो। थोड़ी देर बाद सहायक थाने से फैक्स भी आ गया। शंकर फैक्स मशीन से फैक्स निकालकर मुझे देता है।

जैसे ही मैं उस एफआईआर कॉपी को देखता हूं, तो मुझे दो नाम दिखते हैं—रिशव शुक्ला और धैर्य शुक्ला, सन ऑफ़ रमन शुक्ला।

“इन दोनों बच्चों को तो मैं जानता हूं,” मैंने शंकर से कहा।

“कैसे जनाब?”

“मेरे बाहर आने से पहले ये मेरे ही बगल में सोते थे।”

“ओ,”

“ये बता रहा था, इसकी बहन के साथ कुछ हुआ था, इसके पिताजी ने एफआईआर भी करवाई थी।”

“किस थाने में जनाब?”

“चंपानगर में किया होगा,” मैंने एफआईआर पर दोनों का निजी निवास देखते हुए कहा।

“अमरेश, सच-सच बताओ, सुरेश किसी लड़की को परेशान भी करता था?” मैंने पूछा।

“साहब, एक लड़की थी, उसका नाम श्रेया था।”

“कहाँ की थी?”

“साहब, ये तो नहीं पता।”

“क्या हुआ था उस लड़की के साथ?”

“साहब, इतना तो नहीं मालूम, बस इतना जानते हैं कि वो सुरेश भैया के कारण कॉलेज भी आना छोड़ दी।”

“शंकर, कॉल लगाओ चंपानगर थाना और इन लड़कों के बारे में पता करो।”

“जी जनाब, करते हैं।” इतना बोलकर शंकर केबिन से चला जाता है।

“अमरेश, तुम भी जाओ। जब बुलाया जाएगा, तुम्हें आना पड़ेगा।”

“साहब जी, आ जाएंगे।” यह बोलकर अमरेश भी चला जाता है।

कुछ देर बाद शंकर मेरे केबिन में आता है और कहता है, “जनाब, ये वही लड़के हैं, जिनके बारे में आपने कहा था।”

“इसके पिता ने कोई एफआईआर करवाई थी क्या?”

“जी जनाब, सुरेश यादव के खिलाफ छेड़छाड़ के मामले में एफआईआर करवाई थी श्रेया शुक्ला ने।”

“शंकर, मुझे श्रेया शुक्ला से मिलना है। पता करो, इसका घर कहाँ है।”

“जनाब, चंपानगर थाने चलते हैं। वहाँ से किसी कांस्टेबल को लेकर चले जाएंगे।”

“ठीक है, चलो।” मैं अपनी कुर्सी से उठते हुए कहता हूं।

मैं, अभिजीत और शंकर मेरी गाड़ी में बैठकर चंपानगर के लिए रवाना हो जाते हैं। हमारे पीछे कुछ अफसर दूसरी गाड़ी में आ रहे होते हैं। लगभग एक घंटे बाद हम चंपानगर थाना पहुंचते हैं। वहाँ जाकर मैं चंपानगर के थाना प्रभारी से मिलता हूं। मैं श्रेया शुक्ला द्वारा की गई एफआईआर के बारे में भी पूछता हूं, और मुझे यह जानकर बहुत गुस्सा

आया कि चंपानगर थाना प्रभारी ने चंद्रकांत यादव के दबाव में आकर श्रेया शुक्ला के मामले में कोई एक्शन नहीं लिया। मैंने चंपानगर थाना प्रभारी को काफी डांट लगाई। फिर चंपानगर थाना के एक कांस्टेबल को लेकर हम श्रेया शुक्ला और उनके माता-पिता से मिलने के लिए रवाना हो गए। चंपानगर थाना से आधे घंटे की दूरी पर उनका घर था।

“जनाब, मेरे मन में काफी देर से एक सवाल है, पूछूं क्या?” रास्ते में शंकर ने मुझसे कहा।

“हाँ , शंकर, पूछो ना।”

“हम श्रेया शुक्ला से क्यों मिलने जा रहे हैं?”

“शंकर, शंकुर की हत्या जो हुबहू ऐसी ही हुई थी, वह भी छेड़छाड़ के मामले में ही हुई थी।”

“जी जनाब।”

"पहली हत्या के बारे में मैंने भी खबरों में ही सुना है, शंकर। लेकिन एक बात गौर करने लायक है। श्रेया शुक्ला ने छेड़छाड़ की शिकायत दर्ज करवाई, और कुछ दिनों बाद सुरेश यादव की हत्या हो गई—उसी तरह जैसे शंकुर की हत्या हुई थी। क्या पता, हमें यहाँ से कोई सुराग मिल जाए।"

“जनाब, ये तो हम सोचे ही नहीं।”

“शंकर, सोचो। एक तो तुम पुलिस में हो, ऊपर से मेरे साथ हो, फिर ढीला हाथ मत रखा करो।” मैंने मुस्कुराते हुए शंकर से कहा।

“जी जनाब।”

कांस्टेबल द्वारा बताए मार्ग पर चलते-चलते हम कुछ देर बाद शुक्ला जी के घर पहुंच गए। शुक्ला जी अपने दरवाजे पर कुर्सी लगाकर बैठे हुए थे और किसी से फोन पर बात कर रहे थे। जैसे ही हम गाड़ी से उतरे, शुक्ला जी चौंक गए। मैंने उनके चौंके हुए चेहरे को देखकर सभी अफसरों को गाड़ी में ही बैठने को कहा। केवल मैं और शंकर शुक्ला जी के पास गए। शुक्ला जी ने तुरंत दो कुर्सियां लाकर हमें बैठने के लिए दीं।

“मैं समर प्रताप यादव...”

“सर, आपको कौन नहीं जानता है,” शुक्ला जी ने मेरी बात काटते हुए कहा।

“यह खुशी की बात है कि आप मुझे जानते हैं, लेकिन मैं दुखी हूँ कि पुलिस आपकी मदद नहीं कर पाई।”

“वो तो है, लेकिन भगवान ने उसे सजा दे दी, जिसने मेरे बच्चों की जिंदगी तबाह की।”

"ऊपर वाला बुरे लोगों के साथ बुरा ही करता है, शुक्ला जी।"

"जी सर।"

"मुझे आपकी बेटी से मिलना है," मैंने कहा।

"रुकिए सर, बुला देता हूं," शुक्ला जी ने बिना झिझक के कहा। इसके बाद मेरा इस इंसान पर से शक का दायरा कम हुआ। पहले मुझे लगा कि यह भी हत्या कर सकता है, क्योंकि एक बाप कितना भी मजबूर हो, लेकिन वह अपने बच्चों के प्रेम में कुछ भी कर सकता है। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं होता।

चंद मिनट भी नहीं बीते होंगे कि सामने से श्रेया आती हुई दिखी। वह आकर मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गई।

"नमस्ते सर," श्रेया ने हाथ जोड़ते हुए मुझसे कहा।

"नमस्ते बेटा। कुछ पूछना था आपसे," मैंने कहा।

"जी सर, पूछिए।"

"बेटा, कॉलेज में क्या हुआ था, आपके साथ?"

"सर, शुरू से बताऊं?"

"बेटा, शुरू से बताओ।"

"सर, मैं एम.ए. में दाखिला कराने गई थी, लेकिन कुछ दस्तावेज़ों के कारण मेरे दाखिले में समस्या हो रही थी। एक दिन कॉलेज कैंपस में मायूस खड़ी थी कि मेरे पास एक आदमी आया। उसने पूछा क्या हुआ, मैंने नज़रअंदाज़ किया, तो उसने कहा, मेरा नाम सुरेश यादव है, मैं यहाँ का छात्राध्यक्ष हूँ । आपको कोई समस्या है तो बता सकती हैं। अगर कोई काम नहीं हो रहा कॉलेज में, तो बताइए मैं करवा दूंगा। यह सुनकर मेरी उम्मीद जगी कि मेरा दाखिला हो जाएगा। मैंने उसे बताया कि मेरे दाखिला नहीं हो रहा कुछ दस्तावेज़ों के कारण। उसने कहा, जितने भी दस्तावेज़ आपके पास हैं, वो मुझे दे दीजिए और आप मेरा नंबर लिख लीजिए। दो दिन बाद मुझे कॉल कर लीजिएगा। उसने अपना नंबर दिया और मैंने अपने सेलफोन में सेव कर लिया। दो दिन बाद मैंने कॉल किया, तो पहले वह मुझे पहचाना ही नहीं। जब मैंने बताया कि आपको मेरा दाखिला कराने के लिए दस्तावेज़ दिए थे, तब उसने पहचाना और कहा कि अभी आने की जरूरत नहीं है, मैं आपको कॉल करके बता दूंगा कब आना है। उसी शाम उसने मुझे कॉल किया और कहा, कल दोपहर में आ जाइएगा। अगले दिन जब मैं गई, तो उसने मुझे कुछ दस्तावेज़ दिए जिन्हें देखने पर पता चला कि मेरा दाखिला हो गया है। मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने कहा, आप आइसक्रीम खाएंगे, मेरे तरफ से एक छोटा सा ट्रीट समझिए। पहले

तो उसने मना किया, फिर जब मैंने दोबारा कहा, तो वह मेरे साथ जाकर कॉलेज गेट के बाहर आइसक्रीम खाई। थोड़ी बहुत पढ़ाई-वगैरह के बारे में बात की। फिर मैं रोज कॉलेज जाने लगी और वह मेरे आसपास भटकने लगा। धीरे-धीरे मैं उसके प्रति आकर्षित हो गई, फिर हमारी बातें होने लगीं रोज कॉल पर। एक दिन उसने कहा, कुछ बनाकर खिलाओगी, तुम्हारे पास आऊं? मैं किराए पर एक कमरा लेकर रहती थी, इसलिए मैंने मना किया। लेकिन वह बहुत जिद्द करने लगा, तो मैंने हाँ कह दिया। शाम होने को थी, मैं डर भी रही थी, लेकिन मैं उस पर भरोसा करती थी। वह कुछ देर में आया और आकर मेरे कमरे में बैठ गया। फिर मैं बगल वाले दुकान चली गई जैसे ही, मैं लौटकर आई, देखा कि एक मेरा प्रोफेसर भी कमरे मे आकर बैठा है। मैं डर गई। मैंने पूछा, सुरेश जी, ये यहाँ क्यूँ? इतने में उस आदमी ने मेरे हाथ को पकड़ कर अपनी और खींचा। मैं किसी तरह चिल्लाते हुए कमरे से बाहर आई। मेरी आवाज़ सुनकर बगल की लड़कियां भी बाहर आ गईं। वो दोनों, इतनी लड़कियों को देखकर वहाँ से भाग गए।"

यह बोलते ही श्रेया रोने लगी। मैंने उसे सांत्वना दी। शुक्ला जी पानी लेकर आए और उसे पानी पिलाया।

"अब ठीक हो न, बेटा?" मैंने पूछा।

"जी सर।"

"आगे क्या हुआ, बेटा?"

"अगले दिन मकान मालिक ने आकर मुझे कमरा खाली करने को कहा। मैं कमरा खाली करके घर आ गई। मुझमें हिम्मत नहीं थी कि मां-पापा को यह सब बताऊं, और वह मुझे फोन करके धमकी देता था कि अगर किसी को कुछ बताया तो तुम्हारे घरवालों को जान से मरवा देंगे। पापा मुझे कॉलेज जाने को कहते, मैं मन मारकर दो दिन घर से ही कॉलेज गई। लेकिन वहाँ भी मेरे साथ बदसुलूकी की गई। एक दिन थक-हारकर मैंने आत्महत्या करने की कोशिश की। पलंग पर कुर्सी रखकर उस पर खड़ी हो गई, पंखे से अपना दुपट्टा बांधा। जैसे ही मैं फंदा गले में डालकर कुर्सी को पैर से ढकलने वाली थी, मेरी माँ ने मुझे देख लिया। उसके बाद मेरी हिम्मत नहीं हुई कि मैं मर जाऊं। फिर मैंने मां-पापा को सब बताया और पापा मुझे लेकर पुलिस चौकी गए और एफआईआर दर्ज करवाई।"

"उसके कुछ दिन बाद ही उन्होंने रिशव और धैर्य को जेल भिजवा दिया," शुक्ला जी ने कहा।

"अच्छा बेटा, वो प्रोफेसर कौन था? उसका नाम एफआईआर में है?"

"नहीं सर।"

"क्यों?"

"उसने मुझे धमकी दी थी कि अगर मैंने उसका नाम कहीं लिया तो वह मुझे हर साल फेल करवा देगा। इस डर से मैंने मां-पापा को भी नहीं बताया, आज पहली बार बता रही हूं।"

"नाम क्या है उसका?"

"निशिकांत तिवारी।"

"तुम चिंता मत करो, बेटा। तुम पढ़ाई पर ध्यान दो, मैं इसे देखता हूं।"

"ठीक है, सर।"

"जाओ बेटा, लेकिन चिंता नहीं करना है। बी स्ट्रॉन्ग।"

"हूं, सर।" श्रेया ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया और अंदर चली गई।

मैंने शंकर से चंपानगर थाना प्रभारी को कॉल लगाने को कहा। शंकर ने तुरंत कॉल लगाकर मुझे सेलफोन दिया।

"मैं समर प्रताप यादव बात कर रहा हूं," मैंने कहा।

"जी जनाब," थाना प्रभारी ने जवाब दिया।

"पुर्णीया कॉलेज के प्रोफेसर निशिकांत तिवारी को गिरफ्तार कर अपने थाने में बंद कीजिए।"

"किस जुर्म में, जनाब?"

"श्रेया शुक्ला को उसके कमरे पर जाकर मोलेस्ट किया गया, रेप करने की कोशिश की गई। आपके कांस्टेबल ने श्रेया शुक्ला का बयान ले लिया है," मैंने गुस्से में कहा।

"जी जनाब, अभी गिरफ्तारी के लिए निकलते हैं।"

"कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए। सायक थाना से मदद लीजिए और निशिकांत तिवारी को तुरंत गिरफ्तार कीजिए। अगर कोई भी सवाल-जवाब करे, तो कहिए कि यह समर प्रताप यादव का आदेश है।"

"जी जनाब।" मैंने कॉल डिस्कनेक्ट करके सेलफोन वापस शंकर को दे दिया।

"शुक्ला जी, अब चलें," मैंने हाथ जोड़कर शुक्ला जी से कहा।

"सर, चाय तो पी लीजिए।"

"नहीं शुक्ला जी, अभी मैं ड्यूटी पर हूं, आपकी चाय भी मेरे लिए रिश्वत सामान है।"

"कभी सेवा का मौका दीजिएगा, सर।"

"हम आपकी सेवा के लिए हैं, शुक्ला जी। फिलहाल, आप बच्ची की पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दें।"

"बिलकुल, सर।"

मैं जाकर गाड़ी में बैठ गया, फिर मेरे मन में ख्याल आया कि रिशव और धैर्य भी तो जेल में हैं। मैंने शुक्ला जी को आवाज देकर अपने पास बुलाया।

"रिशव और धैर्य के बारे में वकील ने क्या बताया है?" मैंने शुक्ला जी से पूछा।

"सर, चार्जशीट अभी तक नहीं पहुंची है।"

"अच्छा, ठीक है, मैं देखता हूं।"

मैंने शुक्ला जी को नमस्कार कहकर विदा लिया और शंकर से एसआई अमित को कॉल करके जल्द से जल्द चार्जशीट भिजवाने के लिए कहा। इसके बाद हम चंपानगर थाना जाकर कांस्टेबल को वहाँ छोड़ते हुए पुर्णीया वापस आ गए।

शाम का वक्त था, जब शंकर चाय लेकर मेरे केबिन में आया। उसने टेबल पर चाय रखी और सामने की कुर्सी पर बैठ गया। मैं तीनों हत्या की फाइलें देख रहा था।

"जनाब, चाय पी लीजिए, ठंडी हो जाएगी।"

"हाँ शंकर, पी लेते हैं," मैं फाइल बंद करके चाय पीने लगा।

"कोई सुराग तो नहीं मिला, जनाब, आज?"

इतने में शंकर का सेलफोन बजा। शंकर ने अपनी जेब से सेलफोन निकाला और कॉल रिसीव किया।

"जनाब, चंपानगर थाना प्रभारी लाइन पर हैं," शंकर ने मुझे सेलफोन देते हुए कहा।

"हेलो, बोलिए SHO साहब।"

"जनाब, इस प्रोफेसर को गिरफ्तार कर लिया है।"

"बहुत बढ़िया, ले जाइए और चौकी में बंद कीजिए, हरामखोर को। कल इसे जेल भेजिए।"

"जी जनाब, जय हिंद।"

"जय हिंद," मैंने कॉल डिस्कनेक्ट करके सेलफोन शंकर को वापस दे दिया।

"शंकर, तुम क्या कह रहे थे?"

"जनाब, आज कोई सुराग नहीं मिला।"

"शंकर, सुराग तो नहीं मिला, लेकिन आज सुकून बहुत मिला है। बहुत दिनों बाद ऐसा महसूस हो रहा है कि किसी को इंसाफ दिला पाए हैं।"

"जी जनाब, वो तो है।"

"वो टीम जो तुमने भेजी थी, उसका क्या हुआ?"

"माफ कीजिएगा, जनाब। ध्यान से उतर गया, आपको बता नहीं पाए, उन लोगों को कुछ पता नहीं चला।"

"ओह, ऐसा करो, मुझे क्वार्टर छोड़ दो। तुम लोग भी जाओ, कल इस मामले पर काम करते हैं।"

"जी जनाब, चलिए।"

मैं, अभिजीत और शंकर मेरे क्वार्टर जाने के लिए निकले। रास्ते में एक जगह मैंने अभिजीत को पैसे देकर भेजा, खाना पैक करवाने के लिए। क्योंकि सिया तो थी नहीं, खाना बनाता कौन? इसलिए मैंने बाहर से ही खाना लाना उचित समझा। उसके बाद, उन्होंने मुझे क्वार्टर पर छोड़ दिया। फ्रेश होकर मैं फिल्म देखने लगा, फिर खाना खाकर सो गया।

8.सुराग चलकर आएगा शंकर

26 नवंबर 2003

सुबह के 8:00 बज रहे होंगे, मैं गहरी नींद में था, अचानक डोरबेल की आवाज़ कानों में चुभने लगी। मैं अपने बिस्तर से उठा और दरवाजे के पास जाकर दरवाजा खोला तो देखा, दरवाजे के सामने एक बुजुर्ग खड़े थे, उनके हाथ में एक थैला था।

"क्या हुआ बाबा?" मैंने पूछा।

"साहब, मुझे एसपी साहब ने भेजा है यहाँ काम करने के लिए।"

"ओ, अंदर आइए बाबा।" वह अंदर आते हैं और अपने थैले से दूध और ब्रेड निकालकर किचन में रखते हैं।

"आप क्या खाओगे साहब, नाश्ते में?"

"बाबा, जो आप खिला दो।"

"ऑमलेट खाओगे आप साहब?"

"बिलकुल बाबा।"

"ठीक है साहब, बना देता हूँ।"

इसके बाद मैं वाशरूम चला गया। वाशरूम में मैं बस यही सोच रहा था कि बाबा अच्छा खाना बनाते होंगे या नहीं। मैं फ्रेश होकर बाहर आता हूँ। कपड़े पहनकर तैयार होता हूँ और डाइनिंग टेबल पर बैठ जाता हूँ। बाबा तब तक नाश्ता तैयार कर चुके थे। बाबा चाय, ब्रेड और ऑमलेट लाकर मुझे देते हैं। ऑमलेट दिखने में काफी बढ़िया लग रहा था, लेकिन स्वाद तो खाकर ही पता चलता। मैंने एक निवाला उठाकर खाया और मेरा हृदय आनंद से नाचने लगा—वाकई गज़ब का स्वाद था।

"बाबा, ऑमलेट जबरदस्त बनाया है आपने।"

"शुक्रिया साहब।"

ऑमलेट से मुझे याद आया कि सिया को मैंने रात में कॉल ही नहीं किया। मैं तुरंत भागकर अपने कमरे में गया और अपना सेलफोन लेकर सिया को कॉल लगाया।

"हैलो समर बाबू, बीवी को भूल गए?" सिया ने मुझसे कहा।

"खींच लो मेरी टांग।" ये सुनते ही सिया हंसने लगी।

"अच्छा समर बाबू, ये सब छोड़ो, आपने दाढ़ी कटवा ली क्या?"

"नहीं, अब नहीं कटवाने वाला।" मैं खाते हुए बोलता हूँ।

"मैं जब पास थी तब तो रखते नहीं थे, अब दूर हूँ तो रखते हो?"

"तो कटवा लेता हूँ।"

"कोई ज़रूरत नहीं है, समझे?"

"जी हुज़ूर।"

"अच्छा, कोई खाना बनाने वाला है या वर्ल्ड बेस्ट शेफ समर प्रताप यादव खुद से जला-पका के खा रहे?"

"एक बाबा हैं, सुबह ही आए हैं, बड़ा ही स्वादिष्ट ऑमलेट बनाकर खिलाया है उन्होंने।"

"हाँ, तो सुबह अच्छे से खाया करो, दोपहर में तो खाते नहीं।"

"जी हुज़ूर, आपका जो हुक्म हो।"

"जो बोल रही हूँ, वो सुनो, बातें मत बनाओ।"

"जी बिलकुल। पापा कहाँ हैं?"

"माँ-पापा खेत गए हुए हैं।"

"ठीक है बेबी, फिर रखता हूँ, मुझे भी ऑफिस जाना है।"

"ठीक है, जाओ।"

मैंने सिया से बात करते-करते ऑमलेट निपटा दिया था। अब बारी थी चाय और ब्रेड निपटाने की। चाय और ब्रेड खत्म कर, मैं थोड़ी देर वहीं सोफे पर विश्राम करता हूँ। कुछ देर बाद अभिजीत और शंकर नामक दो पुलिसकर्मी आते हैं मुझे लेने के लिए, और मैं उनके साथ एसटीएफ ऑफिस चला जाता हूँ।

ऑफिस जाकर मैं तीनों वारदातों की फाइल को बारीकी से पढ़ रहा था कि मेरा सेलफोन बजने लगा। मैं सेलफोन को हाथ में लेकर देखता हूँ, तो एसपी साहब का कॉल आ रहा होता है। मैं तुरंत रिसीव करता हूँ।

"जय हिंद, जनाब।"

"जय हिंद, समर! क्या अपडेट है?"

"जनाब, पहली हत्या जो 1999 में हुई थी, बिलकुल वैसे ही ये हत्याएं हुई हैं, एक इंच का भी फर्क नहीं है। पहली हत्या के जो हत्यारे हैं, उन्होंने अपने स्वीकारोक्ति में साफ-साफ कहा है की उन्होंने हीं हत्या की है । जनाब, उन्होंने कोर्ट में भी कन्फेस किया है और कोर्ट का पूरा जजमेंट मैंने पढ़ लिया है, और जेल में भी मैं उन्हें देख चुका हूँ। वे हत्या कर सकते हैं, इसमें कोई बड़ी बात नहीं है।"

"समर, कुछ करो इसका |"

"जनाब, जो भी हत्यारा है, वह बहुत स्मार्ट है। वह बखूबी से अपना काम जानता है।"

"कहीं ये वो तो नहीं, जो फिल्म में दिखाते हैं?"

"सीरियल किलर?"

"नहीं-नहीं, वह जो कॉपी करते हैं।"

"कॉपी कैट किलर?"

"हाँ-हाँ, वही।"

"नहीं जनाब, चंकी और आशीष कोई सीरियल किलर नहीं थे। कॉपी कैट किलर का इंस्पिरेशन भी सीरियल किलर होते हैं। वे सीरियल किलर को ही कॉपी करते हैं।"

"तो फिर क्या हो सकता है, समर?"

"जनाब, मुझे लग रहा है कोई बदले की भावना से यह सब कर रहा है।"

"जो भी हो, इसके पीछे जो भी है, उसे जल्द से जल्द सामने लाओ समर। अपराध को बढ़ावा मिल रहा है इससे।"

"जी जनाब। जय हिंद।"

"जय हिंद।" मैंने कॉल डिस्कनेक्ट होते ही सेलफोन को टेबल पर रख दिया।

मैं सुरेश यादव की फाइल से नजर हटाकर, शंकुर यादव की हत्या वाली फाइल पढ़ने लगा। मुझे भी नहीं पता क्यों, लेकिन मुझे उस घटना के बारे में जानना था कि वह घटना क्यों हुई थी। इससे पहले इस जिले में ऐसी कोई घटना नहीं घटी थी। जब शंकुर यादव की हत्या हुई, उसके बाद ही ये सिलसिला शुरू हुआ।

मैंने पूरी फाइल पढ़ी, एक बार नहीं, पहले भी दो-तीन बार पढ़ चुका था। मुझे बस एक चीज़ खटक रही थी, जब वारदात की जगह पर न कोई सबूत मिला, न कोई सुराग

पुलिस के हाथ लगी, तो चंकी और आशीष ने अपने आप को सरेंडर क्यों किया और कोर्ट में कबूल क्यों किया?

मैंने शंकर को अपने केबिन में बुलाया और उससे कहा कि फोरेंसिक टीम के द्वारा सुरेश यादव की वारदात वाली जगह की बनाई गई वीडियो को कंप्यूटर में प्ले करे। शंकर ने वीडियो प्ले किया, लेकिन मुझे कुछ ऐसा नहीं दिखा कि मैं कुछ जांच-पड़ताल करूं। वैसे भी, फोरेंसिक वालों में इतनी काबिलियत होती है कि वे छोटी-छोटी चीजों पर ध्यान देकर कोई न कोई सुराग ढूंढ लेते हैं। लेकिन उनके हाथ भी कुछ खास नहीं लगा था। ये मामला पूरी तरह से उलझा हुआ था। एक समस्या और थी, 2003 से पहले यहाँ फोरेंसिक टीम नहीं थी, जिसके कारण पिछले हत्याओं की कोई फोरेंसिक रिपोर्ट हमारे पास नहीं थी। मैं काफी दुविधा में फंसा हुआ था।

"शंकर, मुझे शंकुर यादव की हत्या के बारे में विस्तार से जानना है।" मैंने शंकर से कहा।

"जनाब, फाइल में तो सारी जानकारी है।"

"नहीं शंकर, इस केस को चालाकी से कोई और मोड़ दे दिया गया है। मुझे उस लड़की से मिलना है, जिसके छेड़छाड़ के इल्जाम शंकुर यादव पर लगे थे।"

"जनाब, वह लड़की रिया तो कुछ दिन बाद ही आत्महत्या कर ली।"

"शंकुर की हत्या से पहले या उसके बाद?"

"शायद उसके छह महीने बाद। दरअसल, वह लोगों के ताने से परेशान हो गई थी।" मुझे यह सुनकर बहुत अफसोस हुआ। लोगों को यूं किसी को जाने बिना ताने नहीं मारने चाहिए, उन्हें जज नहीं करना चाहिए।

"उसका कोई और रिश्तेदार है, जो पूरी बात बता सके?"

"मालूम तो नहीं जनाब, लेकिन पता करता हूँ।"

"पता करो।"

शंकर टीम से रिया के रिश्तेदार के बारे में पता करने को कहता है। उसे पता चलता है कि अभिजीत को रिया के भाई के बारे में जानकारी है। शंकर, अभिजीत को मेरे पास लाता है।

“जनाब, इसे रिया के भाई के बारे में पता है,” शंकर मुझसे कहता है।

“क्या पता है, अभिजीत?” मैंने पूछा।

“जनाब, वह भी कांस्टेबल है, शनेली थाने में। उसे अपने पिता की जगह नौकरी मिली है।”

"उसके पिता को क्या हुआ था?"

"रिया के आत्महत्या के बाद वह टूट गए थे। एक दिन अचानक से उनका एक्सीडेंट हो गया।"

"रिया के भाई का नाम क्या है?"

"अमरजीत।"

"शंकर, अमरजीत को जल्द से जल्द यहाँ लाओ।"

"जी जनाब।" अभिजीत और शंकर, अमरजीत को लाने चले जाते हैं। मैं बैठकर सोचने लगता हूँ कि इस हत्या के रहस्य से कैसे पर्दा हटाया जाए। काफी देर तक मैं अपने दिमाग पर जोर डालता हूँ पर कुछ समझ नहीं आता।
थोड़ी देर बाद, अभिजीत और शंकर अमरजीत को लेकर मेरे पास आते हैं। मैं अमरजीत को बैठने को कहता हूं, और वह सामने रखी कुर्सी पर बैठ जाता है।

"कैसे हो, अमरजीत?" मैंने पूछा।

"ठीक हूं, जनाब।"

"घर में सब कैसे हैं?"

"घर में तो बस माँ है, जनाब, वह भी बीमार रहती है।"

"ध्यान रखा करो उनका।"

"रखता हूं, जनाब।"

"अच्छी बात है। एक विराम लेकर, " लेकिन अमरजीत, अब जो मैं पूछने वाला हूं, उसके लिए अगर बुरा लगे तो मुझे माफ करना।"

"कोई बात नहीं जनाब, आप पूछिए।"

"अमरजीत, मुझे रिया के बारे में शुरू से जानना है। कैसे वह पुर्णीया आई, और कैसे ये सब हुआ?"

"जनाब, रिया इंटर की पढ़ाई के लिए पुर्णीया आई थी। जनता चौक के पास एक कमरा किराए पर लेकर रहती थी। कभी-कभी मेरे बड़े पापा की बेटी स्नेहा भी रिया के पास आया करती थी, जो पहले पुर्णीया में ही रहती थी। स्नेहा दीदी और शंकुर के बीच अफेयर चल रहा था। अक्सर वह उसी से मिलने आया करती थी। कुछ महीनों बाद बड़े पापा स्नेहा दीदी की शादी करवाने का सोचे और शादी तय हो गई। उस वक्त स्नेहा दीदी अधिकतर पुर्णीया आया करती थी क्योंकि शंकुर उन्हें ब्लैकमेल करता था, कि उसके साथ लिए गए तस्वीरें और वीडियो उनके घर वालों को दिखा देगा। इस डर से वह उससे मिलती रही। उसी बीच एक-दो बार स्नेहा दीदी के साथ रिया भी शंकुर से मिली। शंकुर

की नजर रिया पर पड़ी और उसने स्नेहा दीदी से रिया का नंबर लिया और हमेशा रिया को कॉल करके स्नेहा दीदी के बारे में पूछता रहा।

वक्त बीतता गया और स्नेहा दीदी की शादी का समय नजदीक आ गया। शंकुर रिया के करीब आना चाहता था। वह जबरदस्ती रिया को कॉल करके मिलने के लिए बुलाता, मना करती तो धमकी देता कि वह स्नेहा दीदी का राज घरवालों के सामने खोल देगा। एक दिन शंकुर रिया को कॉल करके गाली-गलौज कर रहा था। उस वक्त रिया बगल वाले कमरे में रहने वाली एक दीदी के साथ बैठी थी। उस दीदी ने रिया को परेशान देखकर पूछा कि क्या हुआ। रिया ने उन्हें सब बता दिया। वह दीदी रिया से बोली कि बात करना बंद कर दो। रिया ने शंकुर का कॉल उठाना और उससे बात करना बंद कर दिया।

एक शाम, जब रिया उस दीदी के साथ बाजार सब्जी लेने गई थी, तो शंकुर वहाँ आ गया और रिया को बुरा-भला कहने लगा। उसने एक थप्पड़ भी मारा। उस दीदी ने उसे रोकने की कोशिश की तो शंकुर ने उनसे भी बदतमीजी की। फिर रिया ने यह सब हमसे कहा। रिया को लेकर हम सहायक थाने गए और शंकुर के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई। उसके खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया गया, लेकिन शंकुर उन दोनों को परेशान करने लगा और स्नेहा दीदी के बारे में भी हमारे घर में बता दिया। इसके बाद पापा रिया को पुर्णीया से लेकर चले गए। कुछ दिन बाद पता चला कि शंकुर यादव की हत्या हो गई है।"

"रिया ने आत्महत्या क्यों की?"

"मेरी बड़ी माँ उसे हमेशा ताने मारती थीं, स्नेहा दीदी की शादी टूट गई थी, इसलिए। गांव की औरतें और रिश्तेदार भी उसे ताने मारते रहते थे। एक सुबह, जब रिया दरवाजा नहीं खोल रही थी, तो पापा खिड़की के पास गए। खिड़की को धक्का मारने के बाद वह खुल गई। रिया को पंखे से लटका देख पापा, उस दिन से हीं डिस्टर्ब हो गए। हम दरवाजा तोड़कर अंदर गए तो लाश के नीचे एक सुसाइड नोट मिला, जिसमें यही लिखा था कि वह सबके ताने से परेशान होकर आत्महत्या कर रही है।"

"वो लड़की, जो रिया के बगल वाले कमरे में रहती थी, उसका नाम क्या था? वह कहाँ है?" मैंने पूछा।

"उनका नाम ईशा था। सुनने में आया था कि वह डीआईजी चौक पर पुस्तकालय में लगी आग में जलकर मर गई।"

"आग कब लगी थी?"

"दिसंबर महीना होगा और साल तो 1999 ही था।"

“धन्यवाद, अमरजीत। इससे हमारी काफी मदद होगी।”
अमरजीत मेरे केबिन से बाहर चला गया और मैं सोचने लगा कि क्या इस दिशा में केस की जांच करनी चाहिए या नहीं। किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पाया, तो मैंने एसपी साहब को कॉल लगाया और उन्हें सारी बातें बताईं। उन्होंने कहा कि वैसे भी हमारे पास कुछ नहीं है, तो एक बार जांच करके देख लो।

शंकर मेरे केबिन में आया तो मैं उसे साथ लेकर ऑफिस के हॉल में चला गया, जहाँ बाकी अफसर बैठे थे।

“आप लोगों को अब पूरी तरह से काम पर लगना है। डीआईजी चौक पर जो पुस्तकालय में आग लगी थी, उसकी पूरी जानकारी चाहिए मुझे, आज शाम होने से पहले। गॉट इट?” मैंने सभी एसटीएफ अफसर से कहा।

“जी जनाब।” सभी अफसर ने जोश के साथ कहा।
सभी अफसर काम पर लग गए। मैं शंकर को लेकर नीचे चाय की टपरी पर चला गया।

“शंकर, अगर ईशा जलकर नहीं मरी हो और उसकी हत्या हुई हो, तो समझो सारी हत्याओं का कनेक्शन यहीं से है।”

“आपको पूरा विश्वास है, जनाब?”

“नहीं पता, शंकर, लेकिन मुझे ऐसा ही लग रहा है। तुम कह रहे थे ना कि सुराग नहीं मिला। अगर ऐसा हुआ तो सुराग चलकर आएगा, शंकर।”

हम चाय पीकर वापस ऑफिस आ गए।
शाम होने में कुछ ही घंटे बचे थे जब शंकर मेरे केबिन में आकर मुझे बाहर आने को कहता है। मैं केबिन से निकलकर हॉल में आता हूँ, जहाँ सभी अफसर बैठे होते हैं।

"जनाब, उस पुस्तकालय में आग 13 दिसंबर 1999 को लगी थी, और ताज्जुब की बात ये है कि उसमें सिर्फ एक ही लड़की जलकर मरी थी। उसका नाम था ईशा मेहरा," एक अफसर ने बताया।

"बस एक लड़की?" मैंने पूछा।

"जी जनाब," उसने पुष्टि की।

"और जनाब, चौकाने वाली बात ये है कि आग रात को लगी थी।"
मैं वहीं एक बेंच से टिककर खड़ा हो गया, और मुझे मेरा शक सच होते हुए दिखने लगा।

"शंकुर की हत्या 20 सितंबर 1999 को हुई थी," शंकर ने याद दिलाया।

"लेकिन चंकी और आशीष ने सरेंडर 26 दिसंबर 1999 को किया था," मैंने कहा।

"जी जनाब, चाकू के साथ," शंकर ने जवाब दिया।

"इसका मतलब, शंकर, ईशा मेहरा की मौत में कोई राज़ छिपा है। वो जलकर नहीं मरी, उसकी हत्या हुई है, और चंकी और आशीष को प्लानिंग के साथ सरेंडर करवाया गया है। कोई तीसरा व्यक्ति है जो यह सब कर रहा है। ऐसा भी तो हो सकता है|"

"जी जनाब, हो सकता है |"

"पुस्तकालय का नाम और उसके मालिक का पता चला?" मैंने अफसरों से पूछा।

"जी जनाब, पुस्तकालय का नाम था 'भावना पुस्तकालय' और मालिक का नाम सुनील सिंह है," एक अफसर ने जानकारी दी।

"जनाब, ये तो चंद्रकांत का काफी नजदीकी आदमी है," शंकर ने बताया।

"मुझे ईशा मेहरा के बारे में हर एक जानकारी चाहिए—उसके परिवार में कौन-कौन है, वे क्या करते हैं, और उस समय उसके परिवार के अलावा कोई और करीबी था या नहीं। मुझे ये सारी जानकारी कल शाम तक चाहिए। गॉट इट?" मैंने अपने टीम से कहा।

"जी जनाब," सभी अफसरों ने जवाब दिया।

मैं शंकर और अभिजीत को लेकर एसपी साहब के ऑफिस पहुंचा और उन्हें सारी जानकारी दी।

"गुड समर, ये एंगल भी हो सकता है, हमने सोचा ही नहीं," एसपी साहब ने कहा।

"जनाब, भावना पुस्तकालय की फाइल भी हमने मंगवा ली है, खजांची थाने से। उस वक्त के SHO राकेश मौर्य थे, उनसे आप बात कर लीजिए," मैंने कहा।

"हाँ समर, करता हूँ," उन्होंने कहा।

"ठीक है जनाब, मैं निकलता हूँ," मैंने कहा।

"ठीक है समर, निकलो," उन्होंने अनुमति दी।

"जय हिंद," मैंने सलामी दी।

"जय हिंद," उन्होंने भी जवाब दिया।

मैं अभिजीत और शंकर के साथ अपने क्वार्टर चला गया। वो दोनों मुझे छोड़कर चले गए। बाबा ने खाना बनाकर रख दिया था। मैं खाकर सो गया।

****

27 नवंबर 2003

सुबह बाबा ने डोरबेल बजाई, तो मैं जाग गया। दरवाजा खोलते ही बाबा थैला के साथ अंदर आए और नाश्ता बनाने में लग गए। मैं फ्रेश होने चला गया। वापस आकर, मैंने

अपनी वर्दी पहनी और डाइनिंग टेबल पर बैठ गया। बाबा ने नाश्ता लाकर दिया, मैंने नाश्ता किया, और मेरे दूतों के आते ही मैं एसटीएफ ऑफिस चला गया।

ऑफिस जाकर पता चला कि एक टीम अररिया गई हुई है क्योंकि ईशा मेहरा का घर वहीं अररिया जिले में है। मैं बैठकर इस मामले में तालमेल बिठाने लगा, जिसमे काफी समय लग गया। एसपी साहब ने भी मौर्य जी से बात करके मुझे कॉल किया और बताया कि मौर्य जी को चंद्रकांत यादव ने ही केस पर ध्यान देने से मना किया था। मैंने एसपी साहब से कहा कि मुझे चंद्रकांत से पूछताछ करनी है, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने सलाह दी कि अनौपचारिक तरीके से जांच करो, लेकिन चंद्रकांत से सीधे पूछताछ मत करो, इससे समस्या पैदा हो सकती है।

दोपहर के वक्त मेरी टीम के एक अफसर ने मुझे कॉल किया।

"जय हिंद, जनाब," उसने कहा।

"जय हिंद, बताओ क्या पता चला है?" मैंने पूछा।

"जनाब, ईशा के परिवार में उसकी मां, पिता, दो छोटे भाई, और एक बूढ़ी दादी हैं। ईशा की माँ का कहना है कि वो पुस्तकालय कभी नहीं जाती थी। उस दिन वो शाम को कुछ किताब लेने कॉलेज के बगल वाली दुकान में गई थी। जाने से पहले उसकी माँ से बात भी हुई थी," उसने बताया।

"अच्छा, ईशा के भाइयों की उम्र कितनी है?" मैंने पूछा।

"एक की उम्र 11 वर्ष और दूसरे की 14 वर्ष होगी," उसने जवाब दिया।

"पिताजी क्या करते हैं?" मैंने पूछा।

"वो एक आम किसान हैं, जनाब, बहुत भोले-भाले हैं," उसने बताया।

"उसका कोई बॉयफ्रेंड था?" मैंने पूछा।

"जनाब, इन्हें तो बॉयफ्रेंड के बारे में नहीं पता, लेकिन ईशा की माँ बता रही थीं कि जब वह पुर्णीया से घर आती थी, तो किसी से बात करती रहती थी," उसने बताया।

"ईशा के दोस्तों का पता करो और उनसे पूछताछ करो," मैंने आदेश दिया।

"जी जनाब," उसने कहा।

मौर्य जी की रिपोर्ट के अनुसार, जब पुस्तकालय में आग लगी थी तो रात का वक्त था, करीब 2:00 बजे। आग को फायर एक्सटिंग्यूजर से बुझाया गया, लेकिन जब सुबह पुलिस आई तो उन्हें पुस्तकालय में एक जली हुई लाश मिली। उसी सुबह मौर्य जी को अररिया जिले के सिरसिया थाने से कॉल आया कि पुर्णीया में पढ़ रही एक लड़की रात से लापता है, उसका नाम ईशा है।

पुलिस ने ईशा के जले शरीर की शिनाख्त पुस्तकालय के बाहर गिरी सिल्वर चैन में लगे हरे पेंडेंट वाली ब्रेसलेट से की थी, जिस पर ईशा का नाम लिखा हुआ था और पुस्तकालय के पास ही दो किताबें गिरी हुई थीं। उसकी माँ ने पुलिस को बताया था कि वह किताबें लेने गई थी। पुलिस ने जब किताब दुकान में ईशा की तस्वीर दिखाते हुए पूछा, तो दुकानदार ने बताया कि ईशा ही ये किताबें ले गई थी, वह अक्सर उस दुकान से उपन्यास खरीदा करती थी। मामला साफ था कि किसी ने जबरदस्ती ईशा को पुस्तकालय में बंद करके आग लगा दी थी। जब ईशा को जबरदस्ती पुस्तकालय की ओर ले जाया जा रहा था, उस दौरान ब्रेसलेट और किताबें गिर गई होंगी। पुस्तकालय जिस रास्ते पर स्थित था, वह सुनसान था और वहाँ कोई नियमित रूप से नहीं आता-जाता था। वहाँ केवल एक पुस्तकालय था और उसके आसपास कुछ भी नहीं था। ना जाने पुलिस इन नेताओं के दबाव में आकर ऐसा क्यों करती है।

मैं समझ नहीं पा रहा था कि इस शहर में पिछले कई वर्षों से हो क्या रहा है। एक अपराधी का नेता से संबंध है, और नेता से अलग होने के बाद एक आईपीएस को मार देता है। एक किलर है, जो लगातार हत्याएं कर रहा है, और सबके तार चंद्रकांत से जुड़े हैं। मैं तो गुस्से में यह सोच रहा था कि चंद्रकांत का ही एनकाउंटर कर दूं। लेकिन मुझे 100 प्रतिशत यकीन था कि ईशा की हत्या हुई है और 90 प्रतिशत शक था कि ईशा की हत्या की वजह से ही ये सारी हत्याएं हो रही हैं। शक को यकीन में बदलने के लिए मुझे बस एक इशारा चाहिए था, और इसके लिए मैं शंकर को लेकर पुर्णीया सेंट्रल जेल चला गया चंकी और आशीष से मिलने।

पुर्णीया सेंट्रल जेल पहुंचकर मैंने जेलर से बात की। जब मैं जेल में था, लगभग रोज़ ही उनके ऑफिस में चाय पिया करता था, तो उनसे अच्छी पहचान थी। जेलर ने चंकी और आशीष को बुलवाया। दोनों मेरे सामने आकर खड़े हो गए। मैंने उन्हें बैठने को कहा, और वे मेरे सामने रखी कुर्सियों पर बैठ गए। जेलर भी वहीं मौजूद थे।

"तब और सब बढ़िया ना?" मैंने उनसे पूछा।

उन्होंने सिर हिलाते हुए "हाँ " में जवाब दिया।

"तीसरा कहाँ है?" मैंने सीधा सवाल दागा।

"मतलब?" चंकी ने जवाब देने की कोशिश की, लेकिन मैं आशीष के चेहरे को देख रहा था, जो घबरा गया था।

"ओ, तुम्हें नहीं पता?" मैंने चंकी की ओर देखा।

"आप क्या बोल रहे हैं, कुछ समझ नहीं आया," चंकी ने कहा।

"अच्छा, बताओ जब शंकुर यादव की हत्या सितंबर में हुई थी, तो तुमने दिसंबर में क्यों सरेंडर किया? और सरेंडर ही क्यों किया? पुलिस के पास तो तुम्हारे खिलाफ कोई सबूत नहीं था।"

"इसका मतलब क्या है, सर? हमने जो गुनाह किया, उसे कुबूल लिया। अब नवंबर-दिसंबर का क्या लेना-देना?" चंकी थोड़ा झिझकते हुए बोला,

"बात तो सही है," मैंने कहा, "एक बात और पूछनी थी—ईशा मेहरा को पहचानते हो?"

इस बार चंकी और आशीष दोनों चौंक गए। वे तुरंत जवाब नहीं दे पाए और कुछ सेकंड रुककर कहा, "नहीं।"

मैंने उन्हें वापस भेज दिया। उनके हाव-भाव से मैं समझ गया कि तीसरा कोई और भी है। मैंने जेलर से विदा ली और एसटीएफ ऑफिस के लिए निकल गया।

गाड़ी में मैं, शंकर, और अभिजीत थे। अभिजीत गाड़ी चला रहा था, मैं उसके बगल में बैठा था, और शंकर पीछे। रास्ते में, मैं कुछ सोच रहा था, तभी मुझे पुराने आईजी साहब की एक बात याद आ गई, "अगर तुम चाहते हो कि सामने वाला तुमसे उलझे, तो उसे चुनौती दो।" उन्होंने एक बार मुझसे ये बात कही थी और आज यह मेरे ध्यान में आई। मैंने सोचा, क्यों न किलर को चुनौती दी जाए? क्योंकि स्मार्ट लोगों की एक बुरी आदत होती है कि वे झुकते नहीं, बल्कि चुनौतियों का सामना करते हैं।

जैसे ही मैं एसटीएफ ऑफिस पहुंचा, बाहर मीडिया वाले खड़े थे, जो शायद मेरा ही इंतजार कर रहे थे। पहले मैंने उन्हें नजरअंदाज करना चाहा, लेकिन फिर मैंने खुद मीडिया वालों के पास जाने का फैसला किया। आखिरकार, मीडिया से बेहतर जगह और कौन सी हो सकती है, एक अपराधी को चुनौती देने के लिए?

"सर, आप सुरेश यादव हत्या कांड पर काम कर रहे हैं, क्या प्रोग्रेस है अभी?" एक रिपोर्टर ने मुझसे पूछा।

"हम हत्यारे के काफी करीब पहुंच चुके हैं। हत्यारा होशियार तो है, लेकिन कायर है। सामने आने से डरता है। अगर उसमें हिम्मत होती, तो सामने आकर पुलिस को चकमा देकर निकल जाता, ऐसे छुपकर नहीं रहता।"

मीडिया ने मुझसे और भी सवाल पूछे, जिनका जवाब देकर, मैं अपने केबिन में आ गया।

****

मैंने किलर को चुनौती दे दी थी, लेकिन मेरा दिल मानने को तैयार नहीं था कि यह मामला इतनी आसानी से सुलझ जाएगा। मुझे डर था कि कहीं यह मामला उलझता ही

न चला जाए। इसलिए मैंने एक सुव्यवस्थित योजना बनाई और विभिन्न टीमों को तैनात कर दिया। एक टीम को ईशा के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए, दूसरी टीम को चंकी और आशीष को बाहर से किसे मदद मिल रही है, यह पता लगाने के लिए, और तीसरी टीम को इस बात की तहकीकात करने के लिए कि ईशा पुस्तकालय तक कैसे पहुंची।

मैंने शंकर और अभिजीत को अपने साथ रखा और सभी जांचों की निगरानी शुरू की। मेरा ध्यान लगातार उन कड़ीों को जोड़ने पर था जो इस जटिल पहेली को सुलझाने में मदद कर सकती थीं। हमें हर एक सुराग और हर छोटी-सी जानकारी को ध्यान से देखना था।

जैसे ही छानबीन शुरू हुई, चंद्रकांत ने इसमें अड़चन डालने की पूरी कोशिश की। उसने आईजी पर दबाव डालने की भी हरसंभव कोशिश की, ताकि हमारी जांच को पटरी से उतारा जा सके। लेकिन एसपी साहब ने मामले को गंभीरता से लिया और मौजूदा विधायक और सांसद के साथ मिलकर चंद्रकांत की धौंस-धमकी को नकारा। उनकी प्रभावशाली हस्तक्षेप ने चंद्रकांत की हेकड़ी को कुचल दिया और हमारी जांच को निरंतरता प्रदान की।

9.लेट द थ्रिल बिगिंस

4 दिसंबर 2003

सुबह के करीब 4:00 बजे होंगे। मैं अपने कमरे में गहरी नींद में सो रहा था। अचानक मुझे कुछ कंपन महसूस हुआ, जिससे मेरी नींद खुल गई। बिस्तर पर ही उठकर बैठा और इधर-उधर देखने लगा। तभी मेरी नजर मेरे सेलफोन की रोशनी पर पड़ी। मैंने हाथ बढ़ाकर सेलफोन उठाया तो देखा, एक अनजान नंबर से कॉल आ रहा था। मैंने कॉल रिसीव किया।

"गुड मॉर्निंग समर प्रताप यादव, कैसे हैं?" सामने से एक व्यक्ति की आवाज आई।

"कौन बोल रहा है?" मैंने पूछा।

"वही जिसकी आपको तलाश है।"

"हेलो… हेलो… एक मिनट, तुमने सुरेश यादव की हत्या की है?" मुझे यकीन नहीं था कि वह कभी खुद कॉल करेगा।

"आप कह रहे हैं तो हो सकता है, मैंने ही की हो।"

"अच्छा," मैंने कहा और कमरे से बाहर आकर शंकर को अपने टेलीफोन से कॉल लगाने लगा।

"शंकर सोया होगा अभी, कॉल करके क्यों परेशान कर रहे हैं, समर साहब," उसने मुझसे कहा। यह सुनते ही मैं चौंक गया कि उसे यह भी मालूम है।

"ओह, तो तुमने मेरी अगली चाल का भी पता लगा लिया है।"

"समर साहब, हम दोनों एक ही खेल में तो हैं।"

"लेकिन लीड मैं कर रहा हूं।" मैंने अकड़ते हुए कहा|

"वो तो वक्त बताएगा, समर साहब।"

"देखो, मैं ईशा मेहरा के बारे में जानता हूं। उसके साथ क्या हुआ, मुझे पता है।"

"मैं नहीं जानता, आप किस ईशा मेहरा की बात कर रहे हैं।"

"देखो, तुम जो भी हो, सरेंडर कर दो।"

"आप पकड़ लो, सर। लेट द थ्रिल बिगिन्स।"

"मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मैं तुम्हें गिरफ्तार करूंगा।"

"कर लो साहब| आपको क्या लगता है, मैं डरता हूँ पुलिस से, समर साहब, पुलिस अगर अपना काम कर लेती तो फिलहाल आप एक अनजान आवाज को ढूँढने के लिए बेताब नहीं होते और आज के बाद तो आप ये भी नहीं बोल पाएंगे की किलर कायर है|"

"ढूंढ तो लूँगा मैं तुम्हें फिक्र मत करो लेकिन तुम्हें क्या मिला चार हत्याएं करके?"

"पुलिस अभी तक चार पर ही अटकी है। वाह, समर साहब, वेरी गुड। जल्द मिलता हूँ एक और खबर के साथ," उसने कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया।

मैंने दोबारा उस नंबर पर कॉल लगाने की कोशिश की, लेकिन नंबर स्विच ऑफ आ रहा था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उसने मुझे कॉल क्यों किया। एक सप्ताह बीत चुका था और हमारे हाथ में कोई जरूरी जानकारी नहीं लगी थी। अब बस एक नंबर और एक आवाज थी, जो सिर्फ मेरे कानों को पता थी।

मैं हॉल में बैठकर सोचने लगा, आखिर वह मुझे क्या कहना चाह रहा था। अचानक मुझे ध्यान आया कि जब मैंने ईशा के बारे में पूछा तो उसकी आवाज थोड़ी सामान्य हो गई थी। इतना तो साफ हो गया कि सारी हत्याएं ईशा मेहरा वाले मामले से जुड़ी हैं। लेकिन मुझे कॉल करने का मकसद क्या था? और उसने कहा था कि पुलिस अभी चार हत्याओं पर ही अटकी हुई है। इसका क्या मतलब था? क्या वह और हत्याएं करने वाला है या वह पहले ही और हत्याएं कर चुका था? उसने ये भी कहा की मिलता हूँ एक और खबर के साथ, इसका मतलब क्या वो एक और हत्या करने वाला है|

मैंने शंकर को कॉल लगाया, लेकिन शंकर ने उत्तर नहीं दिया। शायद वह सोया हुआ था। मैं सुबह होने का इंतजार करने लगा, क्योंकि मुझे इस नंबर का भी पता लगाना था। इन्हीं सब बातों को सोचते-सोचते मेरी आंख लग गई।

अचानक मेरे सेलफोन की घंटी बजी, और मैं हड़बड़ाकर जाग गया। मैंने फोन उठाया और कॉल रिसीव किया।

"हेलो, कौन?" मैंने आंख मलते-मलते कॉल रिसीव किया, तो नंबर नहीं देख पाया।

"जनाब, मैं शंकर।"

"शंकर, जल्दी से फ्रेश होकर मेरे पास आओ।"

"जी जनाब, आता हूं।"

"नाश्ता यहीं करना। बस जल्दी आओ।"

"ठीक है, जनाब, आता हूं।"

मैंने सेलफोन टेबल पर रखकर तौलिया उठाया और वाशरूम चला गया। लगभग आधे घंटे बाद जब मैं वाशरूम से बाहर निकला, तो दरवाजे की घंटी बजी। दरवाजा खोला तो देखा कि शंकर आ चुका था। मैंने उसे अंदर आने को कहा और फिर खुद भी कपड़े बदलकर उसके पास बैठ गया।

"देखो, ये नंबर," मैंने अपने सेलफोन में नंबर दिखाते हुए शंकर से कहा, "यही है असली किलर।"

"जनाब, आपको कॉल किया था वो?"

"हाँ , बिहार में जब से आया हूं, हर अपराधी कॉल करता है। मैं समझ नहीं पाता कि यह क्या रिवाज है।"

"जनाब, बिहार का ये रिवाज है। जिस बड़े अपराधी को ढूंढना शुरू करेंगे, वो कॉल करके धमकी देगा।"

"लेकिन शंकर, इसने धमकी नहीं दी। उल्टा, कॉल करके मेरा आत्मविश्वास बढ़ा दिया।" मैंने एक पल रुककर कहा, "देखो, ये एयरसेल का ही नंबर है ना?" मैंने शंकर को नंबर दिखाते हुए पूछा।

"जी जनाब।"

मैंने तुरंत एयरसेल कस्टमर केयर में कॉल लगाया और अपना नाम बताते हुए किलर का नंबर और घटना की जानकारी दी। उनसे जल्दी से उस नंबर की जानकारी देने का अनुरोध किया।

"सर, मैं भी उसी शहर से हूं," एयरसेल अधिकारी ने कहा।

"ओह, क्या नाम बताया आपने?" मैंने पूछा।

"सर, प्रभाकर।"

"प्रभाकर जी, कितना वक्त लगेगा इसमें?"

"सर, आधे घंटे का समय दें।"

"ठीक है, प्रभाकर जी, आप मेरे नंबर पर वापस कॉल कर सकते हैं।"

"सर, मैं अपने नंबर से आपको अभी मिसकॉल दे देता हूं। जब भी आपको कोई जानकारी चाहिए, आप मुझे कॉल कर सकते हैं। मैं अपने शहर के लिए कुछ भी करूं, मेरे लिए खुशी की बात है।"

"बिलकुल, प्रभाकर जी। थोड़ा जल्दी कीजिएगा।"

"ठीक है, सर," कहते हुए मैंने कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया।

बैठकर सोचने लगा कि वह कॉल पर क्या कहना चाह रहा था। मेरे दिमाग में दो ही बातें घूम रही थीं: पहली, पुलिस अब तक चार हत्याओं पर ही अटकी है, और दूसरी, ईशा का नाम लेते ही उसकी आवाज का सामान्य हो जाना।

"शंकर, ऐसा करो। इन चारों हत्याओं की प्रोफाइलिंग करवाओ और आस-पास के सभी जिलों के थानों में भिजवाओ। पता करो कि कहीं ऐसी कोई घटना घटित हुई है क्या।"

"जी, जनाब, कर दूंगा।"

मैंने एसपी साहब को कॉल किया और उनसे कहा, "मैं आपके आवास पर आ रहा हूं।" फिर अपने कमरे में जाकर सिविल ड्रेस पहनी, दरवाजा लॉक किया, और वॉचमैन को चाबी देते हुए एसपी साहब के आवास की ओर रवाना हो गया।

"आओ समर, यहाँ तो तुम कभी आए नहीं हो, और आज आए हो तो इतनी सुबह," एसपी साहब ने मुझे देखकर कहा।

"जनाब, बात ही कुछ ऐसी थी," मैंने संजीदगी से जवाब दिया।

"क्या बात है, बताओ समर।"

तभी मेरा सेलफोन बजा। "एक मिनट, जनाब," मैंने कहा और अपनी जेब से सेलफोन निकाला। देखा, प्रभाकर का कॉल आ रहा था। मैंने कॉल रिसीव की।

"हेलो, समर सर," प्रभाकर की आवाज आई।

"हाँ , प्रभाकर जी," मैंने उत्सुकता से जवाब दिया।

"सर, ये बंगाल का सिम है, तपन महतो के नाम पर रजिस्टर्ड है। सिल्लीगुड़ी में सेन पार्क के पास के एक टावर से इस नंबर पर सिग्नल आ रहा है।"

"क्या इस नंबर के मूवमेंट को ट्रैक कर सकते हैं, प्रभाकर जी?"

"जी सर, कर सकते हैं।"

"आप इस नंबर के पिछले एक सप्ताह के मूवमेंट की जानकारी मुझे दे सकते हैं?"

"सर, ये नंबर तो कल शाम ही ऑन हुआ है।"

"तो कल शाम से अभी तक का मूवमेंट भेज सकते हैं?"

"जी सर, मैं आपको फैक्स कर दूंगा।"

"नहीं, मेरे सेलफोन पर ही भेजिएगा।"

"ठीक है, सर।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद, प्रभाकर जी।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं, सर। आपको जब भी कोई जानकारी चाहिए हो, मेरे नंबर पर कॉल कर लीजिएगा।"

"ठीक है, प्रभाकर जी," मैंने कॉल डिस्कनेक्ट किया और फोन टेबल पर रख दिया। एसपी साहब ने पूछा, "क्या बात है, समर? किस नंबर की जानकारी प्राप्त कर रहे थे?"

"जनाब, रात में मुझे एक अनजान व्यक्ति का कॉल आया था। उसकी बातों से लगा, पक्का वही किलर है, जो ईशा का ब्वॉयफ्रेंड हो सकता है। हमें ईशा मेहरा के केस की फिर से छानबीन करनी चाहिए। कोई रिपोर्ट में यह नहीं लिखा है कि ईशा मेहरा इतनी रात को उस पुस्तकालय में क्या कर रही थी।"

"ठीक है, समर, करो। मुझे तुम्हारी काबिलियत पर शक नहीं है, लेकिन मीडिया में कुछ नहीं आना चाहिए। जैसा कि तुमने कहा था, इन सब में चंद्रकांत यादव का भी हाथ हो सकता है। अगर उसे इस छानबीन के बारे में पता चला, तो वह समस्या खड़ी कर सकता है। इसलिए सब गुप्त तरीके से करो।"

"जी, जनाब, बिलकुल गुप्त तरीके से ही सब हो रहा है।"

"और बताओ, समर, कोई और सहायता कर सकता हूँ?"

"जनाब, किसी तरह से सिल्लीगुड़ी पुलिस में बात करके एक व्यक्ति का पता लगवाईए ना।"

"किस व्यक्ति का?"

"मैं आपको डिटेल भेजता हूँ।"

"ठीक है। लेकिन, समर, मेरे मन में एक ख्याल है।"

"क्या सर?"

"अगर ये सारी हत्याएं ईशा मेहरा मामले से जुड़ी हुई नहीं हुई तो?"

"जनाब, ईशा मेहरा केस में कुछ नया मोड़ आएगा। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि ईशा मेहरा की हत्या हुई है।"

"ईशा मेहरा की फाइल कल मैंने भी पढ़ी है, समर। यह बात तो सही है कि उसकी हत्या हुई है, लेकिन मुझे यह खटक रहा है कि एक अनजान व्यक्ति यह सब क्यों करेगा जिसे कोई जानता ही नहीं।"

"जनाब, हो सकता है कि जानते हुए भी छुपाया जा रहा हो। और जनाब, वह व्यक्ति अगर इस पृथ्वी पर है, तो कोई न कोई उसे और उसके मकसद को जानता होगा। क्योंकि अगर वह यह सब कर रहा है, तो वह अकेला तो नहीं कर सकता।"

"यह बात भी सही है," एसपी साहब ने कहा और फिर एक विराम लेकर बोले, "ठीक है, समर, बढ़ाओ आगे अपनी छानबीन।"

"जी, जनाब। मैं चलता हूँ, और उस व्यक्ति का डिटेल आपको मैसेज करता हूँ।"

"नाश्ता तो कर लो, समर। शंकर भी आया हुआ है। तुमने तो मेरा बॉडीगार्ड ही छीन लिया।"

"अरे, जनाब।"

"क्यों, शंकर, ठीक हो ना?"

"जी, जनाब।"

"नाश्ता कर लो, दोनों।"

"फिर कभी, जनाब, अभी बहुत काम है।"

"फिर ठीक है, समर। भेजो, मैं पता करता हूँ।"

"जय हिंद, जनाब।"

"जय हिंद।"

मैं और शंकर एसपी साहब के आवास से अपने क्वार्टर लौट आए, और आकर हमने नाश्ता किया। बाबा, वॉचमैन से चाबी लेकर आए थे, उन्होंने हमारे लिए नाश्ता तैयार रखा था। उसी समय प्रभाकर ने भी नंबर की जानकारी भेज दी। मैंने तुरंत वह जानकारी एसपी साहब को मैसेज कर दी।

"शंकर, हमारी टीम ऑफिस पहुंच गई होगी?" मैंने शंकर से पूछा।

"जी जनाब, पहुंच गई होगी।"

"कॉल करके बोलो कि प्रोफाइलिंग करके सभी जिलों के थानों में भेज दें।"

"जी जनाब, बोलता हूं।" शंकर ने ऑफिस कॉल करके टीम को प्रोफाइलिंग रिपोर्ट भेजने का आदेश दिया।

कुछ देर बाद, हम दोनों एसटीएफ ऑफिस के लिए रवाना हो गए। आज ऑफिस में कम लोग थे क्योंकि हमारी एक टीम अररिया में तैनात थी। मैं उस किलर के बारे में सोच रहा था, और मेरे दिमाग में उसके सिवाय कुछ और नहीं आ रहा था। मुझे किसी भी हाल में उसे पकड़ना था। तभी मेरा सेलफोन बजा, और मैंने कॉल रिसीव की।

"जय हिंद, जनाब," मेरे अफसर ने कॉल पर कहा।

"जय हिंद, बोलो, क्या खबर है?"

"जनाब, ईशा के एक फ्रेंड के बारे में पता चला है। वो कह रही है कि ईशा का ब्वॉयफ्रेंड तो था...."

"क्या नाम है? कहाँ का रहने वाला है?"

"जनाब, ये सब उसे नहीं पता।"

"उसके पास उसकी कोई तस्वीर है?"

"नहीं जनाब, लेकिन वह कह रही है कि तस्वीर निकाल सकती है।"

"जल्दी बोलो, निकालकर भेज दे। वह कहाँ रहती है?"

"जनाब, वह दिल्ली में रहती है। उसके पिताजी से उसका नंबर लेकर बात की है।"

"उससे कहो, जल्दी से तस्वीर भेज दे।"

"जी जनाब।"

"और हाँ , और दोस्तों के बारे में भी पता करो, उनसे भी बात करो।"

"जी जनाब, कर रहे हैं।"

"किसी ने पुस्तकालय वाली घटना के बारे में कोई चर्चा की?"

"नहीं जनाब, अभी तक तो नहीं।"

"ठीक है, कोशिश करो, जल्द से जल्द कुछ मिले।"

"जी जनाब, जय हिंद।"

"जय हिंद।" मैंने कॉल डिस्कनेक्ट की और फोन टेबल पर रख दिया। तभी मेरे दिमाग में एक ख्याल आया और मैं ऑफिस के हॉल में चला गया।

"शंकर, इधर आओ," मैंने शंकर को बुलाया।

"हाँ जनाब," शंकर मेरे पास आकर बोला।

"शंकर, एक चीज़ तो तुम्हारे खबरी लोग भी पता कर लेंगे।"

"क्या जनाब?"

"चंकी-आशीष की बाहर से मदद कौन कर रहा है? तुम्हारे खबरियों का संपर्क अपराधियों से भी होगा, इसलिए आराम से पता चल जाएगा।"

"ठीक है जनाब, मैं सबको बोलता हूँ, पता करने के लिए।"

शंकर अपने खबरियों को तैनात करता है। हमारी टीम भी इस जांच-पड़ताल में जुटी हुई थी।

****

शाम होने को थी, मैं अपने ऑफिस में बैठा सोच रहा था कि किलर का तो बस नंबर और आवाज है, उसे उसके सहारे कैसे पकड़ा जाए। तभी मेरे दिमाग में एक आइडिया आया, और मैंने तुरंत प्रभाकर को कॉल किया।

"हेलो सर, कहिए," प्रभाकर ने कहा।

"प्रभाकर जी, क्या कोई उपाय है जिससे अगर ये नंबर बदल ले, तो भी इसपे नजर रखा जा सके?"

"सर, अगर उसी सेलफोन में दूसरा नंबर लगाया जाए, तो IEMI नंबर रन करके पता लगाया जा सकता है।"

"तो प्रभाकर जी, आप मेरी एक मदद कर सकते हैं? आप दिन में 2-3 बार इसके IEMI नंबर को रन करके देख सकते हैं कि ये नंबर तो नहीं बदला।"

"ठीक है सर, मैं नजर रखूंगा। लेकिन अभी जो इस सेलफोन में नंबर लगा हुआ है, वो अधिकतर स्विच ऑफ ही रहता है।"

"कोई बात नहीं प्रभाकर जी, फिर भी आप देखते रहिएगा।"

"ठीक है सर, मैं नजर रखूंगा।"

मैंने बचे हुए काम निपटाए और अपने क्वार्टर चला गया। वहाँ जाकर खाना खाया और सो गया।

अगले दिन मुझे पता चला कि जिस व्यक्ति के नाम पर किलर ने सिम निकाला था, वह 80 वर्ष के बुजुर्ग थे, जो एक महीने पहले गुजर गए थे। इसके बाद हमें पांच दिन तक कुछ खास सुराग नहीं मिले जिससे केस को आगे बढ़ाया जा सके, लेकिन जांच-पड़ताल लगातार जारी रही।

****

9 दिसंबर 2003

तेज बुखार की वजह से एसपी साहब ने मुझे सलाह दी, "तुम अपने क्वार्टर से काम करो, ऑफिस आने की जरूरत नहीं है।" इसलिए मैं अपने क्वार्टर से ही टीम के साथ बातचीत कर रहा था।

करीब दोपहर के 2:00 बजे, शंकर का कॉल आया। मैंने कॉल रिसीव किया।

"हेलो जनाब, पता चल गया है," शंकर ने कहा।

"किस चीज का, शंकर?"

"जनाब, चंकी और आशीष को जो आदमी बाहर से मदद कर रहा है, उसका नाम सूरजभान मेहता है। वो भागलपुर में एक होटल चलाता है, 'भान पैलेस'।"

"खबर पक्की है, शंकर?"

"जी जनाब, हाई कोर्ट में बेल के लिए अपील भी वही करवा रहा है। मेरा खबरी, आशीष के पिताजी से बात करके ये जानकारी लाया है।"

"शाबाश शंकर, तुमने बहुत अच्छी खबर दी है।" मैंने कॉल डिस्कनेक्ट किया और तुरंत एसपी साहब को कॉल करने लगा, लेकिन उनका नंबर व्यस्त था। मैंने उनके कॉल का इंतजार करना शुरू किया। अगले ही मिनट उनका कॉल आ गया। मैंने कॉल रिसीव किया।

"जनाब, एक बहुत जरूरी सूचना हाथ लगी है," मैंने कहा।

"समर, मैं भी तुम्हें एक सूचना देने के लिए ही कॉल कर रहा था।"

"जी जनाब, क्या सूचना है?"

"मौर्य जी का वापस कॉल आया था। उन्होंने बताया कि पुस्तकालय वाले केस में उनके साथ एक जूनियर इंस्पेक्टर था, जो चंद्रकांत का खास आदमी था। उस घटना के तीन महीने बाद उसका ट्रांसफर बेगूसराय हो गया, लेकिन उसके एक महीने बाद से वो गायब है।"

"मतलब अप्रैल 2000 से, जनाब।"

"हाँ समर।"

"जनाब, उस इंस्पेक्टर के घर वालों से बात हो सकती है।"

"मौर्य जी ने उनके घर वालों से बात की है। जब हमने केस के सिलसिले में कॉल किया, तो उन्हें उस इंस्पेक्टर का ख्याल आया। उन्होंने उसके भाई से संपर्क किया, तब ये बात सामने आई। वैसे, मौर्य जी बता रहे थे कि वे दोनों काफी समय तक खजांची थाना में ही थे।"

"जनाब, कहीं ऐसा तो नहीं कि उस इंस्पेक्टर की भी हत्या हो गई हो?"

"हो सकता है।"

"जनाब, आप बेगूसराय पुलिस से बात कर सकते हैं और उन्हें इस मामले की जांच करने को कह सकते हैं।"

"हाँ समर, तुम्हें बताने के बाद यही करने वाला था।"

"ठीक है, जनाब।" मैं समझ नहीं पा रहा था कि इस केस में कितनी और लाशें छिपी हुई हैं।

"अरे समर, तुम भी तो कुछ कह रहे थे," एसपी साहब ने कहा।

"हाँ जनाब, एक सूचना मिली है कि शंकुर के हत्यारे चंकी और आशीष को भागलपुर के सूरजभान मेहता का समर्थन है। जमानत के लिए भी वही अपील कर रहा है, ये बात आशीष पिता से शंकर के खबरियों ने पता की है।"

"वो तो बड़े इज्जतदार आदमी हैं, काफी बड़े बिजनेसमैन हैं।"

"आप जानते हैं उसे?"

"हाँ , जब भागलपुर में पोस्टेड था, तब से।"

"जनाब, मुझे ये खटक रहा है कि ये दोनों यहाँ पुर्णीया के और वो भागलपुर के, इन लोगों में क्या संबंध है? जनाब, एक बार पूछताछ करनी चाहिए सूरजभान मेहता से।"

"समर, सूरजभान से पूछताछ करोगे तो ये बात चर्चाओं में आ जाएगी, और मीडिया को तुम जानते ही हो।"

"तो क्या किया जाए, जनाब?"

"ये तुम हमारे ऊपर छोड़ दो। बैकडोर से पता लगाते हैं कि सूरजभान का इसमे हाथ है की नहीं।"

इसके बाद, मैंने शंकर को कॉल किया और उसे सारी फाइलें लेकर मेरे क्वार्टर पर आने को कहा। थोड़ी देर में शंकर फाइलें लेकर पहुंच गया। मैं फाइलें देख रहा था और शंकर मेरे बगल में बैठा था। तभी मेरा सेलफोन बजा, और एक अनजान नंबर से कॉल आ रही थी। मैंने कॉल रिसीव की।

"हेलो, समर प्रताप यादव स्पीकिंग।"

"जय हिन्द, जनाब! हम मांगीलाल चौबे, अररिया जिले के डुमरिया थाना से बोल रहे हैं।"

"हाँ , चौबे जी, बोलिए।"

"जनाब, आपके अफसर जो चार लाशों की फोटो भेजे थे ना, बिल्कुल वैसा ही लाश यहाँ भी पिछले साल मिला था।"

"नाम क्या था चौबे जी, मृतक का?"

"जनाब, मृतक का नाम.....था।" मुझे नाम ठीक से सुनाई नहीं दिया।

"साफ-साफ बोलिए ना चौबे जी।"

"माफ कीजिएगा जनाब, थोड़ा पान खा लिए थे, अभी फेंकता हूं।"

"जल्दी फेंकिए," मैंने डांटते हुए कहा।

"जनाब, मृतक का नाम श्यामलाल उरांव था।"

"चौबे जी, एक काम कीजिए, आप किसी तरह उस फाइल को पुर्णीया एसटीएफ ऑफिस पहुंचवाइए।"

"ठीक है जनाब, एक कांस्टेबल को मोटरसाइकिल से भेजता हूं, शाम तक पहुंच जाएगा।"

"ठीक है, चौबे जी।" मैंने कॉल डिस्कनेक्ट कर दी।

"शंकर, डुमरिया यहाँ से कितना दूर होगा?"

"अररिया जिला वाला, जनाब?"

"हाँ , और कोई डुमरिया है क्या?"

"अररिया वाला तो 80 किलोमीटर होगा। एक डुमरिया बगल में भी है।"

"ओह," एक विराम लेकर मैंने कहा, "शंकर, एक काम करो। मृतक शंकुर, दूसरे और तीसरे मृतक चंदन और सचिन, सुरेश यादव और ये डुमरिया वाला श्यामलाल उरांव—इन सबका क्या कनेक्शन है, पता करो।"

"ठीक है, जनाब, हम निकलते हैं।" शंकर मेरे क्वार्टर से चला गया, और मैं थोड़ा आराम करने का सोचने लगा क्योंकि मैं काफी बीमार था।

****

अररिया से टीम वापस आ गई थी, और चौबे जी ने फाइल भी भिजवा दी। हालांकि, कुछ खास जरूरी सूचना या जानकारी नहीं मिल पाई, सिवाय इसके कि जिनकी हत्या हुई है, वे सभी एक ही स्कूल में बारहवीं कक्षा में पढ़ते थे और कॉलेज में भी साथ ही थे। इससे यह स्पष्ट हो गया था कि इन सभी ने मिलकर ही ईशा मेहरा की हत्या की थी, और इसलिए बारी-बारी से उनकी हत्या हो रही थी।

मेरी तबीयत बहुत खराब हो गई थी, इसलिए मैं तीन दिन तक बेड रेस्ट में ही रहा।

****

12 दिसंबर 2003

मैं अब पूरी तरह ठीक हो चुका था और अपने ऑफिस में बैठा हुआ था।
सुबह करीब 10:00 बजे प्रभाकर का मुझे कॉल आया।

“हेलो, समर सर।”

“हाँ , प्रभाकर जी, कहिए। कैसे हैं?”

“सर, उस सेलफोन में नया सिम लगाया गया है, जोकि एयरसेल का हीं है, और वो पुर्णीया के पास ही एक्टिव है।”

“क्या बात कर रहे हैं?” मैंने चौंककर पूछा।

“जी सर।”

“किस जगह पर?”

“पुर्णीया और कटिहार के बीच, गेराबाड़ी मे|”

“सिम किस नाम पर रजिस्टर्ड है, प्रभाकर जी?”

“सूरजभान मेहता, भागलपुर के निवासी।”

“शुक्रिया, प्रभाकर जी।” मैंने हड़बड़ाहट में कॉल डिस्कनेक्ट किया और भागकर ऑफिस के हॉल में गया।

“शंकर, मिल गया! वो सूरजभान ही है,” मैंने उत्सुकता से कहा।

“जनाब, कैसे? सूरजभान तो भागलपुर से बाहर गया ही नहीं, एसपी साहब ने ये पता करके बताया था,” शंकर ने कहा।

“हाँ , शंकर, तुम सही कह रहे हो, लेकिन सिम सूरजभान के नाम से रजिस्टर्ड है।”

“मतलब जनाब?”

“अभी प्रभाकर का कॉल आया था। उसने बताया कि जिस नंबर से मुझे उस दिन कॉल किया गया था, उसी सेलफोन में दूसरा सिम लगाया गया है, और उसका लोकेशन पुर्णीया के पास गेराबाड़ी, बताया जा रहा है। वो नंबर सूरजभान के नाम पर है।” मैं शंकर से बात कर ही रहा था कि एक अफसर मेरे पास आया और उसने मुझे एक तस्वीर दी और कहा, “जनाब, ये ईशा के बॉयफ्रेंड की तस्वीर है, उसकी फ्रेंड ने भेजी है।”

तस्वीर देखते हीं मुझे लगा, मैंने एस चेहरे को कहीं तो देखा है, फिर याद आया— ‘गया रेलवे स्टेशन’ पर ये व्यक्ति मुझसे टकराया था, जब मैं और सिया पहली बार पुर्णीया आ रहे थे| उसी वक्त एसपी साहब का कॉल आया। उन्होंने कहा, “समर, एक व्यक्ति तुम्हारे ऑफिस सूरजभान का पारिवारिक फोटो लेकर गया है, उसमें उसके भाई की भी तस्वीर है, परिवार के और भी लोग हैं।” एसपी साहब की यह बात सुनकर मैंने उन्हें सारी बातें बताईं।

“समर, दोनों तस्वीरों को मिला लो, फिर कोई एक्शन लेना,” एसपी साहब ने कहा।

“ठीक है जनाब।”

जैसे ही वह पारिवारिक फोटो मेरे हाथ में आई, मैंने जब देखा तो, मेरी आंखें खुली की खुली रह गईं। सूरजभान का भाई ही ईशा का बॉयफ्रेंड था। मैंने एसपी साहब को कॉल किया और उन्हें बताया कि दोनों एक ही हैं। फिर हमने सूरजभान को हिरासत मे लेने का निर्णय लिया क्योंकि उसके भाई को ढूंढने में थोड़ा वक्त लग सकता था और उसके

खिलाफ कोई सुबूत भी तो नहीं थे, लेकिन सुराजभान के नाम से कोई अपराधी सिम चला रहा था, और वह भी उसका भाई, पूछताछ तो बनती है और शायद सूरजभान को हिरासत मे लेने से उसके भाई को भी चोट पहुँचेगी|

एसपी साहब ने भागलपुर पुलिस को कॉल करके सूरजभान मेहता को हिरासत मे लेने को कहा। भागलपुर पुलिस ने जाकर सूरजभान मेहता को हिरासत मे लिया। उसके बाद मैं और एसपी साहब सूरजभान को पुर्णीया लाकर पूछताछ करने की प्रक्रिया में लग गए। उसी दौरान मुझे एक अनजान नंबर से कॉल आया।

"हेलो, समर प्रताप यादव स्पीकिंग।"मैंने कहा|

"समर सर, भैया को छोड़ दो।"

"नाम तो बताइए आप सरकार," मैंने अकड़ते हुए कहा।

"समरभान मेहता, सूरजभान का छोटा भाई।"

"और कोई नाम नहीं मिला था रखने को," एक विराम लेकर मैंने कहा, "लेकिन ऊंट आया पहाड़ के नीचे ही।"

"सर, भैया को छोड़ दो, मैं एक घंटे में आईजी के पास सरेंडर करूंगा।"

"एसटीएफ के पास क्यों नहीं?"

"नहीं, मैं आईजी के पास ही करूंगा, वहीं मैं सुरक्षित रहूंगा।"

"ठीक है, तुम सरेंडर करो, तुम्हारे भाई को छोड़ दिया जाएगा।"

"जुबान दे रहे हैं आप, सर?"

"जुबान है।"

पूरी एसटीएफ टीम और कई पुलिस अफसर आईजी के ऑफिस के बाहर खड़े थे। मैं और एसपी साहब आईजी ऑफिस में बैठकर उसके आने का इंतजार कर रहे थे। एक घंटा बीतते ही वह आया। उसने अपनी मोटरसाइकिल खड़ी की और हाथ ऊपर करके पुलिस फोर्स के बीच से गुजरते हुए आईजी के ऑफिस में प्रवेश किया। मैंने तुरंत उसे हथकड़ी पहनाई और उसकी तलाशी ली। वह छह फुट का एक लंबा व्यक्ति था और उसकी ढाढ़ी-मुछ जंगल जैसी थी|

"सर, मैं आईजी साहब से अकेले में बात करना चाहता हूं?" समरभान ने कहा।

"सामने बात करने में क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"अच्छा, कोई बात नहीं, आपलोग थोड़ा बाहर चले जाइए," आईजी ने कहा।

मैं और एसपी साहब बाहर आ गए और मैं सोचने लगा कि वह अकेले में क्या बात करेगा। दो मिनट भी नहीं हुए होंगे कि अंदर से आईजी की चिल्लाने की आवाज आई। हम दोनों दौड़कर अंदर गए तो आईजी समरभान पर चिल्ला रहा था|

"इसको ले जाइए यहाँ से," आईजी ने चिल्लाते हुए हमसे कहा।

हमने पूछा भी क्या हुआ, पर आईजी बस उसे ले जाने को कहते रहे। हम समरभान को लेकर एसटीएफ ऑफिस आ गए और उसे लॉकअप में बंद कर दिया। उसके सामने ही भागलपुर पुलिस को कॉल करके एसपी साहब ने सूरजभान को छोड़ने को कहा। रिहाई का प्रमाण सूरजभान ने खुद समरभान से बात करके दिया।

कुछ देर बाद समरभान ने एक सेलफोन लॉकअप से बाहर फेंका। वह आईजी का सेलफोन था। यह हरामखोर आईजी का सेलफोन चुरा लिया था। मुझे लगा, कुछ तो गड़बड़ है। मैंने पूछा तो वह हंसते हुए कहता है, "बस आईजी को डराना था।" मैं भी सोचने लगा, कैसा पागल है ये|

उस दिन मीडिया तो बौखलाई हुई थी। मैंने उस दिन मीडिया का सामना नहीं किया; वह काम मैंने एसपी साहब पर छोड़ दिया। शाम होते ही मैंने समरभान से पूछताछ शुरू की, लेकिन वह मुंह खोलने को तैयार ही नहीं था। बहुत कोशिशों के बाद भी वह कुछ नहीं बोला। अधिकतर अपराधी को जब मानसिक रूप से टॉर्चर किया जाता है, तो वे मुंह खोल देते हैं, लेकिन इसने नहीं खोला। बस यही एक बात बार-बार कहता रहा, "जिनको सजा मिलनी थी, उनको मैंने सजा दी।"

मैं थक गया था, उसकी इसी एक बात को बार-बार सुनकर। तो मैंने सोचा, क्यों न छुट्टन पहलवान की तरह इसकी भी रिमांड मांग ली जाए।

अगले दिन कड़ी निगरानी के बीच, समरभान का मेडिकल करवा कर मैं और एसपी साहब अपनी टीम के साथ उसे कोर्ट ले जाने लगे। कोर्ट परिसर में पहुंचने से एक किलोमीटर पहले, एसपी साहब की गाड़ी अचानक मेरे आगे रुक गई। घबराए हुए एसपी साहब ने तुरंत मुझे कॉल किया और कहा, "आईजी का अपहरण हो गया है, वे भी कोर्ट आ रहे थे। तुम एक टीम लेकर वहां के लिए निकलो, हम और शंकर यहाँ स्थिति संभाल लेंगे।"

उनकी आवाज में जो तात्कालिकता थी, उसने मेरे रोंगटे खड़े कर दिए। आईजी का अपहरण कोई मामूली घटना नहीं थी; यह तो हमारे पूरे ऑपरेशन की दिशा को बदल सकता था। मानो यह सुनकर मेरा यकीन ही डगमगाने लगा हो।

एसपी साहब ने फिरसे कहा “तुम्हारे बिना वहाँ किसी भी स्थिति को संभालना मुश्किल होगा। जल्दी निकलो!" एसपी साहब की आवाज में तीव्रता थी, जो और भी अधिक चिंताजनक थी।” मुझे झिझक भी हुई कि कहीं समरभान भाग न जाए, फिर मैंने शंकर को देखा और मन में कहा, “मेरा मुस्टंडा इस मुस्टंडे को संभाल लेगा।

“शंकर, आईजी का अपहरण हो गया है, मुझे जाना होगा। तुम इसे कोर्ट में पेश करके वापस रिमांड में लेकर चले जाना, एसपी साहब भी यहीं हैं।” मैंने शंकर से कहा और तेजी से गाड़ी का दरवाजा खोलते हुए बाहर निकल गया|

मैंने तुरंत एक टीम को इकट्ठा किया और एक नई योजना के तहत त्वरित कार्रवाई के लिए निकल पड़ा। मेरे दिमाग में आईजी के अपहरण के संभावित कारण और इसके दूरगामी प्रभावों की चिंताएँ चल रही थीं।

सड़क पर हम तेज गति से भागे, जैसे हर पल हमारे और एक बड़े खतरे के बीच की दूरी को कम कर रहा हो। मेरे मन में केवल एक ही सवाल था: आईजी को किसने और क्यों अगवा किया, और हम उन्हें कैसे सुरक्षित वापस ला सकेंगे?

हम उस स्थान पर पहुंचे जहां से आईजी का अपहरण हुआ था। जैसे ही मैंने घटनास्थल पर कदम रखा, मेरी नजरें हर उस निशान को तलाश रही थीं जो हमें इस जघन्य घटना के पीछे के रहस्यों तक ले जा सके। आसपास का माहौल गहराई से जांचने लगा, हर फुटपाथ, हर गली, और हर छोटी से छोटी जानकारी पर ध्यान देने लगा।

मुझे पता था कि इस स्थिति को नियंत्रित करने के लिए तुरंत कदम उठाना होगा। मैंने नाकाबंदी का आदेश जारी किया, शहर के हर प्रमुख मार्ग को सील कर दिया, और सभी प्रवेश और निकासी बिंदुओं पर पुलिसकर्मियों को तैनात कर दिया। यह सुनिश्चित करना था कि अपहरणकर्ता भागने में सफल न हो सकें और आईजी को जल्द से जल्द सुरक्षित रूप से पुनः प्राप्त किया जा सके।

मेरा ध्यान बार-बार घटनास्थल की ओर लौटता, हर नई सूचना को तौलता, और हर संभावित सुराग को पकड़ने की कोशिश करता। हमारी प्राथमिकता थी कि कोई भी संदिग्ध गतिविधि छूटने न पाए, और हम अपहरणकर्ताओं के किसी भी कदम को तुरंत नाकाम कर सकें।

मैं नजदीकी थाना प्रभारी से कॉल पर बात कर ही रहा था कि शंकर के लगातार कॉल्स ने मुझे परेशान कर दिया। कॉल की ध्वनि एक असामान्य दबाव बना रही थी, जैसे किसी गहरी समस्या का संकेत हो। फोन के दूसरी ओर थाना प्रभारी से संवाद टूटता दिख रहा

था, और मैंने अपनी बेचैनी को छुपाते हुए कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया। शंकर की कॉल्स का जवाब देना अब जरूरी हो गया था।

मैंने शंकर को कॉल लगाया, मेरे दिल की धड़कनें तेज हो गईं, मानो अब कोई महत्वपूर्ण मोड़ आने वाला हो। फोन की रिंग बजते-बजते मैंने महसूस किया कि शंकर की आवाज़ में कोई रहस्यमय बात छुपी हो सकती है।

"समर साहब, एसपी साहब को गोली लग गई," शंकर रोते हुए कहता है।

"कैसे और समरभान?" मैं हैरान रह गया, ऐसा कैसे हो गया मेरे समझ मे ही नहीं आया ।

"कुछ लोग कोर्ट परिसर में पहुँचने से पहले ही आ पहुंचे और गोली चला कर उसे उठा ले गए।"

मैंने तुरंत अस्पताल की ओर रुख किया, दिल की धड़कनें तेज़ हो रही थीं। जब मैंने वहाँ पहुँचकर देखा, तो दृश्य मेरे होश उड़ा देने वाला था। एसपी साहब एक बेड पर बेहोश लेटे हुए थे, और उनकी चोटें गहरी थीं—उनके पेट में एक गोली लगी थी। इधर, शंकर के कपड़े पर खून के धब्बे थे, यह स्पष्ट था कि कुछ बहुत ही गंभीर घटित हुआ था।

"कैसे हुआ ये सब?" मैंने शंकर से पूछा।

"आठ अपराधी मास्क पहने बड़ी हथियार लेकर आए थे। हमें कोर्ट गेट पर पहुंचने से पहले रोक लिया। वे समरभान को ले जाना चाहते थे। उन्होंने एसपी साहब को बंदूक की नोक पर रखा था। हम समरभान को जाने दे रहे थे, लेकिन एसपी साहब ने थोड़ी हरकत की, तो उनमें से एक ने गोली चला दी," शंकर ने कहा।

एसपी साहब की गोली निकाल दी गई थी और अब वह स्थिर स्थिति में थे। फिलहाल, पूरी पुलिस फोर्स आईजी की तलाश में जुटी हुई थी, और मेरे दिमाग में एक अजीब सी बेचैनी दौड़ रही थी।

****

शाम ढलने को थी और मैं ऑफिस में बैठकर नाकाबंदी पर तैनात अफसरों से बातचीत कर रहा था। तभी मेरे फोन पर एक अनजान नंबर से मैसेज आया। मैसेज पढ़ते ही मेरा खून खौल उठा:

"एसपी के लिए सॉरी, मैं यह नहीं करना चाहता था।"

यह संदेश मुझे बहुत गुस्सा दिला गया। मैंने जवाब देने का सोचा ही था कि एक और मैसेज आया:

"कायर नहीं हूँ, सर। ध्यान रखिएगा… **खेल अभी खत्म नहीं हुआ……..**

पुर्णीया सेंट्रल वॉल्यूम-2

अब होगा पर्दाफाश

- **10. खेल अभी खत्म नहीं हुआ है**
- **11. गब्बर की गिरफ्तारी**
- **12. शंकुर यादव की हत्या**
- **13. ईशा मेहरा मिस्ट्री**
- **14. डबल मर्डर**
- **15. सुरेश यादव हत्याकांड**
- **16. इंस्पेक्टर लापता हो गया**
- **17. शामू उरांव की हत्या**
- **18. जैल ब्रेक**
- **19. वॉल्यूम 2 जल्द हीं**
- **20. वॉल्यूम 2 जल्द हीं**